

दुःखहृदिया रामायण ॥

दहन अनङ्गत सकल दुःख गजसुख सबसुखदानि । भक्तिग-
तिगति रघुपतिचरण विघ्नहरनकी बानि ॥ विघ्नहरनकी बानि
जानि सज्जन सब गावन । भक्ति सुक्ति वर देव शेष घङ्गरसुर
ध्यावन ॥ घङ्गर ध्यावन शेष सुर रिपुगण खलजन जहन ।
कह तुलसिदास घङ्गरसुवन भजत भक्त भवभयदहन ॥ १ ॥

दीनदयाल दया करौ दीन जानि शिव मोहिं । लीहाराय
सनेह डर सहज सन्त गुण होहिं ॥ सहज सन्त गुण होहिं
घयाप्रद लाभ दुःखसुख । कर्मविवश जहँ जाउँ तहाँ सियराम
रुपाख ॥ रामरुपाख नित रहौं जगतजनित संशय हरौ । कह
तुलसिदास घङ्गर उमा दीनदयाल दया करो ॥ २ ॥

रामचरित घतकोटि शेष शारद शिव भाखे । नारद शुक सन-
कादि वेद कहि बौचहि राखे ॥ बौचहि राखे चरित पार कहि
पावत नाहिन । कहि कहि हारे सकल रामयश कहत सिरा-
हिन ॥ नहिं सिगहिं रघुवीरगुण सो तुलसी जनमें डरत ।
भजन भाव वेदन कहा कहे चरित भवनिधि तरत ॥ ३ ॥

पुलक्यन्न लप कौन जोरि सुनिगण द्विजकुलवर । कह
वशिष्ठ भै सिद्ध दीन हवि लै प्रसाद कर ॥ लै प्रसाद कर दीन
देहु भाषिनि लप जाई । सुनि दशरथमन हर्ष सकल प्रियनारि
बुलाई ॥ नारि बुलाई कौशला कैकयी युग भाग कर । मन
जनन्द रानी लपति दीन्ह सुमितहि हाथ धर ॥ ४ ॥

मङ्गलमयी विचित्र वृत्ति प्रकट भई गृह आनि । ब्रह्म-
सच्चिदानन्द उर प्रकट भये सुखखानि ॥ प्रकट भये सुखखानि
हानि दारिद्र्य दुख नाश्यो । देवन लखो अनन्द मही मन मोद
प्रकाश्यो ॥ मही मोद द्विज सकल सन्त सज्जन यश गावत ।
ब्रह्मादिक सब देव नवग्रहपञ्चर चलि आवत ॥ गावत वर्षत
सुमन धन तुलसी कहि जय जय जई । नाक नगर अहिपुर भुवन
प्रकट भई मङ्गलगई ॥ ५ ॥

भास भयो शुभवार योगवर नखत विराजत । तियि नभ
जल महि विमल दिपा विदिशा सब आजत ॥ आजत सरयू अवध
देवगण जय उच्चारत । वर्षत सुमन प्रशस हंस निजवंस निहा
रत ॥ हारत सतागण भगवतिन प्रकट भये सुख दुख गयो ।
गुप्तमो रघुवर प्रकट भे भास एकदो दिन भयो ॥ ६ ॥

गुनि भूपति उत्तमन्त्र मगन नहि देह संभारत । उठे भवन
कढ़ें दोरि बोलि तन गुजहि प्रचारत ॥ गुजहि प्रचारत चले विप्र
संग ते गुनिनाथक । भूत भविष्य वर्तमान ज्ञान सब जानन
नाथक ॥ नाथक गुन गुनि सगुणि कै जातकर्म सब विधि
क्रियो । हेन होन शोरत गुड गहि हय गय भूपति दियो ॥ ७ ॥

चाचक जो जै कान राहि लप पूरि दियावत । बृह बृह
वर नारि विगत स्वर सोहिज जावत । जावत सोहिज जुनत
भृष हंसि हेरि सुखवत । पट भूषण लखिमल तात सुख नेहि
पहिराव ॥ एतिगत गण गुरा रज सर्वस दै द होड़ि दत्त ।
पुनि तुनी - दै जई भरो सातगण तन वाहि दत्त ॥ ८ ॥

एरी मगन नर नारि वरौ चारिउ प्रसन्न सवि । प्रति गृह
गावन गीत कान्त लदियैक भरो कवि ॥ भरो चोख गणसुक्त
अन प्रमत्त सुमनद वन । हासुन सुगन्ध नवीर रहेउ भरि
निग निदनि गन ॥ दिना निनिन सुख भरि लखो भासनि

बहु प्रकटी तूने । रहिनाक भूषितत सुख भरो जोमि सुख
लो रहुनिपुरी ॥ ६ ॥

उप सायिनी दोउ मुखद सुन्दर सुख जाये । कर्म क्रिया
लो करे तोनि साधन पहिचारे ॥ पहिराये मन मोद चारिसुत
रहि सुख राजा । मनो परमहंसन दास दासी सब साजा ॥
साजा रहै अणन्त बहु दासा बहु दासन तये । सब कोउ कहत
सराहिनै साधनसुख सुखके जये ॥ १० ॥

सुन्दर सु गोवर्ति सत्त सज्जनके काजे । प्रभु धारयो तन
पदज दहुज सुनि विकर सुताजे ॥ ताजे कलशय मलिनन-
तिनविज उदय साधनर । अचछूक छपि गये तेज पहिपुर
सुरपुरधर ॥ सुरपुरगुनि हनुजावली ज्योति राज रघुवंश जय ।
जय दशरथकुलसत्तय अवनरनारि कहत भय ॥ ११ ॥

गृह गृह दजत बधाव नारि नर अवध अनन्दित । चौक
कलश प्रतिहार लसत सुरतियगण वन्दित ॥ वन्दत सुर-
गण सुमुख वन्दिगण विप्रवेदधुनि । भरि भरि सुक्ताधार देखि
सुत भाग अधिक गुनि ॥ अधिक गान सोहत भवन रामजन्य
मङ्गल सजत । नरनारि वारि तन धन सबै सुरपुर जयदुन्दुभि
वजत ॥ १२ ॥

नाम धारो सुनि हेरि राम गुनि भरत लक्षणवर । शब्द-
धमन शुभनाम दीन सुनि लिखि भूपति कर ॥ भूपति रानि-
न दीन सगन तनु लहेउ सकल सुख । गान निधान समान
धरणि आकाश एक सख ॥ चकटक निरखत सुमनगण मन
मलीन खरागण धये । चारि चार सुन्दर सुवन सुकत भूप
तरुपल नये ॥ १३ ॥

सुन्दर सुतवर गोद मोद भरि सातु दुखारत । निरखि दनव
छविनिन्दु सकल तन गन धन वारत ॥ वारै तनयन देव भूपके

मन मनकादिक ब्रह्म वण्डिचण मनसुख
मन मन नित मनन अवध मङ्गलमय मृरति लखत ।
मन मन नित मनन तनपिदास नयननि चखत ॥ १४ ॥

मन मन नित मनन नहि पियन नहि पाजु । रोवत
मन मन नित मनन नहि नजरि को साजु ॥ दृष्ट नजरि को
मन मन नित मनन नहि ठामे । नहि जोच उर भयो नीर नयन-
मन मन ॥ माने कलसा कोमलहि हाथ दिवावन धायकै ।

मन मन नित मनन पत्र राम सोवावत पायकै ॥ १५ ॥

मन मन नित मनन पत्र अहहि अक्ष लगाय । रामबन्धु-
मन मन नित मनन विनायकोर ललयाय । वितचकोर रालवाय
मन मन नित मनन कीन्हे । वर नर आगन कलत बोलि कोमलया
मन मन ॥ कोमलया मुद्र बोलिके गुभ आसन पादर करी
मन पादर लाय माय हाथ जग्न धरौ ॥ १६ ॥

मन मन नित गुण कहौ जो कछु यामें लेय । सब जति जानत
मन मन नित गुण कहत सब कोय ॥ राम कोरि परचो कहत बड़े
मन मन नित गुण । जो मँगिहौ देखौ मोद तोनो करौ सुधाको
मन मन नित गुण सुधाको भोग जन्म भरि राख तपस्के पाछे ।
मन मन नित वचन हैसत मन शङ्कर मातु वचन मुनि पाछे ॥ १७ ॥

मन मन नित तोर यह बड़ा भागको मूल । याके दर्शन जात
मन मन नित तोर शूल ॥ सब अन्तरको छुट हरौ याने सुख पैहौ ।
मन मन नित सुनौ एक मुनि संग करि देहौ ॥ देहो सुनि
मन मन नित पानि पानी आवे । दगरव सुवन विवाहि सहित
मन मन नित ॥ १८ ॥

मन मन कर्मन करी मकल खलगण संहारन । सहि द्विज
मन मन नित शोच सुर दरहि निवारन ॥ करहि निवारन दोष
मन मन नित राजाकागे । तोरहि शिवको धनुष सुयश तिहुँ पुर

विलारी ॥ विलारी सुख सम्यदा सुनु कौशल्या तोर सुत ।
वचन सुभा बोलत नही मानु प्रतीति सनेहयुत ॥ १९ ॥

कह्यो कैकयी सुवनकी लक्षण सबकर देखि । कौशल्या-
सुदभक्त यह मन क्रान वचन विशेषि ॥ मन क्राम वचन विशेषि
रामपद प्रीति सुहावन । सोवत जागत ध्यान नाम रसना
रसपावन ॥ पावन तिरहुति व्याहि हैं याते सुखसम्पति लहौ ।
सुयशसिन्धु साँची सुवन तसुक्ति देख आगम कहौ ॥ २० ॥

सुनहु लषणकी नाहु तुलक्षण सुवन दुन्दारे । निज भाइ
ननों प्रीति प्रबल रखके जितवारे ॥ जितवारे वत बाहु गुणनि
पूरे सब भाई । राम सङ्ग शुभपुरी तहाँ सब होहि सगाई ।
होहि सगाई जनकपुर जनककन्यका आनिकै । सत्य जानु
रानी वचन झूठ न कहैं बखानिकै ॥ २१ ॥

सुनतौ मन रानी मगन सुक्ता बार भराय । लेन कह्यो
हंसि कौशल्या रामहि दीन छुवाय ॥ रामहि दीन छुवाय हाथ
धरि देउ अशौशा । बालक रहु कल्याण डीठि सुठि डारहु
छौशा ॥ खीन करहु प्रभु रोग सकल मन्तन पढ़ि वानी ।
बोली डारे सुवन हाथ जोरे सब रानी ॥ २२ ॥

बोली योगी योगनिधि सुनहु कौशलामाय । डीठि सुठि
अनखानि अब देहैं सकल बहाय ॥ देहैं सकल बहाय
बाल कवहूँ नहि रोई । पलका गोद हिंडोर सुमुख सब थल
शिशु सोई ॥ सब थल शिशु सुख रही डोय नहि कवहूँ रोगी ॥
भृङ्गी शब्द सुनाय चली मन हंसिकारि योगी ॥ २३ ॥

भूपति रानी मन मगन शिशु सब अतुल निहारि । गोद मोद
मन गावतौ राम दुलारि दुलारि ॥ राम दुलारि दुलारि वारि
तन मन सब डारैं । लौकर्मकी सुदिन बैठि झलमुखि हैंकारैं ॥

सुकृदि हैंकारि विवेक सुफल करि मङ्गलवानी । गावहिं गीत
विचित्त जोइनन भूपति रानी ॥ २४ ॥

सन्तोषे सांगन नकल चुन सिय द्विन पहिराय । बालक
कोमलपालके विरञ्चीन पा भाय ॥ चिरञ्जीव नव भाय देत
साजिन ननुझी । नृप रानीके दूखन सुगल कहे नरु फूले ॥
फूले नवन नारिनर से अगि नानैद गोये । नाम नगर पहि-
नगर नारिनर ननवांछि रात रोये ॥ २५ ॥

आगन रानी चला गिनावत चारो लुन कर लाय । गिरत
परत उठि यता हगन पुनि रोवन रत्न रिजाय ॥ रोवत रहत
रिमाय भापलो टापी डारे । कुलपामल विद्यारि नयन भरि
नोर गिरत ॥ नीर निहारें हँवत गुगत नति सोलरि वानी ।
भगत भवनको पठि धरत ले आंगन रानी ॥ २६ ॥

भृप हर्षि कावायो रुचिसों काणधेध उपवीत । छोटे
धनुष बाण कर लोन्हे समुक्कन लागे नीत ॥ समुक्कन लागे
नीति वेद विद्या गुरु दीन्ही । धर्म कर्म गति अगति स्मृति
श्रुतिमग जेहि कीन्ही ॥ श्रुतिमग जेहि कीन्ही जगत जाहि
मिछायें सब सिख्यो । धर्म प्रकट जग करनको परब्रह्म
नृप घर बन्धो ॥ २७ ॥

जाके नामप्रभावते जन्ममरणद्वय जाय । वेद शेष शारद
शिव शिवको अगम दिखाय ॥ शिवको अगम देखाय भेद ब्रह्म-
ह नहि पायो । भक्तनके हित सोय कौशला उरमहँ आयो ॥
कोमला के उर वसे दशरथसुत कहि गावते । काम क्रोध मद
गोभ द्वय नाश नामप्रभावते ॥ २८ ॥

विश्वामित्र महाशय विपिन वसैं मुनि सङ्ग । योगयज्ञ
होमादि व्रत करन दनुज खल भङ्ग ॥ करत दनुज खल भङ्ग
द्वय मन मन्त्र विचारयो । हरि अवतरे गुनवध हरन सहि-

भारन भारी ॥ भारी सुख उपजायकै हरि होई नयननि
विषय । सरयूसरि खान करि गे दरवार महाप्रथ ॥ २८ ॥

सुनि राजा सहसा उठे मिले धाय परि पाय । लै आये
भौतर भवन शुभ आसन बैठाय ॥ शुभ आसन बैठाय नारि
युत मुनिवर पूजे । उदय भयो निज भाग मोहि सम सुकृत न
दूजे ॥ दूजे आपुन जानिये पदरजको सेवक सदा । कहिय
कृपा करि राज निज करहुं सुरत मङ्गलप्रदा ॥ ३० ॥

सुनि भूपति द्विज मित्त गाय रुहिशोच निवारण । मम
आश्रय खल दनुज करत उतपात अपारन ॥ पार न पावहि मुनि
विकृत रयन दिवस सङ्कट परै । धर्मजात त्रुतिसेतु सकल
वत्त खल हरै ॥ हरै विपति दासण जवै राम लक्षण जो देहु
मति । दुनहुँ यश इनको सुफल गुनहु न मन सुनि भूमि-
पति ॥ ३१ ॥

सुनते राजा सूखि गो कमलवदन कुन्दिखान । नाहक
अनि दाहरो हृदय माँगहि जीवन प्रान ॥ माँगहि जीवन प्राण
राम लक्षण मिति देऊ । जाहि निरखि रहै नयन पतक
निरखन नहि लेऊ । लेउ अघश पालक सबै सुनि मुनि मनमें
गुणि कहै । माँगहु तन धन धेनु रुहि राम दिये किमि तनु
रहै ॥ ३२ ॥

कह वशिष्ठ राजा सुनहु सुत मुनिपतिकहँ देहु । इनकी
कृपा कृपातकी दुखत घाय हैं गेहु ॥ दुखत घाय हैं गेहु दनुज
सब करहि संहारन । सिद्ध शुद्ध करि होय सुयश जगमें विस्तार-
न ॥ विस्तारन मङ्गल सुवन आन भौति नहि अन गुनहु ।
सौंपहु विप्रानित्तको कह वशिष्ठ भूपति सुनहु ॥ ३३ ॥

सुन वशिष्ठके वचनको कैसे तजै कृपाल । राग लक्षणको
बोतिके साँपे सुनेहि कृपाल ॥ साँपे सुनेहि कृपाल ग्रीश सब

सभा नवायो । कौशिक दियो अश्वीज मनहुं जप तपफल
पायो ॥ पय बहाय बारिजनयन उठे मौन धरि भवनको ।
उत्तर क तु न मुख कह्यो गुरु वशिष्ठके वचनको ॥ ३४ ॥

वेदमन्त्र दे सकल चङ्ग गल्लुनके मारण । नौद भूख अरु
प्याम चास सब अशुभनिवारण ॥ अशुभनिवारण पय सुपथ
गङ्गलमय सुन्दर । बड़ो भाग निज समुक्ति करत आयसु प्रभु
सादर ॥ सादर पूछत वेदगति नृग तरु भूधर भूमितल । पाठ
करावत गुण कहत वेदमन्त्र दे दे लकल ॥ ३५ ॥

मारयो वोचहि ताड़का एक बाण श्रीराम । मुनि चितवत
चलत खड़े गई हर्षि सुरधाम ॥ गई हर्षि सुरधाम रामको
नृगि मन चीन्हे । आश्रम निज प्रभु पूछि यज्ञ आरथित
कोन्हे ॥ कोन्हे यज्ञ अरथ प्रभु धनु धरि बाण सुधारिकै ।
थन सुबाहु मारोच सँग धायो धूम निहारिकै ॥ ३६ ॥

हत मारे सब लक्षण जलजगर जारि सुवाहै । प्रभु मारोच-
हि उन्नि पारकरि बाण चलाहै ॥ बाण चलाहै अफल सुफल
करि हानविधान । वर्षत सुर शुभ दासुम अयोधत रुपानि-
धान ॥ रुपानिधानहि जानिके यज्ञभाग दे अमिथफल ।
धनुषयज्ञयत्न जनकके चले राम अपि त्यागि यत्न ॥ ३७ ॥

गौतम ऋषिकी भामिनी तनपयाण जेहि ठौर । गये लक्षण
रतुवंशमणि मुनि कौशिक शिरमौर ॥ मुनि कौशिक शिर-
मौर पूछि बुझो सब कारण । दारुण दाह विचारि पाँव धरि
कोन्ह निवारण ॥ कोन निवारण पाँवको जय कहि उठि
बुनि भामिनी । तुलसी विनती मृदु करत गौतम ऋषिकी
भामिनी ॥ ३८ ॥

जय जय जगदातार प्रभु हरण घोर महिभार । दीनबन्धु
मानव दहन सब गुण रूप उदार ॥ सब गुण रूप उदार भजत

शिव धुन सनकादौ । पावत चाह न चरित मध्य अन्तहु नहिं
जादो ॥ जादि मत्त नहु उक्तकरि धरे प्राप पापमई ।
जाहु परनि पद्मपत्तन राम सुखत मन्दिर भई ॥ ३८ ॥

प्रापपापको दुर्ग कठिन रचि कर्षन राख्यो । मन बुधि चिद
हम हृदय करि जयवस्तुनि चाख्यो ॥ वस्तु सकल मतराशि काम
मद दह सुभटघन । सुखत सत्यरण जीति दर्शको जमल सबै
तन ॥ तन जग सुरगुण गाय प्रभु रजवतदु खज अनत गहि ।
रिपुहि सहित मन कर्ष लप प्रापको दुर्ग दहि । ४० ॥

जलिनत फलदातार देवतखर सनकारन । कर्षजुनतिसल
लाग हराकरि कौन निवारन ॥ कौन निवारन पाप भई सुनि
धरकी भामिनि । अब वर दीजिय जोहि चरणरति दिन रात
गामिनि ॥ दिन अत गामिनि रत रहौं चरण हरण महि-
भार हो । बुलसिदास वर पाय कहि जय रघुपति दाता
रहौ ॥ ४१ ॥

लखि गति सुर सुनि हृषि वर्षि शुभसुमन सराहन । राक्ष-
रखण सनर्थ घोर भवसिन्धु निवाहन ॥ सिन्धु निवाहन अग-
मसुगम दरदायक लायक । कुमति कुकर्ष कुरीख कपट कलि-
कलुषनयायक ॥ कलुषनयायक राम प्रभु बुलसिदास भजि नजि
करष । मन वच उर कर्षनि भजहु लखि गति सुर सुनिसन
हरष ॥ ४२ ॥

चले हृषि सुनि सङ्ग रामलक्षण मगसाहीं । वन उपवन
मृग विहंग विटप लखि पूंछत जाहीं ॥ पूंछत सुनि सब कह-
त न्हाय सुरसरि रघुराई । बहत कथा इतिहास जनकपुर
पहुंचे जाई ॥ पहुंचे प्रभुपुर निकट ताज बाग तड़ागनि अति
भले । खग मृग मधुप समाजयुत जनकनगर देखन चले ॥ ४३ ॥

वापौ सुभग सरोजयुत सरवर विविध मशाल । मानौ

नगदित मानसर शोभा देत विशाल ॥ शोभा देत विशाल
 दिगल जलरूपा समूरे । पशिंगण पुरट बंधान नारिनर मज्जत
 भूरे ॥ रुज्जत सर मुनि आय जनु पर्व मानसर पाय जग ।
 लहत चारिफलराशि जलजापी बापी सर सुभग ॥ ८८ ॥

सुन्दर चहुँ दिशि बाग वन कुसुमित फलित अपार । जनु
 सुरधरकौ ताटिका वस्ती सहित परिवार । वस्ती सहित परि-
 वार कोरकोकिन्दुनि राजे । पथिकन सेत बुलाय द्विविध
 विधि पवन समाजै ॥ पवन समाजै सुरभि सुख जनु वसन्त
 कलु गृह सघन । यह तुलसिदास प्रभुपुर निरखि सुन्दर चहुँ
 दिशि बाग वन ॥ ८९ ॥

परे नृपति साजि सैन मत्त गज रथ हय राजत । नृत्य गान
 सूत्र ध्यान सुभग दुन्दुभि वर बाजत ॥ बाजन बन्दी सूत यथ
 यूथनि भट गाजै । वनितादिक शुभ गान करहि सुरतिय लखि
 लाजै ॥ लाजै लखि अमरावती सुरपुरकौ शोभा हरे । विवि-
 ध वृन्द दन्दादि सुर सैन साजि जनपुर परे ॥ ९० ॥

धवल धाम चित्तनिखचित कलश मनहुँ रविज्योति ॥
 जगमगात खगानि पुरट प्रकट दामिनी होति
 प्रकट दामिनी होति गोनि मणि कलक करोखनि । भामिनि
 भूपर मनत मनहुँ सुरतियतन धोखनि ॥ धोखनि तन सुर-
 धाम सर धाप धाम सब धल नचति । जनकनगर छविमय
 चक्रा दोट बाट अणिमय खचति ॥ ९१ ॥

मुनि अवन न नरपात अपय आगमन अनन्दित । भूसुरवर
 पद लानि साथ मुनिपद धिर बन्दित ॥ बन्दित नृपहि
 अनोति मिले दौशिक मुनिनायक । भये विदेह विदेह निरखि
 दोउ दूत सब लायक ॥ सब लायक रघुनाथ कहि नरपति

निरखि दिशालको । देखि भानुकुलभूषणहि तनमनवश नर-
पालको ॥ ४८ ॥

विदधराव भये प्रेमलके निरखत तनयोभा । लोचन भये
चमोर रामसुलसशिरस लोभा ॥ लोभा सकल सजाज
परस्पर चाहत रामै । धीरज धरि नृप कहत वृष्णि मुनि सब
गुणधामै । सब गुरु तेज प्रतापमय काके सुरतदफल नये ।
कहिय कृपाकरि कृपानिधि ये बालक काके भये ॥ ४९ ॥

कै सुनिमणि नृपमणि किधौ योग यज्ञफल चाहि । गण-
पति पशुपति लोकपति सब संशय मनमाहि ॥ मन संशय
मनमाहि ज्ञानगति गिराविनाशौ । बरवस इनवश होत तजत
सुखरस अविनाशौ ॥ अविनाशौ अवलोकिये युगलरूप निज
संगरथौ । कहिय प्रकट सन्देह मन कै सुनिमणि नृपमणि
किधौ ॥ ५० ॥

जपतप प्रतरतधर्म जगत जहँलगि शुभकर्मनि । दयाश-
यादकनेमक्रिया आचार चार गनि ॥ चार वेद सब भेदयोग
लिधि साधत योगी । आतम अनुभवरूप ब्रह्मसुख पावत
भोगी ॥ पावत भोगी योगवश सो प्रकटत कवहुँक हिये । सो
फल सुनिनायक किधौ जप तपवतने प्रकट किये । ५१ ॥

अलख अगोचर रूप हरि जो वरणात श्रुति शेष । जाके
हित विधि देव मुनि ध्यावत गणप महेश ॥ ध्यावत गणप महेश
योग यत्न नहि पावत । जपतपवत कृतधर्म धर्म वन हृदय
वसावत ॥ हृदय वतत बहुरूप जब सकल सिद्धि सब सुख भरि ।
प्रकटी कौन सोइ रूप मुनि अलख अगोचर भूपहरि ॥ ५२ ॥

कौधौ मदन विशेष संग सुनिनायक वश कौन । अघि
तपतेजप्रतापते सेवत पदलवलीन ॥ सेवत पदलवलीन
अधुको वैर सँभारयो । चाहत आपु सहाय भन्त मनमाँस

लेखने । नारदो जिनि निवानलै युगुलरूपछवि देखिने ।
नार नर भूति कहे उनि सुनि मदन विगेषिये ॥ ५३

सदा जान वेराग्यो रथोरुत यन योर । ब्रह्म सचि-
नन्दन निगलत चन्द चोरे ॥ चितवत चन्द्र चकोररूप हरि
नगति रावो । निरसत बालक नयन तीन सुत्र जात न
जायो ॥ जान न जानो ब्रह्मपुन ऊँछो प्रेन पनुरागलो । सो मन
नगि नग रावो जावो न जान विरागलो ॥ ५४

सुन न भूषके प्रिय वचन पुताकि कहै सुनिराज । जो कछु
को । दराख राग सुनहि विदित सब काज ॥ बुमहि
जिनि नग जाग राज दण्डके जाये । मरुहित जाने
नगि नगो नगर सिधाये ॥ नगर सिधाये आपुने राम
नग नग्यार धरे । मरुत्यक भवत प्रहुर सुनत भूप आनंद
भवे ॥ ५५ ॥

भाग जानि पनुराग नृप चजे लिवाय निकेत । आदर
नग्यम गानिके पूजे प्रेम सगेत ॥ पूजे प्रेम ससेत निरखि
नग नरि सुनारि । खुदुलरूपण देखि सराहत सुकत
नगि ॥ सुकतपुछा रागा जनक कहि पुर नर पद लागही ।
को जाने कहे सुकत याग भाग पनुरागही ॥ ५६ ॥

नग नग ओरामछवि अकतनखि वनछायाम ।
नग नग पदण दण दामिनि वरख तलाम ॥ दामिनि
नग तलाम मग पगति रावे सोहैं । जनकनगर नगनारि
दलि । नग छवि जोहैं ॥ जोहैं मन जोहैं सकल को हें पाव
पाव दि । सुनसिद्धत वैदनि कहै कपटनयन श्रीराज-
नगि ॥ ५७

नग सुनिन जान री वातक युगुल अनूप । ज्ञानगौर-
सुनत वचन मनहु मदन युगरूप ॥ मनहु मदन युगरूप विरचि

विधि स्नान बसाये । निज सुहृदके एञ्ज जनकपुर देखन पाये ॥
देखन गति हुँदैं दोउ विधि रवि राख्योकाज रौ । सियवरयोग्य
संगोन यह सनुक्ति देखु लहि आज रौ ॥ ५८ ॥

अपर कठिन रखि सत्य है एक कठिन हठिकर्म । प्रण
विदेहको धनुष यह उठै न गिरिसमधर्म ॥ उठै न गिरिते गख
बाल मुहु गनिसुद्धामारे । सो असमञ्जस कठिन सेटि को योग
सँवारे । सँवर हुँदैं प्रतापदल सुनिगण कहत सुसत्य हैं ।
अन्य प्रताप विदेहको एख्य भञ्जि धनु सत्य हैं ॥ ५९ ॥

आयसु पाय सुनौघको भोर लषण रघुराय । सुम्नहेत
उपवन गये ध्यामगौर दोउ भाय ॥ ध्यामगौर दोउभाय जानकी
जाय निहारे । गिरिजापूजन हेत मध्य उपवन पग धारे ॥
पग धारे नयननि लखे राजकुमार निहारिके । सो सुख बुलसी
कहै किमि कहि न जाय सुख चारिके ॥ ६० ॥

रामसियाको मिलनसुख वेद न पावहि पार । प्रीति प्रेमपर-
मिति सुमिति प्रीतमगति रतिसार ॥ गतिरतिसार विचार
कहत घदि रहत विचारी । सो हैं कहौ विवेक कवन मति गति
संसारी ॥ मतिगति अङ्गर शारदा कहि न सकत सुखसरसको ।
तुलसिदास केहि विधि कहै रामसिया सुखदरशको ॥ ६१ ॥

पूजि विविध विधि पौध परि विनती सौय सुनाय । आदि
अन्त द्वयलोक तू खदशविहारिणि माय ॥ खदशविहारिणि
आय मनोरथ जानति हौकै । प्रकट प्रभाव प्रताप अगम वरदान
घचीकै ॥ अचौ शारदा हरितिया सेय सेय सब सुकभरि ।
जय जय जय गिरिपतिभुता विविध विनय सियपायँ परि ॥ ६२ ॥

वचन प्रसाद सुपाय सिय हर्षि चली निजधाम । सो छवि
हृदय निरूपकरि गुरुपहँ गवने राम ॥ गुरुपहँ गवने राम
जानकी भवन सिधार्थ । सुमन दिये सुनि हाथ राम कहि कथा

सुनार्द्ध ॥ कथा सुहार्द्ध सुनत सुनि सतानन्द आवत भये ।
जनकविनय कहि सोद तहि रामलपण आशिष दये ॥ ६३ ॥

आजु भूप वनि वनि चले रङ्गभूमि शिरमौर । पावक पानी
पवन सहि सुर नर सुनि इकठौर ॥ सुरनर सृनि इकठौर
आपुको जनक बुलायो । कौतुक देखन चलिय सतानन्द वचन
सुनायो ॥ वचन कहे सुनि रामसो चलहु तात अवसर अतो ।
काको यश दशदिशि विदित आजु भूप वनि वनि चले ॥ ६४ ॥

राम लपण कौशिक सहित सतानन्द अगवान । चले रङ्ग-
भूमिहि सकल मङ्गलमोदनिधान ॥ मङ्गलमोदनिधान
नारिनर गृह तजि धाये । नगर बगरमें बात भूपसुत देखन
आये ॥ देखि जनक परि पगनि पूरि प्रेम आनन्द लहित ।
आसन आदर देयकरि रामलपण कौशिक सहित ॥ ६५ ॥

रामरूप नृप देखिके युति मुखकी भइ लीन । रवि-
प्रताप निरखत मनो उडुगनज्योति मलीन ॥ उडुगनज्योति
मलीन दीन बलहीन विराजत । जड़खलदल दलमरेड साधु
सुर सजन गाजत ॥ गाजत दृन्दुभि सुमन सुर मगन नारिनर
पगिके । यकित चकित पल नहि तगत रामरूप नृप
देखिके ॥ ६६ ॥

जो जाके उर भावना देख्यो रामशरीर । कोउ शिशु कोउ
प्रभु मित्र शरि स्वामि सखा बलवीर ॥ स्वामि सखा बलवीर
धीर धरि प्रभुहि निहारै । वर्षत सुर शभकुसुम देव सुनि
जयति उचारै ॥ जयति उचारि समाज तखि जनक बुलार्द्ध
जानकी । सतानन्द आनी तुरत खानि सकल कल्याणकी ॥ ६७ ॥

मिथिलापुरके नारिनर सिय शत्रुवीर निहारि । विनती
कर्हि विगडिसन अञ्चल अञ्चलि धारि ॥ अञ्चल अञ्चलि
धारि देह दरदान विधाता । राम जानकी योग्य जोरि मिल-

वह यह नाता । नात जुरै नृपप्रण ठरै भूपति जाय लजाय धर ।
यह संयोग विचारि कहि मिथिलापुरके नारिनर ॥ ६८ ॥

माल जलज युग हाथ अबल छवि सिय पग धारी । जगत-
जननि सुखखानि निरखि मोहे नरनारी ॥ नारि सध्य बर
जानकी रघुवर पद अनुराग हिय । देखत सूर नर सुनि मगन
दौढ़े नयननिसेख सिय ॥ त्यागि सङ्गच रामहि लखे नयन
सँदि छवि हृदय भरि । रङ्गभूमि सिय पग धरे जलज माल युग
हाथ धरि ॥ ६९ ॥

जनक बोलि बन्दौ सकल कह्यो कहौ प्रण जाय । देव
धनुज भरिपति मनुज सबको देहु सुनाय ॥ सबको देहु सुनाय
भाट दश सहस सिधाये । चहुँ दिशि हाथ पसारि सुनहु
भूपति चित लाये ॥ चित लाये प्रण जनकको धनुष धर्यो यह
रङ्गयल । कर उठाय भञ्जै नृपति वरै जानकी बाहि
पल ॥ ७० ॥

हरिगिरिते गरु जानिये कमठपृष्ठते खोर । महिसँग
रख्यो विरञ्चि जनु सकल वज्र तनतोर ॥ सकल वज्रतन तोरि
मोरि सुरि गये दधानन । बाणासुरसे सुभट भये भञ्जित कह
जानन ॥ जान न कोउ याको मरम शिवहि छाँड़ि को तानिये ।
निजवल हृदय विचारिकै हरिगिरिते गरु जानिये ॥ ७१ ॥

नृपसमाज प्रण कहत हौं रेखा वचन खँचाय । रङ्ग राज
शिरताज सोइ ले है धनुष उठाय ॥ लेहै धनुष उठाय जगत-
मँह कौरति होई । जयमाला उर डारि जानकी ब्याहै सोई ॥
सोइ धनु धरि बल समुक्ति निज सुखमें कारिख नहि लहौं ।
वीर धीर धनु सो गहै नृपसमाजमें प्रण कहौ ॥ ७२ ॥

नहि छौवै कर धनुष ये सबको कहौ उभाय । जिन भूप-
न रण मण्डिकै रिपवल देखि भगाय ॥ रिपवल देखि भगाय

परमिय परब्रत हेत देत शठ हठ-
परमिय परब्रत हेत देत शठ हठ-
परमिय परब्रत हेत देत शठ हठ-

[illegible]

रूप धनु ना गहो मानहु बचन प्रतीति । पर बेरहि
मार्ग पाव राखि नही समीति ॥ राखहि नही समीत
प्रती छित तोरे । पातरु बाँधै सेलु पुण्यसर सर वृत्ति
भीरं ॥ मान मर्दि दिग धन हरै तिय बालरु बन कुल दहौ ।
ब्रह्मां प्रकारि पसारि कर ऐसे रुप धनु ना गहो ॥ ७५ ॥

ममङ्गि भूप धनुषहि धरो निजकुतबतदत्त देखि ।
 मावु ओर पितु ओर है धर्महि तजे विशेषेति ॥ धर्महि तजे
 विशेषि शस्त्रो तोक न जानो । शत्रु समर बरावन्त तेग
 नाजण नहि पाँजो ॥ बाँजो कोरति चन्द्रसौ जगत उजेरो नहि
 दागो । भाट कहन प्रण खाँचिकै ससुङ्गि भूप धनुषहि
 धरो ॥ ७३ ॥

धनुष आंगुरी जनि लुयो बल कुत पाप निहारि । सत्य
मृगन त्यागि हृदय कहत असत्य विचारि ॥ कहत असत्य
विचारि नारिवध ब्राह्मण कौन्हो । आगतको सङ्गलि ऐं चि
द्विज नुगते लौन्हो ॥ द्विजमुख दरशन करि भरप्री दानि-
गिगेमणि यश लियो । बदन रदन मसि लागि है धनुष आंगुरी
जनि लुयो । ७७ ॥

श्रेय नमान नरेश सो धरे भूमिको भार । जाको भानु

मन्त्रको तेज प्रताप प्रसार । तेज प्रताप प्रसार मन्त्र सदा
कीर्ति पारी । पानक तन घुतिवत् पवनै नत अधिकारी ॥
नत अधिकारी पवनको हृदि प्रकाश परेको । सो धनु
छुने रहैयको ऐन सुगान नरेक सो ॥ ८८ ॥

पहि प्रकारके वृष धर शिवरिनाक परचण्ड ॥ जाने
सत्य प्रतापको ध्वजा दीपनवखण्ड ॥ ध्वजा दीप नव खण्ड
भृप हरि चन्दसो होई । पृथु रघुवान द्वितीय सगर अंशुमान
सो कोई ॥ कश्यप यानि सुगाधिसे शिविद्विधीच वृष उच्चरै ।
वार वार प्रण उच्चरै यहि प्रकारके धनु धरै ॥ ८९ ॥

कौनारायण धनु धरै जाको प्रबल प्रताप । धरयो सेतु
सन्दर मही मयेउ सिन्धु करि दाप ॥ मये सिन्धु करि दाप
प्रबलविरख्याहहि सारयो । मुरनधुकैटभ वधन सुयय जगमें
विस्तारयो ॥ विविध भातिवदुधा सकल कुलप्री प्रतिपालन
करै । इत्यो होय वृषवृष धरि सो नारायण धनु धरै ॥ ९० ॥

विधि समान परचण्ड सो आयोहोय समान । ज्यहि जगको
रचना करि सरिसर गिरि गजराज ॥ सरि सर गिरिगजराज
समुद्र सातहु जिन बांधे । ऊंच नौज जग सृष्टि प्रबल बलते
ज्यहि बांधे ॥ साधि वेद चारौ सुखनि रचो सकल द्रष्टा-
खण्डो । यह कोदण्ड सोई धरै विधि समान परचण्डयो ॥ ९१ ॥

कौणनि शङ्कर धनु धरै ज्यहि विष कौलो पान । निपुर
दनुज बाहन जगन हतो एकहीवान ॥ हतो एकही वान गहन
तन रिसमें जारयो । चन्द गगन शिर धरै घन खुरज छति
नारयो । सारयो दृख सब जगतको जगत सबै पतनै हरै ।
आयोनी वृष वृष धरि कौणनि शङ्कर धनु धरै ॥ ९२ ॥

गणनायक सो होय जो सो धनु धरै प्रमान । जाको पूजै
प्रथम सुर विघ्न हरणकौवान ॥ विघ्न हरणकौवान ध्यान हरि

व्रत धम सुकमनि । अल्ल घल्लकीहारि छप बुति लाज काज
गनि ॥ लाज काज परगाज धरि राजनि धनु कर सो छियो ।
रीते वीते सब भये धनु धन सबको हरि लियो ॥ ८८ ॥

गाजि गाजि धनुकर धरयो लाजि लाजिगेभाजि ।
साजिसाजि बल दल सबै राजा राज समाजि ॥ राजा राज
समाज भये सुझ गोवन लायक । सम्पति सबै गँवाथ करयो
शङ्कर धनुधायक ॥ धायक आसन परगये जनुतनवल धनु
छलि हरयो । लाजि लाजि बैठे सकल गाजि गाजि कर धनु
धरयो ॥ ८९ ॥

धनु सुमेरते गरु भयो उठै न कोटि उपाय । तिल न टरै
भूषति तरै धरै अरै लपटाँय ॥ धरै धरै लपटाँय जायँगडि
अधिक धरामैं । जन्यो शेषके शीघ्र ईश जनु चढ्यो कलामैं ॥
कलाछप कैलासको धरणि छप धनुको लयो । उदय अस्त-
गिरिभार धर धनु सुमेरते गरु भयो ॥ ९० ॥

झोड वचन बोले जनक लप बल पौतल देखि । प्रण
प्रमाण देखन सबै आयै भूप विशेषि ॥ आयै भूप विशेषि
सनुज सुर अतुर लभामैं । तिल भरि, सनै न टारि अंसु धनु धरयो
धरामैं । धरा नछटौ धनुपते बल न करयो भूषति जनक । वीर
धीर धरणी नहीं झोड वचन बोले जनक ॥ ९१ ॥

प्रण हजार मिथ्याभयो जाहु सकल लप धाम । विधि नर
च्यो वै देहि वरु पुरुष न कोऊ वाम ॥ पुरुष न कोऊजान तो
तौ प्रण यह धरती कहा । कत्या रही कुमारी यह भई हास्य
जगमैजहा ॥ हात्त भई बसुधा एकल शहीन सब नगठयो ।
जनक लभामैं कह वचन प्रण हजार मिथ्या भयो ॥ ९२ ॥

लपण लालको लालमुख तुने जगदके दैन । फरको अक्षर
प्रलापको नखण भये झुनै ॥ अणन नदी द्रुड नखन जोरि

नाम्ने उठि ठावे । करुणा निधिकी पोर वचन बोले रिस बाढे ॥
नाम्ने रिस तन सुनु जनक वचन कहौ रघुवंश रुख । राम
हम तु नाराजमहे लगन ताल कह लाल मुख । ८२ ॥

कलानुता जीवत धरौ यह एकवारय कौन । प्रभु
पाय पावौ तनक धरौ चोदहौभौन ॥ धरौ चौदहौभौन
गती नट नट पट फोरौ । यन्त्रनेत्र उपारितमुद वसुधा
तन बीरौ ॥ बलधा बीरौ समुदमें समुद्रामातलमें भरौ ।
नेमनेत्र गरि महिपति कहा धनुष जीरण धरौ ॥ ८४ ॥

महिम उठाउँ धनुष यह जो प्रभु पायसु होय । दिग्गज
चारि एकत्र करिमहीधरन रुचिओ ॥ महौधरनपुनि
महिमोत चोदहवरि जानौ । दिगिगिरि रुद्र कैलास
धनुष ऊपर धारिनाँ ॥ तानाँ सकल समाज नृप चढि
चढिझाहुँभार कह । धाय सदा योजनमही सहित उठा
वाँ धनुष यत्न ॥ ३५ ॥

जनक नियो सकुचे सहमिडरे सकल महिपाल । दिग्गज
धनुष लुटिगो भयते दिशि यमकाल ॥ भयते दिशि यम
वात जानकी हिय हर्षानी । गुरु रघुपति मन तोष कहौ
पुच्छर सुदुवाने ॥ महिपतिप्रण लगनके सूरजके मन सुख
अयो । नभा सशंक प्रमाण सुनि जनक शीघ्र सकुच्यो
नयो ॥ ८६ ॥

कौशिक सुनि आयसुदयो सुनहु राम रघुवीर । धनुष
एतावत वाम कर हरहु जनककी पोर ॥ हरहु जनककी
पोर सभाको शोच निवारो । सुर सज्जन सुख लहहि
रुद्र सुग्रीवजिय पारो ॥ कारो मुख महिपाल सब ज्यहि
धनुष निज जानो शियो । सोधहु करौ मृणाल द्रव कौशिक
पुनि आयसुदिनो ॥ ८७ ॥

करि प्रणाम रघुवंश मणि उठे यथा मृगराज । आय-
सु भग्निउ जोरि कर सुकमा छवि शिरताज ॥ सुषमा छवि
शिरताज मंचते चले गोसांई । पुर जन पुण्यसँभारि
सँभारि देव दृन्दुभि वजाई ॥ दृन्दुभि बाजीं अति घनी बन्दीजन
धन्य धन्य भनि । मध्य वेदिका पर गये करि प्रणाम
रघुवंशमनि ॥ ६८ ॥

पटकत धनु लक्ष्मण लख्यो जात्यो प्रभु मन वात । कछां
धरणि धारौ सवै सजगहूजिये गात ॥ सजगहूजिये गात
धनुष कौधकादरेरो । जो भहि चलौतौ सृष्टि विकलत
सवको हैरो ॥ हेरोनै रघुवंशामणि लेत धनुष मनमें सखो ।
लटकत सहौ संभारियो पटकत धनु लक्ष्मण लख्यो ॥ ६९ ॥

वाम अंगूठा पांयदवि वाम हाथ गहलौन । दमक
दामिनी ज्यों करै सवके नयन मलीन ॥ सवके नयन
मलीन खँचि कौनो नभनाई । शब्द रखो ब्रह्मांड खण्ड
द्वैधख्यो गोसांई ॥ धर्यो गोसांई शंभु धनु शब्द सुने योगी
जगे । खण्ड खण्ड धनु तन भयो वाम अंगूठारे
लगे ॥ १०० ॥

शिव शिव वृषभ पुकारई धनुष शब्द सुनि घोर ।
दिग्गज दिग्पालन भयो हृदय कम्प अति जोर ॥ हृदय
कम्प अति जोर कम्प कैलास ईशयल । शिव शिर सुर
सरि धार उछलि आकाश गयो जल ॥ गयो सुजल आकाश-
यल उमा गणेश विचारई । कहा भयो कैसो भयो शिव
शिव वृषभ पुकारई ॥ १०१ ॥

जय जय जय रघुवंश मणि सुर फूलन वर्षाय । वेद
विप्र बन्दी विरद नारी मङ्गल गाय ॥ नारी मङ्गल गाय
सिया जयनाथ उठाई । शोभित प्रभु उर मध्य विष्व कौरति

जनुझाई ॥ कीरति गावहि सिद्ध सुनि बल प्रताप छवि
रूप भनि । सतानन्द आनन्द कहि जय जय जय रघुवंश
मनि ॥ १०२ ॥

नृपगण भये मलीन सब सन्त भये आनन्द । जनक
गोच संकट गयो सिया मातु सुख वृन्द ॥ सिया मातु सुख
वृन्द निह्वावरि मणिगणदेहीं । रामसियाछवि देखि प्रेम
गगनीन न केहीं ॥ कौन न केहीं दान सब समय शंभु धनु
दट जन । तुलसिदास संकट गये नृप मन भये मलीन
सग ॥ १०३ ॥

मटा गोद मिथिला पुरी राम कियो धनुभङ्ग । खल
मलीन राजन सुखद सुरसु सुमन शभरङ्ग ॥ सुरसु सुमन
शुभरङ्ग कण्ठ भृपनि मन माये । लच्छण उठे सक्रोध राम
गारन बनि राये ॥ बचि राखे रघुवोर नृपनिध प्रकटी
जहुनीद्वारे । राम सिया जोरी निरखि जहा सोढ मिथिला-
पुरी ॥ १०४ ॥

दर कुठार परशु रामके आवे लुगि धनु भङ्ग । गौर
रूप अनु रूप शिवजटा भक्त संवर्ग ॥ जटा भक्त संवर्ग
देखि स्तब्धे राव राजा । लागि करन प्रणाम काल निज
ममुक्ति ममाना ॥ ममुक्ति ममान पिनाक लखि कहे
जनन अरि कामके । कहि तोरयो तोर्यो तुरत कर कुठार
परशु रामके ॥ १०५ ॥

तोरयो धनु रघु वंश मणि जाको प्रजल प्रताप । हानि
कहा भय रावरी कहिय प्रकट करि आप ॥ कहिय प्रकट
करि आप देव द्विजवरकी नाई । पूजिय मानौय तुम्ह
पापनी वृद्ध बडाई ॥ वृद्धबडाई तवहि जगगाय विष पद पूजि
भनि । देह चागिप्राप्रेमसों धनु तोरयो रघुवंश मणि ॥ १०६ ॥

काल वध्य बोलात कहा सुको धनुष विहंड । विप्रन ऐ-
सोवाल सुनु नृप कुल शिरको खंड ॥ नृप कुल शिरको खंड
परशु करती तीक्ष्ण धारा । धनु ज्यहंतोरमो आजुतासु
सुजकाटन दारा ॥ काटनवारा परशु यह ज्यहि काटे
भूपति कहा । त्वहि समेत रामहि हतौं काल वध्य बोलात
कहा ॥ १०७ ॥

भूपति मिले नखेतमें तुम्हें विप्र कुल देव । हते तुम्हारे
हनि गयेते द्विज पद विन सेव ॥ ते द्विज पद विन
सेव चह धर्म नते हीने । ते तुम काटे परशु
रूप कपटौ जड़ दीने ॥ जड़ दीने नृप तुम हते पाप
राशि नहि चेतमें । ताते बाढ़े भवनमें भूपति मिले
नखेतमें ॥ १०८ ॥

चह विहीनी महिकरी परशु वार इकबीस । सो न
विदित त्वहि बाल जड़ तुरत जाइहै खौस ॥ तुरत जाइहै
खौस बचन सुख बोला तँभारे । सुख सुनही ओ मौन ताहि
तू पीछे डारे ॥ पाछे बचहुन कालदेवालय लखि कछि
वर टरी । परशु धार ज्यहि काटिहौं चन्न विहीनी
महिकरी ॥ १०९ ॥

द्विज कुल के नाते डरौं सुनहु विप्र सत आव । नत
चली तुलको सकल लेहुं तुरत अवदाव ॥ लेहुं तुरत अवदाव
परशु धनु भूमि निराज । धर्मबडो रखदार आरि द्विजपात
क पाज । पालक पाज घौसपर दूजे रघुपति कर डरौं ।
दगधर तुमहि दसावसो द्विजकुल दोगाते डरौं ॥ ११० ॥

ते झुठार सन्मुख धरयो राग तमराकी और । कौशिक
दरजो बालकहि ओहि नहीं अबखोर ॥ ओहि नहीं अब
खोरि करौं यह काल हवाले । परशु बन्धो खड्ग हाथ

त्रिपुल भूपति वर वाले ॥ वर वाले गिर मातिका शंकरको
पूजन कर्यो । अब चाहत तब गिर डर्यो लैकुठार सन्मुख
धर्यो ॥ १११ ॥

राम कहौ कर जोरिकै भृगु कुल कमल दिनेग । बालक
टीन विचारि उर क्रोध न कौजिय लेग ॥ क्रोध नकोजिय
लेग बाल अपराध विहीनो । धनुकर ममते टूट चूकसों
मही अधोनो ॥ महीं अधोनो कर्म बध बांधिय दीजिय
छोरिके । दास विचारि प्रभाव मोहि राम कहौ कर
जोरिकै ॥ ११२ ॥

शंभु दण्ड खण्डित कर्यो सो भुज खण्ड हुआज । जो
कर परशु प्रचण्ड लखि कटे अवनिके राज । कटे शर्वानिके
राज बचहू नहि दीन उपायन । चतुर्वंशतनपाय वचन
सुन भृदुल सुभायन ॥ भृदुल सुभायन क्योवचौधनु तोरत
नहि तब डर्यो । अनुज सहित भुजकाटिहों शंभु दण्ड
खण्डित कर्यो ॥ ११३ ॥

चतुर्वंश द्विज मानिये लपण कहौ हँसि बात । हमपै
पापन होय द्विज जननी कौन्हो बात ॥ जननी कौन्हो
घात ताहिते मन अति बाढ़ो । बड़ बेरी रण हत्योविरद पायो
गिर गाढो ॥ गाढो पाय पाप गिर तासों रिसनहि ठानिये ।
तुम्हें मारिको अवल है चतुर्वंश द्विज मानिये ॥ ११४ ॥

रे कुठार कुण्डित भयो गयो स्वभाव सक्रोध । अरि
प्रचण्ड दहि अवनि लप कौन्हो हृदय प्रबोध ॥ कौन्हो
हृदय प्रबोध अलत अरि देखत ठाढ़े । उत्तर सुनत सरोप
मीर हृदि ज्वालन बाढ़े ॥ ज्वालन बाढ़े जरत उर घोर
धारको लै गयो । काटि काटि कण्ठविकु तख रे कुठार
कुण्डित भयो ॥ ११५ ॥

जो रघुपति आयत्तु करें तो द्विज देहूँ देखाय । रख-
लखलकी कठिनता तुमको देऊँ बनाय ॥ तुमको देऊँ बताय
पगु बन त्यों बुझारों । भूनिशेब से पार सारि बारन उर
ज्यों ॥ बारन उर फारों समुक्ति विप्रवात पातक परै ।
तभा लजेन विचारिये जो रघुपति आयत्तु करें ॥ ११६ ॥

तपण वचन कहि धनु लियो नयन सयन करि राम ।
वरजे तुम वातक निपट भृगुपति सब गुणधाम ॥ भृगुपति
सब गुण धाम ताहिसों समसरि कौजे । जाकी पदरज
सेव्य आपने शिर धरि लीजे ॥ शिर धरि लीजे रिस कृपा
अनुज शिखावन प्रभु दयो । सुखसुख राम निहारि नत
लपण वचन कहि धनु लियो ॥ ११७ ॥

अस समय भृगुवंशनयि सुररक्षक द्विजपाल । जहि-
मखल इकईम गनि करौ निखल विशाल ॥ करौ निखल
जही नकल दई विप्रजे हाथ । रुधिरकुण्ड तर्पन कियो
तेई भृगुकुलनाय ॥ तेई भृगुकुलनायके चरण शरण सेवहु
सुनति । अभय होय तिहुँ लोकमहँ अस समय भृगुवंश-
पति ॥ ११८ ॥

जाके पदरजके धरे सुद मङ्गल कल्याण । अभयकरन
सङ्कटदरन गावनवेद पुराण । गावत वेद पुराण कलतए
सम सुखदाता । हरिहर पूजत जाहि पर्न सुखदानि
विशता ॥ दानि विवाता जानिकै निशि दिन लेवत जे
करै । अर्थ धर्म कामादिकी पद रज सुख जाके धरै ॥ ११९ ॥

काय व्यातना सो ढरत जाके इन पद गि । यहै
क्षिमा यह योग है यहै योग जप नेन । यहै योग जप नेन
करत तजि मन वच कायक । सोइ सुकती सोइ घर जाहि
द्विज भक्ति आशयक ॥ आयक छल तजि पूजि पद तन मन

धन सेवा करत । जीव जाल दुखमाल सब काल ब्याल
कासों डरत ॥ १२० ॥

सो त्रिलोक पावन परम जिनके द्विज पद प्रीति ।
विभ्रम श्रमताको नहीं दिशा विदिशि सब जीति ॥ दिशा
विदिशि सब जीति मोह रिपु फटक भगावै । यशदायक
गुण ग्राम राप अनुजहि समुक्तावै ॥ राम बुक्तावै अनुजको
चत्रवंश याही धरम । पदरज नित हित शिर धरै सो
त्रिलोक पावन परम ॥ १२१ ॥

राम सिखावन दुहुँ सुन्यो लक्षण और भृगुवंश । मति
गति सुरति सँभारि उर ब्रह्म सच्चिदानन्द ॥ ब्रह्म सच्चिदा-
नन्द भयो नृप सुत अवतारी । शारंग कामें दियो विविध
विनती अनुसारी ॥ विविध भांति पातक लगै कटुक वचन
मनमें गुन्यो । परशुधरन पुनि लक्षण हूराम सिखावन दुहुँ
सुन्यो ॥ १२२ ॥

नृप सभौन उठि उठि चले परशुराम गति देखि ।
आग्निप्र भृगुपति देय करि आनंद लखो विशेखि ॥ आनंद
लखो विशेखि जनकपुरजन सब रानी । बंदौ मागध सूत
उच्चरहि अद्भुत वानी ॥ अद्भुत वानी पुर भई वाजि उठे
दन्तुभि भले । सन्त सुपा सुरगण मुदित नृप सभौत उठि
उठि चले ॥ १२३ ॥

ममय पाय कौशिक कहै जनक महीप बुलाय । सजहु
सकल मङ्गल सुभग दशरथ नृपति बुलाय ॥ दशरथ नृपति
बुलाय व्याह कृतारीति सँभारौ । माइहु रचहु विचित्र नगर
गढ़ गली सँवारौ ॥ गली सँवारहु अगर मय सब कुतर्क
सगय दहेउ चार पठाइउ अवधपुर समय पाय कौशिक
कहेउ ॥ १२४ ॥

सतानन्द अवधहि चले तप्तपत्रिका हाथ । हीर नीरयुत
मणि पदिक सकल सुमङ्गल साथ ॥ सकल सुमङ्गल साथ
देखि रघुपति पर पावन । भूपति तियो हँकारि दीन्ह
पत्रिका सुहावन । दीन्ह पत्रिका नृप तखी राम व्याह-
मङ्गल भले । गृह गृह वने वधाव पर सतानन्द अवधहि
चले ॥ १२५ ॥

रामजानकी व्याह सुनि साजी भूप बरात । रथ बुरङ्ग
मानङ्ग वनगजधरदा बहरात ॥ गजधरदा बहरात दुन्दुभी धुनि
चहुँओरन । मङ्गल भरि भरि धार भामिनी गान मङ्गोरन ।
गान लज्जोर प्रमोद पुर सुनिध जय जय सुमन धुनि । दश-
रथधौ सुरपति सज्जो रामजानकीव्याह सुनि ॥ १२६ ॥

कुल विचार व्यवहार करि गुरुआयसु नृप पाय ।
निथिला परकी सग तियो भूप निधान वजाय ॥ भूप निशान
वजाय सगुण सुन्दर शुभ पाये । बीच वास करि विविध
जनकपुर भूपति आये । भूपति आये जनकपुर अति उल्लाह
आनन्द भरि । दृहुँ समाज संगम सुभग कुल विचार व्योहार
करि ॥ १२७ ॥

उमा रमा ब्रह्मायणी पतिन सहित पुर आय । राम
जानकी रूपछवि देखनको ललचाय ॥ देखनको ललचाय
निरखि दशरथके वारे । मनवचक्रमवशप्रेम भये सब देखन-
हारे ॥ देखनहारे भे भगन अधिसिधि मङ्गलदायनी । सिय
विवाहकनकर्मसर्व उमा रमा ब्रह्मायनी ॥ १२८ ॥

सुखल भूप डेरा दियो कौशिक लक्षण राम । पाय
खबरि पितु आगमन चले हर्षि गुणधाम ॥ चले हर्षि गुण-
धाम सुदिल भेटे रघुगई । सुनिपदरज धरि भूप भरत भेटे
दोउभाई ॥ भेटे परजन गुरुद्विजन राम देखि पूरण हियो ।

नप्रित्तिप्रि मा मज्जल लिये सुयलभूप डेरा दिग्यो ॥ १२६ ॥

सति नृप सँग द्वे ओर सुत ओर नृप नुठि गगन ।
ताज नुठुरो एक हें एक नत्प जनु राम ॥ एउ मत्थ जनु
राम नी जे गगन निदारे । बेसहि वदन मयंक नयन बसहि
स्तनारि ॥ बेसहि ललन राम छवि तैमे बच छवि देन दुन ।
नाम भाल रिपु न करत राखि नृपसँग द्वे ओर सुत ॥ १२० ॥

राजि तजि सगुन हिये तौनि रूप रें कोन । चाहु कुवर
निगारि बहि पुर नृप परवीन ॥ बहि पुर नृप परवीन दीन
निगारि नगारि । जस कन्या तस कुवर याग भिन्न दीन
निगारि । दीन पिनाग महेण निगारि बड़ो योग नगनय लिये ।
नाम भाल रिपु न करत राखि निदारे सगुन हिये ॥ १२१ ॥

चाहे कुवर निरहुति चले पाय सुभग सरुरारि । कहूँ
दिन दग दग मास भरि देखि वृम नरनारि ॥ देखि वृम
नरनारि जाहि पुनि दलहिनि चारो । कजु दिन वै उत रहें
जनक बोलि हे कुनारो ॥ जनक कुमारी आय हें प्रवध लांछि
घनन घन । बनि बनि दिन दग वोसपें चारि कुवर तिर-
हुति वने ॥ १२२ ॥

ये ताते बड़ि पुण्यते राखि परवें लिपुनारि । तौ विरश्चि
दुपटी रजो नुरुन टूट दिन चारि ॥ सुख टूट दिन चारि
चाहि नृप कुनर भिवाही । माइव तरे निदारि लैहु अग जीवन
तारो ॥ जीवनजारीनी अवधि यह सुख देखहि धन्य ते ।
निप्रि राग नृप उर जो दत्तै ये दाते बड़ि पुण्यते ॥ १२३ ॥

सति नृपनी तारी गनै रामायण छवि देखि । ताते
पुनर ॥ बड़ो नाये कुवर दिशेखि ॥ नाये कुवर दिशेखि
नानि न भेद न भारे । दर्शनफल तत्काल भूप दगरयहि
निदारे ॥ दगरय राम निदारि के दूत दूतहिनी पुनि वने ।

यह विवाह देखि सनहि सखि रुकनी ताही रनै ॥ १३४ ॥

ब्याह हो विधि लिखि दई दार्ज सुनन सुर गाय । राम
विवाह उल्लाह बड़ देखन चले बजाय ॥ देखन चले बजाय
जननैद जनक बुलाये । दशरथ सहित वरात जनकमन्दिर
बलि जाये ॥ मन्दिर अपि आवे सबै पौउड़ परि जय जय
भई । करि उल्लाह सजाज शुभ ब्याहघरौ विधि लिखि
दई ॥ १३५ ॥

को जिनान सुनना कहै जिहि धल सुखमा आहि ।
नखत निकरी तयमो सुख जुगवत पल जाहि ॥ सुख जुगवत
पल जाहि जहाँ दूतहिनि वैदेहौ । विधि हरिहर यम इन्द्र
होत दितवै हित तेही ॥ दितवै हित तेही रुपा दूतह
अंगेषुपति हैं । समधी दशरथ जनक सम को वितान
सुखता कहै ॥ १३६ ॥

इन्द्र ब्रह्म दूनों मिले बन्दौ वर्यात भाय । सब समाज
सब साज सो हसै प्रत्यक्ष दिखाय ॥ हसै प्रत्यक्ष दिखाय
रहै उपना जिय आवे । नारि सहित सुद्धमारि राम ब्याहन
सुख गावै ॥ रामब्याहसुख देखही अमरावति संयुत चले ।
निज निज एर सुरगण सहित इन्द्र ब्रह्म दूनों मिले ॥ १३७ ॥

राम सुभृषिन जगमगे माड़व मध्य समाज । माये सुक्ता
सौख्यनि नखत सहित निशिराज ॥ नखत सहित निशिराज
नारिनर देखत शोभा । रघुपतिसुख अशिशरद निरखि
छवि ठम न को भा ॥ रघुपति सुखछवि अदशशि नयन-
चकोनि लखि तगे । मदन कोटि अत वारिये राम
सुभृषिन जगमगे ॥ १३८ ॥

सुनि वशिष्ठ अउ सतानंद भरद्वाज जावालि । अत्रि अगस्ति
सुगर्ग अपि कश्यप सुनि तपशाति । कश्यपसुनि तपशाति देव

ऋषि सनक समेते । लोमश ऋषि चिरजीव व्यास पाराशर जेते ॥
पाराशर कौशिक सहित गौतम शक उच्चरत पद । वेदमन्त्र
करणो करै मुनि वशिष्ठ ऋषि सतानंद ॥ १३६ ॥

सूरजकुलगति सब कहैं पावक आहुति लेय । गणपति
कर पूजा जरै निधि विवाह कहि देय ॥ विधि विवाह कहि
देय पवन पुनि शेष महेष्वा । सूरपति सुरगण सहित मगन
द्विग लखत रमेशा ॥ लखत रमेश सुदेश चवि राम सबहि
जानत रहें । निप्रवेज वेदन पढ़ैं सूरज कुलगति सब
कहे ॥ १४० ॥

जनक मगन रानी सबै मुनि वशिष्ठ कहि दीन ।
सतानंद आनी सिया भूषण सजत नवीन ॥ भूषण सजत
नवीन राम द्विग अस्थित कीन्ही । मुनिवर अवरार
समुक्ति शान्ति अति मग कहि दीन्ही ॥ दीन्ही दुन्दुभि
अतिघनी सिय मरुप आई जबै । दशरथ सभा समेत सुख
जनक मगन रानी सबै ॥ १४१ ॥

जनक पायँ पूजन लगे शाखोच्चार उचारि । रानी नृप
मन मोद भरि लैको परशु चिवारि ॥ लैको परशु घिवारि
नारि वरमङ्गल गार्ह । कन्यादान विचारि देव फूलन भरि
लार्ह ॥ फूले तरु नृप मुकुतकै चरण प्रचालत सुख जगे ।
निरखि वदन दम्पति मगन जनक पायँ पूजन लगे ॥ १४२ ॥

जे पदपङ्कज नृप धरे जे शिवमान सहंस । जे पदपङ्कज
सुदृढ रम मुनि संकुल अलिबंस ॥ मुनि संकुल अति वश
प्रकट कीन्ही जिन गङ्गा । वरणत वेद पुराण प्रणतहित
विरद आगता ॥ विरद अभङ्ग प्रसङ्ग श्रुति मुनि तियके
पातक हरे । अज सनकादिक ते भजैं जे पद पङ्कज
नृप धरे ॥ १४३ ॥

जनकराय समको सुकृत कहत देव मनमार्हि । निरखि
भगन कौतुक परम जय जय कहहि सिद्धार्हि ॥ जय जय कहहि
सिद्धार्हि वचन कहि चार सँवारे । नरनारिन लखि रूप नेहवश
देह विसारे ॥ देह विसारे रूपको व्याहलाह लोयन रुकत ।
कोशलेश मिथिलानगर जनकराय समको सुकृत ॥ १४४ ॥

होन लगौं वर भौवरौ दूतहिनि तलित ललाम । दूतह
मुन्दर सौवरौ शशि मुखपङ्कज राम ॥ शशिसुख पङ्कज रामवाम
लखि मङ्गल गावहि । सुनिगण भौवरिकुत करहि गनि जियनि
दत्तावहि ॥ भगन मोद भौवरि परै रानी तन मन वावरौ । सब
द्वालचार विचार करि होन लगौं वर भौवरौ ॥ १४५ ॥

राम निछावरि को गनै मुक्ता मणि गण खान । मण्डप
धन पूरो भयो जनु जुवारि यव धान ॥ जनु जुवारि जव
धान जनकमन्दिरते आवैं । मुनि वशिष्ठके वचन नेग
गहि ताहि दिवावैं ॥ नेग साधि आहुति दई व्याह भयो
सब कोउ भनै । देव भूप रानी जनक राम निछावरि को
गनै ॥ १४६ ॥

जेहि विधि रामविवाह भो सो कहि सकहि न शेष ।
सम्पति शोभा सुख सुभग मङ्गल मोद सुवेष ॥ मङ्गल मोद
सुवेष साजु शुभ सकल समाजैं । कहि कहि यके गणेश
व्यास जिन श्रुति पथ साजैं ॥ श्रुतिपथ साजैं ते चकित
मोद विनोद उछाह भो ॥ तुलसिदास सो किमि कहै जेहि
विधि रामविवाह भो १४७ ॥

जनक कौन जो मुनि कहेउ सब कृत्यका विवाह । भरत
शत्रुसूदन लक्षण दूतह करे उछाह ॥ दूतह करे उछाह
नृपति दशरथ सुख पायो । रामव्याह विधि शोधि मुनिन
देविन करवायो ॥ देविन करवायो सुकृति दूतह दुलही

नून नद्यो । जोरि चारि निहारि सुख जनन कौन जो
कुण्डलिया ॥ १४८ ॥

रामा रीत कानन भये साचरु दादु नोर । सर सरिता
दिगज भये बाडि चरो चहुँ ओर ॥ बाडि चले
चहुँ ओर जालि जगदादित रानी । पुर परिजन भे छपौ
तनी सुख सुन्दर पानी । सुन्दर पानी बृंद मणि भूषण
पट वर्जित नये । राम सिया पावरा मुखद मेषा रोव दगरथ
भये ॥ १४९ ॥

वर कन्या राउच चले मुनि प्रायसु अस दोन । भूप समाज
समेन सब जनवासे पन दोन ॥ जनवासे पग दोन बजे
चन्दुभि अति भारी । दुताहिन दूताह ल्याय भवन आसन
दंशगे ॥ दलाह दुलजिनि सन निरखि रानी मुख सानी
॥ १५० ॥ हगविषय तरुतेर छन दरकन्या राउच चले ॥ १५० ॥

रमा उमा गानन लगौं ले मातृनको नाम । धरि कपोत
तह कोकन करान खवावत राम ॥ कगनि खवावन राम
तुनाहल मङ्गल होई । नेक अनेक प्रकार सङ्गचकहं प्रकटत
दाई ॥ प्रकटन तिय वचननि कहैं रामसीय जेमनि पगौ ।
कटन केतयो कोमिता रमा उमा जावन लगौ ॥ १५१ ॥

निय सुधौ दुम चतुर हौ रमा कळो सुसुकाय । सुनि-
नियनौ नाइ कहैं कौजिय नहि रचुराय ॥ कौजिय नहि
रचुराय मीय निबल सुनहु हमारी । पद कवहं जनि छुयो
विवाहकौ सुमतनि भारी ॥ नारी चारि विवाहिये एक
धनुन छवि नय लारी । रमा कइत रचनायसों सिय सुधो
दुम चतुर ॥ १५२ ॥

हासविलासविनादमय नेन योग करवाय । राम उठाये
भजनने शिविका रुचिर चढ़ाय ॥ शिविका रुचिर चढ़ाय

इलहिनिन सहित सुहाये । दुन्दुभि देवन एहुप राम जनवासे
जाये ॥ जनवासे देखत सगन भूप दीन लखि द्विरद हथ ।
पोजे याचक विविध सुख हासविलासविनोदमय ॥ १५३ ॥

षट्स चारि प्रकारके भोजन विविध बनाय । सतानन्द
घाणुहि जनक दशरथ चले लिवाय ॥ दशरथ चले लिवाय
पाँवडे अर्घ्य सुहाये । मणिसिंहासन रुचिर छरस भोजन
परुसाये ॥ भोजन परुसाये सुदित तियगण गानविहारके ।
सुनि दशरथ भोजन कियो षट्स चारिप्रकारके ॥ १५४ ॥

पान मान प्रसुदित दये भये विदा जनवास । गहगह
बाजी दुन्दुभी मङ्गल सोद विलास ॥ मङ्गल सोद विलास
वरातिन मन्दिर भूले । जनक प्रीति रज सुदृढ़ रामछवि
पावस कूले । कूले गज याचकन गृह पहिरि पाय मन्दिर
गये । जान रायरघुपति सर्वाह पानमान प्रसुदित
दये ॥ १५५ ॥

तीनि मास दशरथ रहे नित नव आदर होय । विदा-
साज साजी जनक सबको सुखसुख जोय ॥ सबको सुख-
सुख जोय नहस दश ख्यंदन साजे । मुक्तामणि गणसुपट
भाँड कञ्चनके राजे ॥ मणिगण लागे अत्त जे ते ते रथपूरे
लहे । जनकराज दायज सजे तीनि मास दशरथ रहे ॥ १५६ ॥

दिग्गज सहस्रपचासलौ सजे जरकसी साज । मणि-
सुक्ताकी कालरी लपे सोह गजराज ॥ रूपे सोह गजराज
जरीजरकसी अमारी । तिमिर अत्तण दूकठौर मनौ पावस
अंधियारी ॥ पावस अंधियारी सघन घण्ट शब्द सुरवासलौ ।
जनक राय दायज सज्यो दिग्गज सहस्रपचासलौ ॥ १५७ ॥

बुरी लाखदश वर सजे वरन वरनके जौन । रथरुद्धते धति
भले चञ्चल सुभग नवीन ॥ चञ्चल सुभग नवीन अलंकृत

भूपज राजे । बरन निजि मनवेग रङ्ग रङ्गनि बनि साजे ॥
बनिबनि साजे बाजिवर जिनहि देखि गुरइय लजे । जनक-
राय दायज सज्यो तुरी लाखदश बर सजे ॥ १५८ ॥

वृषभवृन्द दशलाखलो सुन्दर सब गुणधान । शृङ्ग
गज जछित परट सोइत ललित ललाम ॥ सोइत ललित
तलाम भये भोजन पकवाने । सौरभ मृगमद मलय अगर
कुमकुमके थानै ॥ अगर कुमकुमा रस भरे कपे जरकसी
पाखली । जनकराय दायज सज्यो वृषभवृन्द दशलाख-
लो ॥ १५९ ॥

महिषी लाखसतानवै देश देशकी खानि । मनौ श्याम-
वनके सवन मही चरै सब आनि ॥ मही चरै सब आनि
दूध धरनी धसि धारै । शृङ्ग कण्ठ मणिहार शिशुन प्यावत
सुकुमारै ॥ प्यावत सुकुमारै थननि दूध सुधार विधानवै ।
जनकराय दायज सज्यो महिषी लाखसतानवै ॥ १६० ॥

धेनु लाखयुगवानवै कामधेनुसी रूप । अलङ्कार मणि-
गण वनन सोइत परन अनूप ॥ सोइत परम अनूप दूध
सूधौ सुठि खरौ । संगशिशुनके वृन्द सकल शुभ लक्षण-
पूरौ ॥ पूरौ छविके को कहै जेहि देख्यो सोइ जानवै ।
जनकराय दायज सज्यो धेनु लाखयुगवानवै ॥ १६१ ॥

शिविका लाख बहत्तरी सियदासी असवार । मनहुँ काम-
तिथ रति चढी करि षोडश शृङ्गार ॥ करि षोडश शृङ्गार
जानकौपिय अधिकारी । मन गति रति परवीन चतुरविद्या
छनि भारो ॥ विद्या छवि सतभाव डर सिय सेवा उनसत्त रो ।
दश दायज उप पज्यो शिविका लाख बहत्तरी ॥ १६२ ॥

नवाजाज पिङ्गल सज्यो कलनखँचित विचित्र । शुक
मारिका गरल त्रु कुहोवाज शुचिमित्र ॥ कुहोवाज शुचि-

मित्त मित्र सचिकै प्रतिपाले । ते सेवक सब लिये जानकी
सेवनवाले ॥ सेवनवाले भाग बड़ जगतजननि जेहि जग
ख्यो । तासुसङ्ग यह कौन बड़ सवालाख पिञ्जर
सज्यो ॥ १६३ ॥

ऊट अजा अरु ज्ञानको लेखा गनो सिराय । जे प्रिय
सियके नृप लख्यो नगर बाहरे जाय ॥ नगर बाहरे जाय
मनहुँ चमरावति घेरी । दुन्दुभि दये सहस्र छत्र अरु
चमर घनेरौ ॥ चमर घनेरौ भवन पट आसन विविध
विधानको । दायज दियो नये गने ऊट अजा अरु
ज्ञानको ॥ १६४ ॥

रानिन सुता सँवारिकै करुणा सौख सुनाय । पति-
व्रतदर्महि दृढ़ धरेहु सेयहु सहज सुभाय ॥ सेयहु सहज
सुभाय होहु निन स्वामिहि प्यारी । सदा सुहागिनि होहु
यहै आशौच हमारौ ॥ यहै आशौचा देहि हम सुता
अङ्ग उर धारिके । भेंटि भेंटि पांयन परै रानी सुता
सँवारिकै ॥ १६५ ॥

जनकनयन धारा बहै सुता लिये उर लाय । सिय कण्ठा
छोड़न नहीं जनक न त्यागी जाय ॥ जनक न त्यागी जाय
सचिव सनुक्तावत राजे । धीरज धर्मपरान ज्ञान गुण ध्यान
समाजे ॥ ध्याननमाज न लाज रह छुटत लगत रोवत गहै ।
मातु गरे पुनि पितु गरे जनक नयन धारा बहै ॥ १६६ ॥

विदा हेत रघुवर गये जनकरायके धाम । रानिन लखि
आसन दियो कौन्हे राम प्रणाम ॥ कौन्हे राम प्रणाम
दाहन मृदु वचन सहाये । विदा दिजीये मातु नृपति चह
पावय सिधाये ॥ अवध सिधाये मनत नृप रानी सुख सूखत
भये । वचन न मुखपङ्कज कढ़्यो विदा हेतु रघुवर गये ॥ १६७ ॥

रानी रघुवर पाँय धरि कहत वचन भरि नयन । तुम्है
 ललत सुनि योगि जन घटघट तुम्हरो अयन ॥ घटघट तुम्हरो
 पयन सकल गति जाननवारे । दौजिय प्रभु वर युगल प्यास
 यह हृदय हमारे ॥ हृदय हमारे तुम बसौ कहौ दूसरो विनय
 करि । सुता किङ्करी राखिये रानी रघुवर पाँय धरि ॥ १६८ ॥

करि प्रणाम रघुपति चले रामसहित सब भाय । सुता
 चढाई पालकौ सुन्दर सौख सिखाय ॥ सुन्दर सौख सिखाय
 गृप पहुँचावन आये हनुमि दीन बगाय सुनिन देवन गुण
 गाये ॥ गुण गाये पाये सबनि सगुन सुहावन अति भले ।
 समझी भेंटि प्रणामकरि करि प्रणाम रघुपति चले ॥ १६९ ॥

अवध पाँचये दिन गये बनि बसि सकल सुवास । पुरप्रमोद
 आवन सुने रहसबिबध रनिवास ॥ रहस विवशर निवास
 पहिरि षट्द्वारन रानी । आरति मङ्गल साजि गीत गावहि
 रुद्रनाथ ॥ बानी मङ्गल सजि सबै कलश चौक चामर नये ।
 अवधनाथ सुखकौ अवधि अवध पाँचये दिन गये ॥ १७० ॥

परिछन करि भीतर गई पुत्रवधू सुत साध । मङ्गल मोद
 समाजयुन आये कोशलनाथ ॥ आये कोशलनाथ पुरी हर्षित
 नग्नारी । पुत्रवधू सुत देखि मगन तनमन महतारौ ॥ मह-
 तारी वारहि सुभग भूषण पट मणिगणमई । सुभग सिंहा-
 तन चारि धरि परिछन करि भीतर गई ॥ १७१ ॥

सुनिनाथक जो जो कहेउ सो सो करि व्यवहार । दान
 दीन विप्रन मुदित भरि भरि कञ्चनधार ॥ भरि भरि कञ्चन-
 धार भाविनी मङ्गल गावैं । रानी भूषण देहि सकल आशिषा
 सुनावैं ॥ आशिष देहि सनेह भरि शम्भु उमा परसन रहेउ ।
 गन भाय दशरथ सुखद रहै सदा मुनि जो कहेउ ॥ १७२ ॥

रामविवाह बखामई मोदसमुद्र रत्नाह । नारद शारद

जेम शुक गणपतिको अवगाह ॥ गणपतिको अवगाह व्यास
दिधि कहि कहि हारे । मनिअनुत्प वखानि भजनको भाव
विचारे ॥ मनिअनुत्प वखानिकै गिरा सफल निजु मानई ।
तुलसिदासकै कोन मति रामविवाह वखानई ॥ १०३ ॥

इति बालकाण्डः समाप्तः ॥

अयोध्याकाण्ड ॥

कुण्डलिया ॥

अवध अनन्द प्रबन्ध सुख दिन दिन अति अधिकाय ।
जवते राम विवाह करि आये कोशलराय ॥ आये कोशलराय
भुवन सब आनंद करे । अधिसिधिसम्पत्तिनदी अवधसागर
भरिपूरे ॥ सागरसप्त समानलौ गयो शोक करु दोष दुख ।
अमरपुरौ अहिपुर धरणि अवधि अनन्द प्रबन्ध सुख ॥ १ ॥

दशरथभाग सराहई सुर सुनिवर नरनारि । धर्म-
धुरीण प्रनापनिधि जिन पाये सुतचारि ॥ जिन पाये सुतचारि
जासु यश वरणि न जाई । ओरघुपतिमुख देखि हर्ष अति
लोग लुगाई ॥ लोग लुगाई गुण गनत शांति सो सुख चाहई ।
पुरौ भाग अनुराग सुर दशरथ भाग सराहई ॥ २ ॥

लपसों विनय सुनायकै केकयसुवन सप्रौति । भरत-
हेतु विनवौ करी कहि मृदुवचन विनौत ॥ कहि मृदुवचन
विनौत दिवस दश रहैं गुसाई । सुनिहु कहे लप पाहि भूप

पठये दोउ भाई " सुनि सुखने आयपु द्वियो भरन उठे गिर
नायके । केकजनन ल भरा सग नृपसों विनय सुनायके ॥ ३ ॥

विदा रामके चरण धरि भरत गलुइन भाय । मातु गुरु
भाता नृपहि चले सबहि गिर नाय ॥ चले सबहि गिर नाय
सभट सेना संग लौन्हे । श्रीरूपतिपदकमल हृदय मन मधुकर
कोन्हे ॥ मनमधुकर पदकमलरनि सुमिरतनाम सनेह भरि ।
धन्य भरत भूनल भये विदा रामके चरण धरि ॥ ४ ॥

नारद आये अवधपुर रामचरित हित जाहि ॥ प्रेम नेन
पाके अवधि रामरूप उरमाहि ॥ रामरूप उरमाहि राम
दंखत उठि धाये । पूजत विविध प्रकार जोरि कर प्रभु गिर
नाये ॥ प्रभु गिर नाये वृक्षियो सुनि प्रकटौ विधि हृदय जुर ।
कहन विरञ्चि संदेश सब नारद आये अवधपुर ॥ ५ ॥

रामवचन सुनि सुनि गये पाय वचन विश्वाश । राम
प्रकट माया करी सबके हृदय प्रकाश ॥ सबके हृदय प्रकाश
गुरुहि नृप जाय सुनायो । रामतिलक करि देहु नाय सबके
मन भायो ॥ सबके मन भायो सुखद सुनि वशिष्ठ आनंद
भये । तिलकसाज साजौ सुदित रामभवन सुनि सुनि
गये ॥ ६ ॥

नृप बातें प्रकटौं सबै सुनि रघुवर ससुकाय । नेम क्रिया
वन धर्म नृप निगक भेद विधि गाय ॥ गिलक भेद विधि-
गाय कहउ भूपनिहि दुलार्थ । मङ्गल वल्लु मँगाय तिलककी
दरो सुझाई ॥ वरी सुझाई कालि है राम राज्य बैठहि जवै ।
वाजे विजय वधाव पर नृपनाते प्रकटौं सबै ॥ ७ ॥

राम हेतु मङ्गल रचौ आनो तीरथ नोर । पान फूल फल
मृग नृप हय गय मणिधन चौर ॥ हय गय मणि धन चौर
परा नृपनि रचि राखी । बन्दनवार पताक कलश चौकै

अभिनादौ ॥ अभिनादौ कुसुमजुष जगर वीथो केरनिसीं
सचौ । मणिमय दीप प्रकाशिये रामहेतु मङ्गल रचौ ॥ ८ ॥

देखि देव शोचत भये अवध रामकौ राज । दुष्ट कष्टको
नाशि है निश्चय भयो अज्ञोज ॥ निश्चय भयो अज्ञाज सुमिरि
गारदा बुताई । राम विपिन कहैं जायँ मातु सो करहु
उपाई ॥ राम विपिन कहैं जायँ जब कर उपाय
बुद्धि बलनये । चरण गहैं पालन करी देखि देव शोचत
भये ॥ ९ ॥

धिक दिक् देवन कहि चली आगे हेतु विचरि । अवध
गई रानी जहाँ देखी सुमति सँभारि ॥ देखी सुमति सँभारि
तहाँ परवेशन पायो । कण्ठ मन्यरा वेठि तासु चित हित
भरमायो ॥ हित भरमायो तेहि सबै प्रिया केकयीकी अली ।
एर दुखदागिनि ली भई धिक् धिक् देवन कहि चली ॥ १० ॥

नगर देखि वार्ते कहौ हित तोरनकी घात । मोहि शोच
एक उर भयो जो फुर मानहु वात ॥ जो फुर मानहु वात हित
हेतौ दुख जानै । काज नशात विचारि विना पूछेहु बखानै ॥
दिनपूछे प्रसुके वचन इन वार्ते पातक नही । उत्तर देत
नहि दोष है नगर देखि वार्ते कहौ ॥ ११ ॥

इन ठौरनि पूछे विना कहै खामिसों दास । सर्प अल
अरि विष अनल अनिल बरहट दुर्वास ॥ अनिल कण्ठ दुर्वास
अशन पय अपय जनावै । लाभहानि दुखदानि कहत पातक
नहि आवै । लाभहानि नहि बोलै प्रसु आयसु रुख निशि
दिना । खामि सुहागिलि देहि सिख इन ठौरन पूछे
विना ॥ १२ ॥

मोहि भामिनी दुख भयो समुक्ति एक उत्यात । सब
पुरको नौको लगे तुम्है भरतको घात ॥ तुम्है भरतको घात

गन नृपराणि विचारो । काल्हि राम नृप होहि भई शोभा
पर भागो ॥ भारि विपति विचारिकै हृदय मोर दुखयुत तयो
भरन विदेग नरेग पर मोहि भामिनो दूख भयो ॥ १३ ॥

विपति बोज अङ्कुर भयो बयो कौशला रानि । पावस
नृप उर देनि शुभ आयसु सुन्दर पानि ॥ आयसु सुन्दर पानि
अवनयनसुन बल पार्दे । गुह पुरजन भे वारि तुम्है नित
कोन्ठ उपाई ॥ कोन्ठ उपाय सहाय सन भरत तेज तप सो
गयो । चारि दिवस गन देखियो विपति बोज अङ्कुर
भागो ॥ १४ ॥

मन्य मानि रानो कहे कहु सखि मोहि उपाव । भरत
गये अमगुन भये सा मा यहै प्रभाव ॥ सो सब यहै प्रभाव
बुझान अं मा जानां । सगनि ईरषा छाडि पुत्र पति
आपा पानां । प्राया मानि न कहु कश्य नृप मलीन
उपगन चहै । इतू जगत मेरो तुही सत्य मानि रानो
कहै ॥ १५ ॥

कहि गुहाय रानो वदन जनि मन करमि मलीन । द्वै वर
तेरे नृप चहै ऐहि मांगि परबीन ॥ ऐहि मांगि परबीन
झांष दृढ वचन न डोलै । राम विपिन सुत राज्य सत्य करि
नृपमन बोलै ॥ राम विपिन जब जाय हैं भरत भूप होई
नदन । सबति हृदय यहि भांति दहि कहि सुखाय रानी
वदन ॥ १६ ॥

मन प्रतीति रानी भई लई सोख उरुमानि । जो कहु
मन रघुपति चहै सोई सत्य उर आनि ॥ सोई सत्य उर
आनि क्षोपके भवेन सिधार्दे । दुर्गति करि तन दशा मनहुं
यमपुरति आई ॥ दशा मनहुं नृप मरणकौ धरणि कुलक्षणकौ
मई । देवि कुरोनि सुप्रीति सिख मन प्रतीति रानो भई ॥ १७ ॥

का न करहि यह कर्मवल केहि जग यम नहि लीन ।
पवन उगायो काहि नहि को दुख दुखी न दीन ॥ को दुख
दुखी न दोन मोहनद केहि नहि बाध्यो । लष्याज्वर नहि जगो
कामधर काहि न साध्यो ॥ काहि न साध्यो क्रोधदल
केहि न चलो तरुणीतरल । चितचिन्ताआलिनि यथा
का न करहि यह कर्मवन ॥ १८ ॥

अवधपुरी अमरावती बाजै विपुल वधाव । सबके उर आनन्द
अति रामतिलक सतिभाव ॥ रामतिलक सतिभाव साँझ
समया नृप पायो । सरल सुहृद नृप हृदय कैकयी गृह चलि
आयो । आयो सुनि रिसके सदन वदन पौत भय छावती ।
अवधनाथ सरपति सरिस अवधपुरी अमरावती ॥ १९ ॥

सो दशरथ कम्पहि हिये काम प्रताप बलीन ! जाकी
दश तय लोकमहँ केहि अनर्थ नहि कीन ॥ केहि अनर्थ
नहि कोन चन्द्र सरपति गति देखो । नृप दिलीप सुनि
अश्रु ययानिहि चिन अवरेखो ॥ चित अवरेखहु कामवल
तीनिलोक भेदित किये । ताको घर नृप उर गड़ो सो
दशरथ कम्पत हिये ॥ २० ॥

देखि जाय रानी विकल भूमि अयन तन दीन । पट
पुरान सुखे अधर नयन अरुणरँग पौन ॥ नयन अरुणरँग पौन
मनहँ दुर्दशा अनैसौ । विपति नारिके रूप कुमति जसि
प्रकटनि तैमौ ॥ प्रकटति वचन वदनमहँ कुमतिसाज
धरि छल कुयल । भूप सभय पेटे भवन देखि जाय रानी
विकल ॥ २१ ॥

क्रोध कौन कारण कियौ गजगामिनि वरनारि । जोइ
माँगसि सोइ देउँ तोहि कामादिक फलचारि ॥ कामादिक
फलवारि तोहि परतौति सदाई । तेरे सुखके हेतु तिलकको

गो गोवा ॥ वरी गोवाई तितककी अवध लोग सुनि
सुनि निजो । करि प्रबोध नृप पाणि गहि क्रोध कौन कारण
निजो ॥ २२ ॥

उठि नेटो बोलत भई करि कटाक्ष सुसुजाय । भूप न
जाने रह्य हृदि नारि चरितके भाय ॥ नारि चरितके भाय
नि हु ननि जाननदाई । है वर यातौ देहु तौर हम तजे
दुख ॥ तजे दुखारे दानिता कहां अपय खँचौ नई ।
फिरि न टरै कडि उच्चरौं उठि बैठो बोलत भई ॥ २३ ॥

अपय सत्य लखि काह चलि वचन अमङ्गलमूल । देहु
एक वर प्रथम यह भरतराज्य अनुकूल ॥ भरतराज्य अनुकूल
दमते भोगहुं साई । चोदहवपेविशेषि राम वन सुनि को
नाई ॥ रुकि को नाई जाहि वन कालहि राम तौ अति
भनो । सोर मरण अपनो अयश अपय सत्य लखि कहि
चली ॥ २४ ॥

सुनि भूपति उर अति दल्यो वचन हृदय जनु लाग ।
मुख सुखान लोचन सजल प्राण विकल भय भाग ॥ प्राण
विकल भय भाग मूँदि राखे दोउ लोचन । शोक दाह उर
ढढन कहत जलु वनत न शोचन ॥ वनत न शोचन मुख
वचन मनहु प्रेत कर्मनि छल्यो । धुनत शीघ्र व्याकुल शिथिल
सुनि भूपति उर अति दल्यो ॥ २५ ॥

मये विकल सुनि नृप कहा वचन तजे जिमि वान । सत्य-
सज्जना मन किये कल्यो देन वरदान ॥ कल्यो देन वरदान
अचान किन कल्यो सँभारे । कौशल्यसुत सुवन भरत नहि
सुवन दुखारे ॥ भरत सुवन पठये कुथत रामतिलकआनंद
मश । सावेउ छन तत फल लहौ भये भिकरु सुनि नृप
कहा ॥ २६ ॥

नयन उधारे नृप कहत समुक्ति प्रिया वर सँग । भरत
भूपको तिलक पुर तामें लगै न दाग ॥ तामें लगै न दाग राम
वन पठवति काहे । कौन लाग अपराध राम सब साधु
सगहे ॥ साधु सराहे नारिनर अब अचर्य छाती दहत ।
ताने समुक्ति विचारि कछ नयन उधारे नृप कहत ॥ २७ ॥

ये न वचन टरि हैं नृपति मरहु उजरि पुर जाय । अथ
अधि विधना करहि अथ रविदंश नशाय ॥ अथ रविदंश
नशाय हाय पुर काल हवाले । कलह कपटकी नागि अग्नि
भगि जाय पताले ॥ भगि पताल अग्नी घटे रवि अग्नि रेंगहि
उज्जति गान । विधि हरिहर आपुहि कहैं ये न वचन टरि हैं
नृपति ॥ २८ ॥

अनल चन्द वरद्वै कबहुं शीतल सूरज होय । शेष तजे धरनी
धरन समुद्र विना जल जोय ॥ समुद्र विना जल जोय शय्य शिर
चन्द्र प्रगारे । निभिर दहै रवि रूप वृद्धकर दण्डहि डारै ॥
दण्डहि विधि पग सृष्टि सब नारायण मिटि जाहि कहुं । ये न
वचन नृपति टरैं अनल चन्द वरद्वै कबहुं ॥ २९ ॥

राज्य न चाहैं भरत पुर लागो तोहि पिशाच । मोरि
मृत्यु बोलत वचन नव मुख चढ़ि गिर सौच ॥ तब शिर चढ़ि
करि साँच गम नृप होवाहि भारी । तुठि कलह दुख भोर
मिटहि कबहुं क नहि नारी ॥ नारी करि चित चाहिके वचन
भार जिय जानि फुन । राम भूप सेवक अनुज राज्य न
चाहैं भरत पुर ॥ ३० ॥

वसौ अवध नृप राम हैं यह जानत सब कोय । भोर
मरण भो भागिनौ यह सुख लख्यों न सोय ॥ यह सुख
लख्यों न साथ लख्य जिय जानसु भागिनि । मौन जिये
त्रिवु वाहि । नहिनु निगों न भागिनो ॥ जियों न भागिनि

दिन वृथा जानि मरण्य परिणाम है । तू अभागिनी तनु
तियो बसी अवध नृप राम है ॥ ३१ ॥

राम राम कहि नृप गिरा कुमति न मानी बात । अवध
वधाव अनन्द बड़ नौद न लागी रात ॥ नौद न लागी रात
कातहि शुभ घरी सुहाई । देख्यो जाय सुमन्त भूप गति मति
विकलार्थ ॥ मति विकलार्थ देखिकै लिखि कुचाल आतुर
फिरयो । आवे राम लिवायकी राम राम कहि नृप गिरा ॥ ३२ ॥

पितु उठाय बोले वचन नृपति लौन उर लाय । नयन
नीर धारा धसे वचन बोलि नहि जाय ॥ वचन बोलि नहि
जाय राम पूछी महतारी । कहनि कठोर कुबैन कथा करणौ
कटु भारी ॥ कटु भारी सो हेतु सुनि तन प्रसन्न कह मृदु
वचन । लघु उपदेशत दुख महा पितु उठाय बोले
वचन ॥ ३३ ॥

राउर चरण प्रतापते बन मुद मङ्गल मोहि । सुनि
तोरय देवन दरश मोर परमहित होहि ॥ मोर परमहित होहि
एत दिन विलस न रागै । आतुर ऐह्यौ अवधि धरन पुनि
चरन सभागै ॥ धरन चरन पुनि आय हौं आयसु देख्य
आपत । कुशल क्षेम घर आयहौं राउर चरण प्रतापते ॥ ३४ ॥

उत्तर कहेउ न भूपमुख राम धरे नृपपाय । कुमति
कठोर कुवचन कटु मातु कहत सुमन्त्राय ॥ मातु कहत सुमन्त्राय
हृदय छोडत नहि राजा । करि प्रवाध शिर नाय विपिनकी साजि
ममाजा । साजि समाज प्रसन्नमुख गहे मातुपद प्रेम सुख ।
राम चलाह व्याकुल गिरा उत्तर कटो न भूपमुख ॥ ३५ ॥

मातु गोद मोदति भरे कहति वचन आनन्द । काल्हि
निक नृप सुख रुज्यो कितिक वार सुख वृन्द ॥ कितिक
वार सुख वृन्द लाभ लोचलून सब टौ । सिंहासन सिंघ

सहित निगधि रविशतद्युति कूटी ॥ रविशतद्युति कूटी
नवधि मधुर लाल भोजन धरे । न्हाय खाउ बड़ बार भो
मातु नोद मांननि भरे ॥ ३६ ॥

राज विरिनको मोहि दयो जहाँ मोर बड़ काज । राउर
चरणप्रतापते कुञ्ज आइ हौं साज ॥ कुञ्जल आइ हौं साज मातु
आश्रित मोहि दोजे । जान दिवस नहि बार हर्षि मन आयसु
कौजे ॥ आयसु कौजे हर्षिके मातुचरण प्रभु शिर नयो । कह
सृष्ट दृष्ट कर जोन्किँ राज विपिनको मोहि दयो ॥ ३७ ॥

सहमि सुखानी सुनि वचन सिया धरे पग आय । राम
वृत्ताई जानकी विपिन विपति सब गाय । विपिन विपति सह
गाय सुनन लक्ष्मण उठि धाय । कहि कहि विविध प्रकार लक्षण
सिय प्रभु ननुकाये ॥ समुक्ताये प्रथमहि सिया करि विवेक बन
प्रिय सदन । उत्तर कछुक न सिय दयो सहमि सुखानी सुनि
वचन ॥ ३८ ॥

धरि धीरज कह जानकी मन समुक्लिय रघुराय । कण्ठक-
दन दावा अनल अनिल व्याल दुखदाय ॥ अनिल व्याल दुख
दाय व्याघ्र वृत्त ग्रहि गज घेरे । सुकर भालु पिशाच विषम
बन भय बहुतेरे ॥ बहुतेरे उत्पात जे सरन दहै भय आनकी ।
प्रभु वियोग छातौ दहै धरि धीरज कह जानकी ॥ ३९ ॥

विपिन आपु संग अति सुखी हासि पात तरु छाह ।
गिरिगण सरि सरवर मुदित क्षुधा तृषित नहि दाह ॥ क्षुधा
तृषित नहि दाह निरखि पदकमल तुम्हारे । अमपथ तन-
क न लेश सकल विधि प्रभु रखवारे ॥ प्रभु रखवार विचारिये
तजे जीव जानिय दुखी । त्यागिय मोहि विवेक फरि विपिन
आपु संग अति सुखी ॥ ४० ॥

प्रभु सुखपर नहि प्रण कौं उत्तर दीन्हे पाप । तजौ तौ

कहा वनाय पिय समुक्ति विचाग्यि आप ॥ समुक्ति विचारिय आप प्राण तन त्यागि निवारों । प्रभु सँग जाइय धाय देह वर राखिय डारों ॥ रागिय डारों देह वर बहुत कहत पातक डरों । सत्य मन्त मन दृढ धरत्रों प्रभु नुपपर नहि प्रण करों ॥ ४१ ॥

तुम लक्ष्मण मानो कही राम सिखावन देत । मान पिना पर शोच सब नाशहु वसौ निकेत ॥ नाशहु विज्ञानेक अवधपुर भरतहु नाहों । भूप पद नरनारि दुखित मम दूख मनमाहों । दूख मनको दूषण तजौ मानि मन्त राग्यो मही । दूषण देइहि मोहि नर तुम लक्ष्मण मानो कहो ॥ ४२ ॥

प्रभु वनमें हों घर रहों आयसु तज्यो न जाय । प्राण वायु ममवश नहो देह कही तहँ जाय ॥ देह कही तहँ जाय भार यह कापर डारो । मैं सेवक शिशु कुमति चरणरज सेवनवारो ॥ सेवनवारो रज चरण धर्म नीति मग किमि लक्षो । अवध काग मेरो कहा प्रभु वनमें हों घर रहों ॥ ४३ ॥

मातुचरण रघुवर नये बिदा माँगि कर जोरि । अश्रुधार धाई धरणि माता कहति बहोरि ॥ माता कहति बहोरि कठिन उर फाटत नाहो । ठाढी देखत नयन राम सुत कानन जाहो ॥ कानन जाहि विशेषिकै सबके सुख सुहात गये । भेटि नाथ उर यह कहो मातुचरण रघुवर नये ॥ ४४ ॥

गुरुपायन पर सौंपिकै लीन लपण सिय साय । चले भूप मन्दिर जहां विदाहेतु रघुनाथ ॥ विदाहेतु रघुनाथ राय उनि दृश्य लगाये । नयनधार अन्हवाय राम बहुविधि समुक्तये ॥ समुक्तये नृप राम बहु सिया प्रेम उर तोपिकै । भेट भेट भूपति गिरयो राम चले गुरु सौंपिके ॥ ४५ ॥

करि प्रणाम रघुपति चले त्यागि अवध सुखमूल । सब-
को सार सँभार एरि सेटि मोहमय झूल ॥ सेटि मोहमय झूल
लोग सब व्याकुल भागे । रामविरहकी आगि नारिनर
उठि संग लागे । संग उठि लागे नारिनर कालकर्म गुण दल
दले । शिर धरि रानि बखानि कटु करि प्रणाम रघुपति
चले ॥ ४६ ॥

भृप हुलाय सुमन्तको सिखदै दयो पठाय । सुनत सचिव
आतुर चलो खन्दन बुरत वनाय ॥ खन्दन बुरत वनाय
विनय करि राम चढ़ाये । तमसातीर निवास प्रथम दिन
रघुपति जाये ॥ प्रथम लोग तजि प्रभु उठे सचिव साधि रघु
तन्तको । गये राम जिय जानि सब सङ्ग बुलाय
सुमन्तको ॥ ४७ ॥

रामविरह दावाचनल भयो अवध वन घोर । पुरवासी
खग सृग भये रहैं सुखी सब ठौर ॥ रहैं सुखी सब ठौर-
कैकयी भई किराती । ज्वाल बड़े चहुँ ओर जरति निशि
दिन तन छाती ॥ अवधि सेवकी आश एर रहि न सकत तप
कठिन थल । सो उपाय ब्रत जप सुहृद रामविरह दावा-
चनल ॥ ४८ ॥

राम गये सुरसरि निकट कैवट परम हुलास । वचन
सुमन्त बुलायकै बोले राम प्रकाश ॥ बोले राम प्रकाश तात
अब अवध सिदावे । पितृपद गहि मम ओर कुशल सब
विधि सजुकावे ॥ समुझाये कहि कोटि विधि तदापि पर्यो
सङ्कट विफट । चले कर्मवश सचिव पुर राम गये सुरसरि
निकट ॥ ४९ ॥

सौगी नाड निहारिकै राम कहे मृदु वैन । सुनत बात
कैवट कहै सुनिये राजिवनेन ॥ सुनिये राजिवनेन रावरौ

पदरज खोंटो । मानुष उड़ि उड़ि जात काठको गति है
छोटो ॥ गति है छोटी मोरि प्रभु बात कहों डर डारिके ।
रज मानुष कर मूरि ककु मागहु नाउ निहारिके ॥ ५० ॥

तरनि होय मुनिकौ वरनि मरै सकल परिवार । कोटि
करो वानन लरो कहौ बचन शतवार ॥ कहौ बचन शतवार
नाउ नहि तुम्है सुभाऊं । अपने कुलको हानि होय जो तुम्हें
चढ़ाऊं ॥ तुम्हें चढ़ाऊं नाथ जब चरण प्रछालों निज करनि ।
जिन भोये न चढ़ाय हों तरनि होय मुनिकौ वरनि ॥ ५१ ॥

चरण प्रछाल विलम्ब कह राग कह्यो सुसन्धाय । पानौ
आन्या दुहुं करनि धर्यो कठोता आय ॥ भर्या कठोता आय
नाथ पनि धोवन लाया । देवन वरें फूव कहत यहि समको
आयो ॥ यहि मन बडभायो कहा शिवविराजि पदकनल चह ।
अन्य धन्य कहि मरुत मुर चरण प्रक्षाल जुटम्ब सह ॥ ५२ ॥

कोन पार परिवार जो चरणमुधाजल प्याय । पीछे
पार उतारियो निज कर कोशलराय ॥ निज कर कोशल-
राय उतरि निय सहित बहारो । केवट लौन बुलाय लेहु
उतराई थोरौ ॥ उतराई थोरौ लहो ताहि भयो अम पारको ।
दोन देखि मोहि दोन बहू पार कोन परिवारको ॥ ५३ ॥

ते पद धोये आजु भैं शिव विधि योग कमाहि । जिन
चरण नको श्रेय श्रुति वरणात निशिदिन जाहि ॥ वरणात
निशिदिन जाहि प्रकट कोन्हो जिन गङ्गा । अशरण शरण
पुनौत पगनिको विरद अभङ्गा ॥ विरद अभंग प्रमाणको
धोये जनक समाजमें । सकल सिद्ध सिद्धन दई ते पद धोये
आजमें ॥ ५४ ॥

विमल भक्ति वर दै चले राम लक्षण सिय सङ्ग । वन गिरि
सरिमर ग्राम पर देखत मृगजु विहङ्ग ॥ देखत मृगजुविहङ्ग

घान्पुर निजसहि जाई । देखि कहहिं नग्नारि रामसिय
सुन्दरताई ॥ रामसिय सह एकु हत दीख भाग तिनके
भली । जेस नेन जय योगफल विमल भक्ति वर दे चले ॥ ५५ ॥

एक कहत सुत्र चन्द्रसों भासिति भावत मोहि । कला
जोय शशि शीतकर सीता कलित सजोहि ॥ सीता कलित
सजोहि श्याम रेखा शशिमाहीं । सिय सुखपर लट श्याम
सुभग वरणत कवि ताही । वरणत कवि मृगबद्ध कहि यह
मृगनयन जनन्दसो । ताप हरत यह शशिसुखी एक कहत
सुत चन्द्रसों ॥ ५६ ॥

एक कहति सुख कमलसो और न पटतर ताहि । अरुण
सुवासित अति मृदुय सो सियमुख खगगाहि ॥ सो सिय-
मुख खगगाहि शीत सुत वह यट सीता । कवि वरणत हैं वाहि
याहि मुख सुयश पुनीता ॥ सुयश पुनीता दृढनको अमर मिल
युग सुयलसो । और कहाँ उपमा लगे एक कहति मुख कम-
लसो ॥ ५७ ॥

सौतामुख सो मुख कहौ कमल चन्द्र सो नाहि । कमल
मन्द है रजनि वृत्ति चन्द्र मन्द दिनमाहि ॥ चन्द्र मन्द दिन-
माहि राहु हिमिशत्रु सदाई । सौतामुख अरि नाहि लोक-
तिहुँ खोजहु जाई ॥ लोकतिहुँ महुँ विदित है घटे बड़े
निशिदिन लहौ । कमल चन्द्र पटतर कहाँ सौता मुख सो
मुख कहौ ॥ ५८ ॥

एक कहैं पुर धन्य है माहु पिता पुनि धन्य । जिन देखे
ते धन्य हैं जहाँ जात धन धन्य ॥ जहाँ जाता धन धन्य
विटय गिरि सरि सर जेते । खग मृग निरखत धन्य वसत यत
बैठन तेते ॥ बैठत तेते सज्ज हैंसि बोधत चितवत धन्य हैं ।
धन्य पय वन धन्य हैं हम देखत अति धन्य हैं ॥ ५९ ॥

राम लषण सीता सहित देखि प्रभाव प्रयाग । न्याय
ज्ञान दोन्है । द्विजन प्रीति सहित अनुराग ॥ प्रीति सहित
अनुराग दर्शसख सम्हिन पाये । दुख सुख सबको देत
आप ऋषिआश्रम आये ॥ आश्रम आये सुनत ऋषि भरद्वाज
आनंद लहित । आसन आदर मुनि करी राम लषण सीता
सहित ॥ ६० ॥

राम तुम्हारे दर्शते यह फल प्रकट दिखात । नेम प्रेम जप
योग तप तीरथ व्रत दुख गात ॥ तीरथ व्रत दुख गात
प्राप्तु सब सुफल हमारे । राउर आगम लहत नयन मुख सुखद
निहारै ॥ सुखद निहारै सुख भयो तीरथ राउर परशते ।
भयो मोद मङ्गल परम राम तुम्हारे दरशते ॥ ६१ ॥

भार प्रयाग नहायके राम लषण सिय साथ । चले मनो-
हर मनहरन वन्दि चरण मुनिनाथ ॥ वन्दि चरण मुनिनाथ
मदन रति ऋषुपति मानौ । ब्रह्म जीवके मध्य लसत माया
लुवि जानौ ॥ माया लुवि लय देखिधौ उमाशंभु गण
नायकै । चले किधौ सुरपति शची भोर जयन्त लिवा-
यकै ॥ ६२ ॥

पथ चरित सिय रामको सबसुख मङ्गलदाय । राम
लषण सियदर्शते खग मृग सुखी सुभाय ॥ खग मृग सुखी
सुभाय परमपदके अधिकारी । को न लहै सुख सकल सुखद
वर वदन निहारौ ॥ वदन निहारि सप्रेममय भरयो परम सुख
धामको । हिरितरु खग मृग नारिनर देखि चरित सिय
रामको ॥ ६३ ॥

बालमौकिआश्रम गये सिया लषण रघुराय । आये
मनिवर मिलनको भेटे हृदय लगाय ॥ भेटे हृदय लगाय पूजि
परिपूर्ण कोन्है । आसन आदर देय फूल फल अङ्गुर दोन्है ॥

अङ्गुर दीन्हे अमिय सम अस्तुति आनन्द मन भये । सकल सिद्ध साधन सुफल वालनौकिआश्रम गये ॥ ६४ ॥

जाके हित मन गोत्र सित साधत साधन धाम । मोह-मदादिक ग्रह तलै अहनिशि जागत याम ॥ अहनिशि जागत जाम जापतप योग विरागे । मानस ब्रह्मणि रूप रहत निशिदिन अनुरागे ॥ निशिदिन अनुरागे रहै ज्ञान ध्यान मन्दिर लहित । सो प्रत्यक्ष मूरति लखी जाके हित मन गोत्र सित ॥ ६५ ॥

राम कह्यो कर जोरिकै सुनिनायक सुनि बैन । आश्रम पावन दीजिये जहाँ करौ शुचि अयन ॥ जहाँ करौ शुचि अयन दिवस ककु तहाँ विनाऊँ । जानत कारण सकल कडा कहि प्रकट जनाऊँ ॥ प्रकट जनाऊँ आश्रम न देहु सुनौश निहोरिकै । चलिय रुपा करि देहु सुनि राम कहेउ कर-जोरिकै ॥ ६६ ॥

सुन्दर गिरिगण सरित वन दौख जाय मुनि सङ्ग । कहत महातम पर्ष थल देखि होय दुख भङ्ग ॥ देखि होय दुख भङ्ग सुखी खगमृग वनचारी । तरुवर फलित विभाग सुधासम सुन्दर वारी ॥ सुन्दर जल थल निरखि यह चित्तकूट मङ्गल भरित । पावन करिय विहारथल सुन्दर वन गिरिगण सरित ॥ ६७ ॥

राम लषण आश्रम कर्यो चित्तकूट सिय सङ्ग । मनहु विपिन वसि तप करत रति अतुराज अनङ्ग ॥ रति अतुराज अनङ्ग राम लखि सुख वनचारी । भरि भरि दोना सफल भेट धरि वदन निहारौ ॥ वदन निहारि निहारि सब मगन सदन मङ्गल भर्यो । विपिन भयो कामद सुखद रामलषण आश्रम कर्यो ॥ ६८ ॥

अब सुपन्त अवधहि चले राम विदा जव कीन । ह्य न

चरति रघुवरविरह सचिव भयो दुःख दीन ॥ सचिव भयो
दुःख दीन मिथिल गल हौंकि न पायो । विरल विपान
निहारि नय केवट पटुं पायो । केवट गृह पायो बडरि
सांति पाय गवसर भजे । हानि गलानि मिहल उर प्रव
सुमन्त प्रवधहि चले ॥ ६६ ॥

कह सुमन्त कहै रामसिय उठे शिकल नरनाह । सचिव
हृदय भेटेउ नृपति नयनन नीरप्रवाह । नयनन नीरप्रवाह
सचिवमन बोलि न पायो । रामसिया सन्देश सल सुख
कहन न पायो ॥ कहन न पायो सुखबचन ब्रह्मन्धूपय कह्यो
जिय । लखण रामसिय रामसिय कहु सुमन्त कहै राम-
सिय ॥ ७० ॥

भूपभवन रोयन परयो रानी पुर नरनारि । प्रवधनाथ
अघयो मनहुं रविनिशि अवध निहारि ॥ निशि सम अवध
निहारि गारि सब कृतमतिहि देखे । विपति वियोग कुयोग
कराह दृढ दीनेसि नेह ॥ दीनेसि सबकहै दुसह दुख
केहिदे करतन नृप मरयो । हाय हाय लायो नगर भूप-
भवन रोदन परयो ॥ ७१ ॥

राखि भूप तन करि यतन कह वशिष्ठ समुक्ताय । दूरे
पठाये भरतपहं प्रातुर चार बुलाय ॥ प्रातुर चार बुलाय
भूप गति प्रकटेह नाही । मुख बुलाये भरत बेगि ले गमनहु
नाही ॥ गवन दीन शिरनाथ तब हयगति मारग सुनि वचन ।
सुनि बुक्ताय रानी सकत राखि भूपतन करि यतन ॥ ७२ ॥

गुरुर्मदेश शाये भरत पाणकुन नगर नगीच । प्रधान
इगल उलूख सर बोलत अशुभ हानीच ॥ अशुभ हानीच
भरत मति गति यिति नाही । भरत देखि नरनारि वाम
दाहिन चलि जाहौ ॥ वाम अवधपुर देखिकै दुखज्वरसौं

छानी जरति । धरत पावै डगमग परत गुरुसँदेश आये
सरत ॥ ७३ ॥

रामायण भाजन साजिकै सुन आगमन विचारि । लै
छाई वैक्यसुता अत आरतौ उतारि ॥ सुत आरतौ उतारि
भाय दोउ भ्रमते भुले । पिघो न जल धल बैठि शूलके अङ्कुर
झुले ॥ पद्मुर शूल विचारिके कुशल पूछि निजराजिके ।
बोली सुतदाहक वचन भूषण भाजन साजिकै ॥ ७४ ॥

कुशल राज्य सब काजमें राख्यों पुन सुधारि । भई मन्थरा
परमहित दुख दूषण सब जारि । दुख दूषण सब जारि राज
सब तुम्हते जाग्यो । कष्टक भे सब दूरि अगम वर नृपसन्
माग्यो । अगम सुधारो वान में नृप सुरपुर सुखसाजमें ।
कष्टक विगारयो विधि यहै कुशल राज्य सब काजमें ॥ ७५ ॥

गमलप्रण सिय वन गये मरे भूप तेहि शोच । तुमकहँ
राज्यदिलास अब कौजे छाँड़ सकोच । कौजे छाँड़ि
सकोच होत सब विधिका कोनो । मरन जियन जग रीति
लेहु पर राज्य नवौनो ॥ राज्य सुनत व्याकुल गिरयो रोदन
करि सुच्छिंत भय । तात तात हा तात कहि रामलप्रण
सिय वन गये ॥ ७६ ॥

पर न कौरा सुहँ जरयो वर मागत जड़ तोहि । कुमति
कठोर न नृप लखी मिथ्या जन्मे मोहि ॥ मिथ्या जन्मे
मोहि बाँझ तू भई न दाहे । ऐसौ कुमति कठोर कर्म करि
मो उर दाहे । दाहे उर खल वचन मुख राम विपिन-
कह मन धरयो । को तू काके रूप धर परं न कौरा मुख
जरयो । ७७ ॥

पौतम मारत नहि डरी वन पठये सियराम । प्रेत
पिशाचिनि रूप तू भई कहांको वाम ॥ भई कहांकी वाम

राम तोहिं चनहित लागे । जोहसि सो उठि बैठु ओट तजि
ओखिन आगे ॥ ओखिन आगेते टरै धिक मैं जन्मगों जोहि
वरी । रामसुवन पठये बनहिं पीतम मारत नहिं डरी ॥ ७८ ॥

आई दुखदायिनि तिया नाम मन्यरा जाहि । भूषण-
भार शृंगारि तन रिपुहन लखि चष चाहि ॥ रिपुहन
लखि चष चाहि दोरि पग कूबर मारो । परो धरणि धरि
लेश घसौटत तनक न हारो ॥ तनक न हारो बीर तब
भरत जाय रक्षण किया । उठे त्यागि कुल दाहिनी आई
दुख दायिनि तिया ॥ ७९ ॥

उठत कौशला गिरि परों भरत देखि उठि दोरि । लौन्है
हृदय उठायकै आंगन गिरौं बहोरि ॥ आंगन गिरौं बहोरि
रोय दीन्हों दुहुं भाई । मातु लगआई कण्ठ अश्रुधारा नह-
वाई ॥ नह वाये चषनीरते बीर भरत धीरज धरी । विकल
भरत समुक्तावती उठत कौशला गिरिपरी ॥ ८० ॥

अञ्जल नयन लगायकै आँसू पोंछति मात । तोहिं विना
सुत यह दशा उठन न पैयत गात ॥ उठन न पैयत गात
रामसिय बनहिं सिधाये । पुर परिजन भे विकल लषण सिय
बहु समुक्ताये ॥ बहु समुक्ताये नहिं रहे राम चले सँग
लायकै । सुनत भरत जलसों भरे अञ्जल पोंछति
धायकै ॥ ८१ ॥

मातु जगत जन्मगों वृथा भई न कैकयि बाँझ । राम
सिया अप्रिय भयो अयशमूल जगमौझ ॥ अयशमूल
जगमौझ जासु हित यह शति तोरी । जन्मत हृत्यो न
मोहि देति विषमाहुर घोरी ॥ माहुर दै माग्यो जगत कुल
कुटारि उपज्यो यथा । नृपगति यह रघुपति विपिन मातु
जगत जन्मगों वृथा ॥ ८२ ॥

सुर गुरु द्विज पातक परै जो जानत यह बात । बाल
बालवध अथ अयश गाय गोठ पुर घात ॥ गाय गोठ पुर घात
मौत लप माहुर दौन्हे । परधन परतियहानि परै अथ
गोवध कोन्हे ॥ गोवध निंदावेदको पर अपकारौ अथ
करै । जो जननी जानहुँ तनक सुर गुरु द्विज पातक
परं ॥ ८३ ॥

परधर अग्नि लगावहीं कुपय पन्थ पग देयँ । बल करि
जिय परधन हरै रण भगि अपयश लेयँ ॥ रण भगि अपयश
लेयँ मातु पितु विप्र न मानै । हरिहर पदते विमुख भूत
प्रेतन उर आनै ॥ उर आनै तीरथ कुरुत निज कुटुम्ब लण
लावहीं । जो जानौ तौ अथ परै परधर आगि लगा-
वहीं ॥ ८४ ॥

लोभ मोह फाँसे रहै साधु सङ्ग नहि लेयँ । मौत विप्र
कुल कष्ट लखि अशन नीर नहि देयँ ॥ अशन नीर नहि
देयँ कूप सर वाग विध्वंसै । तन पोषक विन तोष ग्रहत
विष धन पर अंसै ॥ पर अंशै जे नित धरै कुवचन बोलि
छाती दहै । तिनकी गति विधि देहु जग लोभ मोह फाँसे
रहै ॥ ८५ ॥

ते नर जग हो ते मरै करै जन्म भरि पाप । रामगुल
अपयश लहै देहि विप्र गुरु ताप ॥ देहि विप्र गुरु ताप बसत
घर लाय उचारै । सन्तसभा नहि बेठि सृषा मुख वचन
उचारै ॥ सृषा साखि जग उच्चरै नित्य रारि उठि गृह करै ।
रामसिया जेहि प्रिय नहीं ते नर जग होते मरै ॥ ८६ ॥

तुम सुत शपथ न खाँचियो राम प्राण प्रिय तोहि । तुम
रामहि अति प्रिय सदा विधि गति वाँकी होहि ॥ विधि
गति वाँकी होहि देहु दूषण जनि काहु । कर्म प्रधान किसान ब-

वे लुनियत सोइ ताहू ॥ बसो लुनियत जगतमें भूप मरे
हम बांचिये । राम चले प्राण न चले तुम सुत अपण
न खांचिये ॥ ८७ ॥

बड़े भोर मुनि पायगे बैठेहि रैन बिहानि । भरत बुझाय
तगिष्ठ मुनि भूपक्रिया विधि आनि ॥ भूपक्रिया विधि
पानि दाढ सरयूनट दीन्हो । रानिन केर प्रबोध भरत
पायन परि कोन्हो ॥ पायन परि करि कर्म सब तिल पञ्जलि
रुन रागके । भरत मिखाये मृत करम बड़े भोर मुनि
पायके ॥ ८८ ॥

हय गय मणि भूषण दये सिंहासन महिसाज । धेनु
नमन आयुध चवैरह्व पात्र शिरताज ॥ छत्र पात्र शिरताज
प्यमति गनि मुनि जस भाषी । शत शत कोन विधान भरत
क्राणो अभिजापी । करि करतूति प्रमाण जस सब प्रकार
विधिवत भये । शुद्ध मिद्ध करि काज सब हय गय मणि
भूषण दये ॥ ८९ ॥

शुद्ध भये मुनिवर गये जहां राजदरवार । नगर महाजन
विप्रजन सचिव सुभट सरदार ॥ सचिव सुभट सरदार
बोनि पठई सब रागी । भरत शत्रुहन साय बोलि लौन्हे
मुनि जानो ॥ मुनि जानौ बैठारि दिग मधुर बचन बोलत
भये । राजसभा दरवार सब शुद्ध भये मुनि वर गये ॥ ९० ॥

वृषति प्रेम पूरण कियो तेहि को शोचि नहि । जाको
यस शशि अर्दत्ता को नहि देखि सिंहाहि ॥ को नहि देखि
मिटाहि भोग सुरपति सम कोन्हो । राम वियोग रुशाव
प्राण नेहि दण्ड करि दीन्हे ॥ राम अपण तुम शत्रुहन चारि
सुवन लाख भगजियो । विकुंरि गयो सुरलोक वर वृषति
प्रेम पूरण कियो ॥ ९१ ॥

राम स्वभाव सनेहको कहिय कौन विधि गाय । पितु ।
गायतु बुरतहि उठे सब पुरजन समुक्ताय ॥ सब पुरजन
समुक्ताय सिया लषणहि समुक्तायो । प्राण तजौ यह जानि
सह करि शोचन आयो ॥ शोचन जायो भूपको भूपति
वचन लखेहको । धर्मशैल गुणको कहै रामस्वभाव
सनेहको ॥ ६२ ॥

कठिन बैक्यी का कहौ कहतहु कहौ न जाय । कुमति
कुमागि बरायकै दौन्हो अवध लगाय ॥ दौन्हो अवध लगोय
राम सिय बनहि सिधाये । पुर परिजन मन शोच भूप हठि
प्राण पठाये ॥ प्राण गवांये भूपवर भावी गतिको नहि
दहौं । विधि विधता चति कठिन है कठिन बैक्यी
का कहौ ॥ ६३ ॥

भूप वचन प्रिय प्राण नहि भरत सुनौ सतिभाव । सो
फुरकी निय शिर धरिम धर्म स्मृति श्रुति गाव ॥ धर्म स्मृति
श्रुति गाव तजे रघुवर जेहि लागौ । मातु सचिव पुर लोग
जरत जर नाशहु आगौ ॥ नाशहु आगौ अवधकी अवधि
लगे लुप राज्य तहि । दोष न कलु आनम करौ भूपवचन
प्रिय प्राण नहि ॥ ६४ ॥

कहन कौशला पाँय परि पूत सुनहु गुरु वात । भूप
नर रघुपति गये तुम यहि विधि कदरात ॥ तुम यहि विधि
कदरात अवध उत्पात दिचारी । कालकर्म गति वाम कुदिन
सुख कीजिय कारौ ॥ कीजिय गुरु आयसु मुदित पुर परि-
जन शिर भार धरि । पालि शोच सबको हरौ कहत कौशला
पाँय परि ॥ ६५ ॥

भरत नयन धारा चली सुनि गुरुजननी वैन । हाथ
जोरि धौले नधुर जल उमड़े द्यौ नैन ॥ जल उमड़े द्यौ नैन

सीख भलि दोन्ह गोसांई । मातु कहेउ उपदेश मोहिपर
दया सदाई ॥ दया सदाईते कहत सचिव मातु गुरु हित
भले । उतर देत पातक लहौं भरत नयन धारा चले ॥ ६६ ॥

पाँयन पनहीं नहि धरौ राम विपिन किय गौन । भृप
मरे प्रण पूर करि ताको शोचव कौन ॥ ताको शोचव कौन घाव
यह तीक्ष्ण लाग्यो । यहै पौर नित दहत रघुन भरि शोचन
जाग्यो ॥ शोचन जाग्यों निशि सबै जाति सबै छाती जरी ।
राम लक्षण कटिपट तजे पाँयन पनहीं नहि धरौ ॥ ६७ ॥

प्रातकाल करि हौं यहै सुनहु सत्य सब बात । धर्म जाय
जग अयग लहि नरकहु दुख सहिगात ॥ नर कहुदुख सहि
गात जन्म भरि मझट होई । सब दुख दाँवा दहौं अनल
बरु डारहु कोई ॥ डारहु कोय जुवाल ज्वर सकल दोष दुख
भरि रहै । जाहु अनुजयुन विपिन कहै प्रातकाल करि
हौं यहै ॥ ६८ ॥

शरण सामुहे देखिके रघुपति करि हैं छोड़ । श्रील
स्वभाव सस्वामिको समुहे जनपर मोह ॥ समुहे जनपर
मोह राममिय वाम न काह । में शिशु सेवक नीच कुपति
उर प्रकटेउँ ताह ॥ प्रकटेउ विधि अथ अयग लै नीच दास
शिशु लेखिके । रामसिया करि हैं रुपा शरण सामुहे
देखिके ॥ ६९ ॥

भरत वचन लखि रवि जगे रामविरह निशि पाय । भृप-
मरण कैकय कुपनि निमिर रहेउ पर छाया । तिमिर रहेउ
पर छाया मुर्छि मोवत नरनारी । लक्षण सियाको विरह
आग्र वृक गर्जत भारी ॥ गर्जत भारी भय विकल तारागण
मुनि द्विज लग । दुखद सेज मोवत विकल भरत वचन
लखि रवि जगे ॥ १०० ॥

सबके मन सब सुख भयो भरत भलो मत कीन । दुख
समुद्र बड़त सकल जेहि अबलम्बन दीन ॥ जेहि अबलम्बन
दीन सभा सब उठि भे ठाढ़े । रामचन्द्र सिय दर्श मन्त्र नर
वारिधि बाढ़े ॥ वारिधि बाढ़े लोग सब भरत मन्त्र सबही
लयो । साजि साजि बाहन चले सबके मन सब सुख
भयो ॥ १०१ ॥

भरत साज साजत भये मातु सकल पुरलोग । चले
चित्तकूटहि भरत कृष्ण तन रामवियोग ॥ कृष्ण तन रामवियोग
चले सजि साज समाजे । पाँयन पनहीं त्यागि शीश नहिं
भूषण राजे ॥ भूषण साजे त्यागिके भाय मातु सँग सब
लये । रामप्रेम पूरण भरे भरत साज साजत भये ॥ १०२ ॥

तमसातीर निवास करि प्रात समाज समेत । सुरसरि
देख्यो जाय तव केवट कहत सचेत ॥ केवट कहत सचेत
भरत सेना सँग लीन्हें । समुक्ति निषाद विचारि कपट
प्रन्तरमहँ दीन्हें ॥ अन्तर कपट विचारिके सजग होउ सब घाट
धरि । राम जानि वन भरत सजि तमसातीर निवास
करि ॥ १०३ ॥

रामकाज जूझहु सुभट भरत रामके भाय । मैं सेवक
रघुवीरको लोहे देहुँ अघाय ॥ लोहे देहुँ अघाय सुभट विन
कटक निहारौ । हय-गय रघु जल बोरि पाउँ पौछे जनि
धारौ ॥ पाउँ न पौछे कोउ धरहु राम काज अरु गङ्गतट ।
मोर निहोर विचारिके स्वामि काज जूझहु सुभट ॥ १०४ ॥

पहिरत अगरी धनु धरत भई लौं गति वाम । सगुन
सगुनिधा कहि चलो सगुन सुमङ्गलधाम ॥ सगुन सुमङ्गल-
धाम भरत नहिं कपट कुचाली । राम मनावन जाहिं सङ्ग
ल मातु सुचोली ॥ सङ्ग मातु गुरु सचिव सब लोग राम

गोचनि जरन । सहसा कर्च न कोजिये पहिरन नगरी धनु
धरत ॥ १०५ ॥

समुग्धि भेट नृप ज चले सन पुग धन पट मोन । मिलन
साज सन सन्न लिये पुरजन पगन प्रवीन ॥ पुरजन परम
प्रवीन मिलो मुनिराजहँ नगरी । रामतता गुनि भक्त
चले मिलन मन त्यागे ॥ रम त्यागे केवद कौन नाम जाति
पर जन भये । भग्न नगरी उमंगत नयन नगुणि गेटि
नृप जे चले ॥ १०६ ॥

भग्न कुणल पँको रावँ गेट निनो कोन । नव पद रन
लमि कुणल मन प्रभु दर्शन जव दीन ॥ प्रभुदर्शन लेखत सकल
दुम दर्श पावने । चरिये अपने परहि राम जरा सेवक जाने ॥
मेवक कहेउ पुढारि सेँ गानुनि लमि सादर जवे । हे अशोच
जनु लप्रण भम हेतु कुणल पछी रावे ॥ १०७ ॥

मव गुपास मवको भयो पुरणारि भरत नन्हाय । राम-
मया सेवा करी मवको बाग दिवाय ॥ जवको पास
दिवाय रथनि मव तहाँ गँवारे । एकहि सेवा पार किये केवद
उतराई ॥ उतराई नृप गेनयुत चले प्राग मारग तिथी ।
रामदर्श लातच हृदय सब सपाम जवको भयो ॥ १०८ ॥

न्याय प्रयाग प्रणाम करि दान डोन सुख पाव । भरद्वाज
आश्रम गये निने पूजि बैठाव । मिले पूजि बैठाव कखो
हम मव सुधि पाई । कगन करहु सह भरत प्राणसम प्रिय
रघुराई ॥ प्राण नमान ननेठ पद तजि जतानि जनि हृदय
धरि । निशि कनि कौन सुपास सब प्रात नझाय प्रणाम
करि ॥ १०९ ॥

रामनाम रमना ललित ध्यान राग लियरूप । अवय
अथा रघुपति सगुण हृदय चरित अनूप ॥ हृदय चरित

एनूप परत पग मग हग डोलैं । शिथिल सनेह गँभीर राम
सिय लुख भरि बोलैं ॥ सुख भरि बोलैं रामसिय पय
रूपयहु निचलित । वर्षत सुर जय जय कहत रामनाम
रसना ललित । ११० ।

सुन्दर वन गिरि गण सुदित मृग विहङ्ग कपि भाल । प्रसु-
दित प्रजा समान सब राजा सुखद सुकाल ॥ राजा सुखद
सुनाल मज्जल तल पल सुखदायक । सुधा सरिस सरि-
वारि कर्ण अघ औगुणखायक ॥ औगुण छल दल दपट
दूरि कपट द्विद केहरि विदित । केवट भरत बताइयो
सुन्दर वन गिरिगण सुदित ॥ १११ ॥

नाथ विटप बट तरु तरे कौन छावनौ राम । सिधा
वनार्ई वैदिका निज कर ललित ललाम ॥ निज कर ललित
ललाम राम शुभ आश्रम नौको । सुनिगण कहत पुराण
सुनत दिनकरकुलटीको ॥ दिनकरकुलमण्डन मही दुख
खण्डव कहि जय हरे । रामसिधा लक्ष्मण लखौ नाथ
विटप तरु बट तरु ॥ ११२ ॥

जाय भरत पाँयन परे लाहि लाहि भगवन्त । अशरण-
शरण प्रताप जग आदि मध्य नहि अन्त ॥ आदि मध्य नहि
अन्त प्रणत जनरत्नक स्वामी । शील स्वभाव विचारि
शरण पद रज अनुगामी ॥ अनुगामी शिशु औगुणी धाय
आनि प्रभु पद धरे । लाहि लाहि रत्नक प्रभो जाय भरत
पाँयन परे । ११३ ।

भरत प्रेम रघुवर शिथिल उठे शरीर विसारि । धनुष
तीर पट शिर मुकुट जटा दये छिटकारि ॥ जटा मुकुट छिट-
कारि नयन उमँगे जल धारा । दुहुँ कर लियो उठाय मगन
नहि देह संभारा ॥ देह संभार विचार तजि भाय लाय

उममें विकल । देखि दृशासुरगज तसित भरत प्रेम रघुवर
जिधिल ॥ ११४ ॥

छोडि न भावन जिधिल दोउ भाय प्रेम परिपूरि । मन
उधि नित दिन लायके करि कुतर्क सब दूरि ॥ करि कुतर्क
मन दूरि राम पुनि केवट भेटे । लषण भरत पुनि मिले शल्-
हन उर दुख भेटे ॥ भेटि दुनइ उर दाह दुख भरत जीश पद
धरे दोउ । सकल मभा मुनिगण मगन छोडि न भावत मगन
दोउ ॥ ११५ ॥

भेट गुरु आगमन कहि राम उठे सब सङ्ग । धरे जाय
मुनिपदकमल भेटे मुनि धरि अङ्ग ॥ भेटे मुनि धरि अङ्ग
पति आग्रमहि निवारि । मातन भेटे आय मनहु शिशुधेनु
तुगर्द ॥ धेनु तुगर्द गति मिली लिय सासुनके चरण गहि ।
गंठन कात तिलाप करि केवट गुरु नृपमरण कहि ॥ ११६ ॥

भये शत्रु मुनि वचन कहि भरत राम सब भाय । सब
समाज करुणा हरप मातु सचिव कपिराय ॥ मातु सचिव
कपिराय भरत विगली उठि कौन्हो । श्रीरघुवर
सर्वज्ञ सकल गति मति रति चौन्ही ॥ मति गति चौन्हि
मनेह सब अवग करिय सोइ आजु लहि । चलिय अवध
नृपता करिय भये शत्रु मुनि वचन कहि ॥ ११७ ॥

आयसु नृप बनको दयो सोई धरि शिर आज । तुमको पितु
पुत्रको दयो पूरण राज समाज ॥ पूरण राज समाज हमहुँ तुम
आयसु कीजे । पालिय पितुको वैन जन्म अभिमत फल लीजे ॥
अभिमत फलति न जग लह्यो पितुआयसु जिन शिर लयो ।
वचन न खण्डित सो करौ आयसु नृप बनको दयो ॥ ११८ ॥

जो अति कहत सुसत्य है भरत कहत कर जोरि । पितु
आयसु गिर राखिये परमधर्म शत कोरि ॥ परमधर्म शत

कोरि तदपि पितु तियवश होई । सन्निपात अतिवात वारु-
णो सेवत सोई ॥ सेवत सोई रोगवश वचन कुयोग अपत्य
है । समुक्ति नाथ कौजै उचित जो श्रुति कहै सो सत्य
है ॥ ११६ ॥

प्रभुरुख लखि मन प्रण कियो गये गङ्गके तीर । जल
उठाय सङ्कल्प करि जो न चलै रघुवीर ॥ जो न चलै रघुवीर
देह दणसम तजि डारौ । तन मन अर्पित देखि गङ्गतिय
वेष सुधारौ ॥ वेष सुधारौ एक मुख दिग उपदेश सुधारियो ।
सुनु विवेक रामानुजे प्रभुरुख लखि प्रणमन कियो ॥ ११७ ॥

सत्य सच्चिदानन्द हरि राम सकल सुर ईश । ताहि न
सुत भ्राता गनौ सर्वोपरि जगदीश ॥ सर्वोपरि जगदीश
शम्भु विधि हरिकारण कर । पद पताल शिर गगन लोक कर
उर गिरि सरवर ॥ गिरि सरवर धर अङ्ग-सब भरण हरण
धिति परि भरि । हठन करो आयसु धरौ ब्रह्म सच्चिदानन्द
हरि ॥ १२१ ॥

जन पालन खलगण दहन चले विपिन सुरकाज ।
महोदेव श्रुति द्विज विकल मुनिपालन तपसाज ॥ सुनि-
पालन तपसाज जात दश कण्ठहि मारि । करि प्रमाण निज
कर्म अवधपुर तिलक सुधारै ॥ तिलक राज लीला करहि
महौ मोद सुख निर्वहन । उठहु राम आयसु करौ सुरपालन
खलगण दहन ॥ १२२ ॥

शुभ आनन सुनिके भरत मगन भये सुख वन्द । भई
अट्टाष्टि अश्रीश है अवण सुधा शुभ छन्द ॥ अवण सुधा शुभ
छन्द भरत आनन्द सिधाये । श्रीरघुवरपदकमल प्रेम धरि
श्रीश नवाये ॥ श्रीश नाथ विनती करी देहु पादुका शिर धरत ।
करत अटन तीरथ विपिन शुभ आनन सुनि सिख भरत ॥ १२३ ॥

मगन समाज समेत सो चित्रकूट बन देखि । सुखद राम
न नदन लखि जीवन सफल विशेषि ॥ जीवन सफल विशेषि
भरत गोराग गुनाये । निदाहेतु शुरु वचन कहे सबकहँ समु-
न्नाये ॥ गन गोराग भेंटे मिले चले सगाग सनेहसों । अव-
ति त्याग पर राम हरि भगन समाज सनेहसों ॥ १२४ ॥

राम भरतके प्रेमको को कविवरणात पार । नेम क्रिया
न नर्णन करी परग आचार ॥ कर्म परम आचार वरणि
परमानन हारि । मति जड़ वरणाहि काह मसक नभ अन्त
ति गारि ॥ मगन अन्त किमि पावई मगन उदै करि नेमको ।
दुर्गादिग मठ क्यों कहे राम भरतके प्रेमको ॥ १२५ ॥

अब अवधपर लोग सब भरत वसे पर त्यागि । नन्दि-
प्राप्त मनि अर्चन बल व्रत मुनि निशि दिन जागि ॥ निशि
दिन मुनि व्रत गावि पादुका नृप करि सैवै । गन-
काज जम गाग करत पूजन दिग देवे ॥ देव मनावत
अवधिदिन राग समागम होय कव । तुलसिदास मुनि
व्रत धरि वसे अवधपर लोग सब ॥ १२६ ॥

इति अयोध्याकाण्डं

समाप्तम् २ ॥

अथारण्यकारहप्रारम्भः ॥



फटिकशिला सुन्दर सुखद बैठे सिय रघुवीर । सुमन लषण आनहिं सुभग सुरभित सुमुख समीर ॥ सुरभित सुसुख समीर राम सिय भूषण साजे । अङ्ग अङ्ग प्रति रुचिर कामरति लखि छवि लाजे ॥ लखि लाजे रति काम तन इन्द्र-सुवन भरमें दुखद । परब्रह्म श्रीराम सिय फटिकशिला सुन्दर सुखद ॥ १ ॥

समुक्ति मनुज अवगुण कछो हत्यो चोंच तन काग । रुधिर देखि घर सुमनको कौन्ह क्रोध करि त्याग ॥ कौन्ह क्रोधकर त्याग लोक लोकन भूमि आयो । मति गति विह्वल विकल मोह माया भरमायो ॥ मोहअन्ध नारद लख्यो पाय सोख पायन पछो । लाहि चाहि रक्षा करो समुक्ति मनुज अवगुण कछो ॥ २ ॥

एक आखि करि प्रभु तज्यो कर्म कौन बड़ धोर । रुपा-निधान समानको प्रणतपाल वरजोर ॥ प्रणतपाल वर-जोर चरित सुर नर मुनि गावैं । चित्तकूट वसे सुखद जानि सब आश्रम आवैं ॥ आश्रम विदित विचारिके विपिनसाज सब तन सज्यो । अति जहाँ आश्रम गये चित्तकूटधल प्रभु तज्यो ॥ ३ ॥

कृषि अनन्द भेंटत भये देखि लषण सिय राम । आसन बैठारे मुदित पूजे अभिमतकाम ॥ पूजे अभिमतकाम जानकौ लेन लाई । अनसूया पट दीन नित्य नूनन सुख-

दार्ढ्य ॥ सुखदायन उपदेश हैं पनिवन धर्मनि सब दये । आदर
मन्त्रि नृनि रगे दक्षि ननन भेंट भये ॥ ४ ॥

॥ १ ॥ नृनिमो यथ भय मिथः लषण रघुराय । चले
निमित्त नृनिमो यथ भय मिथः लषण रघुराय ॥ मशामुदिन मन
नाना नाना मुनि भये गुणागे । निर्भय जन तप करहि योग
नननोप निनागे ॥ होम विनारि सँभारि हरि आशिष
आदरगो दगो । मङ्गलमय नानन भयो विदा अनिसो
प्रभु भयो ॥ ५ ॥

नवि निगद्य मग सुख भये देखि जाय सरभङ्ग । परि-
रण लषि नमः हृषि प्रेन प्रफुलित अङ्ग ॥ प्रेम प्रफुलित अङ्ग
नारि हर विनय नडाई । करि निहोर रचि चिता अग्नि
नटि दोन लगाई ॥ दोन अग्नि नन अर्पिके राम लषण सिय
उप गये । गयो धाम श्रीराम लखि बधि विराध मग सुख
भये ॥ ६ ॥

मिजे सुनौचण धायकै पुलकनयन जलधार । जेहि
विधि शिव योगीश मुनि ध्यावन हृदि आगार ॥ हृदि मन्दिर
ध्यावन मदा आये तेवन आजु हैं । देखों नयन सनेह भरि
नृनि सुख रघुगन हैं ॥ अन्तर्गामी धारि मन मूरति नेह
लगायकै । राम जगाये प्रेन परि मिजे सुनौचण धायकै ॥ ७ ॥

सङ्ग गयो मगमें चलो जात लखत प्रभु रूप । ऋषि
नमस्ति नमस्ति गये हृषि मङ्गल मुर भूप ॥ हृषि देखि सुर
नृनि नृनि भाग व गान्यो । आनन आदर पूजि वेद
नृनि नृनि प्रभु जातवा ॥ जान ठानि नख पानि प्रभु मधुर
वचन बोख्यो भलो । शुभ अस्थान बताइये सङ्ग गयो मगमें
चलो ॥ ८ ॥

शुभ गोडावरि सनिवर सुत्तर ष्ट सुत्रधाम । पञ्चवटी
दासन करिय अति पावन श्रीराम ॥ अति पावन श्रीराम
वर्षि सुनिगज वरार्थ । शुभ यद्य नरु मग देखि कुटी नङ्गल-
मय छार्थ ॥ मङ्गलमय कल्याणयल राम लषण सिय शुभ
चरित । कहत ज्ञान वैराग्य जनु शुभ गोडावरि वर सरित ॥ ६ ॥

ज्ञान भक्ति वैराग्य जनु कौ विधितिय सुत आप । महा-
देव गिरिजा गणप लोन्हे कर शर चाप ॥ लोन्हे कर शर
चाप मदन रति जनुपति तीनो । परमारथ अरु योग प्रीति
जनु नर तन कौनो : नरतन कौनो वौरस शान्त और
शङ्कार भनु । कम्ठ शेष सगधेनुकौ ज्ञान भक्ति वैराग्य जनु ॥ १० ॥

मन मोह्या सुख कलि वचन शृपेनखा लखि राम । मदन-
वाण दरमें लगो सुनहु कुँवर घनश्याम ॥ सुनहु कुँवर
घनश्याम मोहि दासो अब कौजै । हौं कुमारि छविधाम
भगिनि रावण गनि लौजै : रावण भगिनौ जानिकै रमौ
सङ्ग कङ्कै सदन । सुख सम्पति सिधि पाइ हौ मन मोह्यो
सुख कहि वचन ॥ ११ ॥

सत्य कहौ वाणी सुदृल गजगामिनौ विचारि । लषण
कुमारि विननिया मेरे लग यह नारि ॥ मेरे संग सुनि नारि
लषणकौ ओग सिधार्थ । लक्ष्मण कखो सक्रोध लाज तोहि
तनक न आई । तन मन लाज न तोहि कछु कति निलज
औरेहि नङ्गल । गई रामपहं क्रोध करि सत्य कहौ वाणी
सुदृल ॥ १२ ॥

हास्य नमुक्ति धावन भई रामवचन चित चाहि । धरे
रूप व्यंकट विकट समय निया मनमाहि ॥ समय सिधा
मनमाहि राम कहि लषण निहारे । लक्ष्मण लाधव ज्ञान
मालिका काटि निवारे । काटि निवारे अङ्ग शुभ अगुभ

अमङ्गल मुखमई । खरदूषण पहुँ गय विकल हास समुक्ति
धात भई १३ ॥

करि प्रबोध सेना सजौ खरदूषण मन क्रोध । राम
उभाये लज्जणको सिय गिरि राखिय शोध ॥ सिय गिरि
राखो गोवि दनुजसेना यह आइ । भानुयान छपि गये धूरि
नभमण्डल आइ ॥ छाये धूरि नभमें रही दुन्दुभि दीरघ अति
तजो । सोतहि राखी कन्दरा करि प्रबोध सेना सजौ ॥ १४ ॥

धरु धाग बोले वचन लखि छवि दूत पठाय । नारि
अप्र करि भिनटू कप कहे दून यह आय ॥ कहे दून यह आय
राम रोहि उत्तर दीन्हो । सुनि खरदूषण क्रोध सुभट लै
दर्पित कोन्हो ॥ दर्पित डारहि अल बद्ध धरि सञ्चल असि शक्ति
वन । मनहु मेघ वर्षत अचल धरहु धाय बोले वचन ॥ १५ ॥

राम माजि शारङ्ग शर चले विगिछ जनु ब्याल । कटे
विकट खल उर अरुण भुज महि गिरहि कपाल ॥ भुज महि
गिरहि कपाल विकल भाजहि लखि शायक । खलदल
सभय सगोक निरखि खरदूषण धायक ॥ धाय क्रोधि
शायक तने रहे पूरि दिशि गगन धर । सजि पावकशर जारि
तम राम साजि शारङ्ग शर ॥ १६ ॥

खलदल वृन्द निहारिके प्रभु मन कौन विचार । राम छप
कौनो कटक सब लरि मख्यो अपार ॥ सब लरि मख्यो अपार
एक एकन धरि मारै । कौटुक लखि सुर मगन रामको चरित
निहारै ॥ चरित निहारि पुकारि सुर वर्षि प्रसून सुधारिके ।
जय जय जय महिभारहर खलदल मरन निहारिके ॥ १७ ॥

खरदूषण त्रिशिरा परे शूर्पणखा लखि नैन । रोवत
रावणकी सभा कहि कहि आरत वैन ॥ कहि कहि आरत
वैन देशकी सुरति विसारी । शिर अरि डेरा करयो खबर

नहिं तोहिं सुरारो ॥ खबरि न तोहिं निहार मोहिं अङ्ग
सकल शोणित भरे । जुरे जाय भ्राता समर खरदूषण
त्रिशिरा परे ॥ १८ ॥

ताहि सङ्ग वरभामिनी रतिरआछवि छीन । रमा
भारती शिवतिथा लागहि सकल मलौन ॥ लागहिं सकल
मलौन कोटि शशिसम द्युति शोभा । खग मृग पशु जड़
जीव वाहि लखि विकल न को भा ॥ विकल नारि नर मुनि
मगन तजत योग जप यामिनी । दामिनि वरणात द्युति कहां
ताहि सङ्ग वरभामिनी ॥ १३ ॥

अवनि असुर खण्डित करै प्रबल शत्रु वरिवख्ड । देखत
बालक काल सम अति विशाल भुजदख्ड ॥ अति विशाल
भुजदख्ड मदन जनु वेष सँवारें । मुनि मन भये अनन्द
विपिन विचरत भय डारे ॥ भय डारे मुनि जय करहिं खल-
दल दलि सुर दुख हरैं । भूपकुमार अपार छवि अवनि असुर
खण्डित करैं ॥ १० ॥

करि प्रबोध रथ चढ़ि चलो रावण मन अनुमानि । जहँ
मारीचस्यान शुभ मन्त्र तन्त्र मन ठानि ॥ मन्त्र तन्त्र मन
ठानि गयो उठि आदर कौन्हो । मारीचहु मन लख्यो कलू
स्वारथ मन दौन्हो ॥ स्वारथ घाते विचारि जिमि अङ्गुश
धनु अहि छल छल्यो । नवै बिलारि विचारि छल करि प्रबोध
रथ चढ़ि चलो ॥ २१ ॥

तात हेतु स्वारथ करौ कथा समस्त सुनाय । हरहुँ वाम
नृप तनयकौ बैर सकल दुक्ति जाय ॥ बैर सकल दुक्ति जाय
होउ मृगकपट वनाई । भगिनी लखि दुख मोहिं करहु वन
मोरि सहाई ॥ मोरि सहाय विचारिकै निज कुल मङ्गल मन
धरौ । बात जात घातक भयो तात हेतु स्वारथ करो ॥ २२ ॥

सुन सुन गाहि न नर गनो में जानत बल ताहि । विन-
 ऋगर मोहि मारियो गथा समुद निरवाहि ॥ गथों समुद
 निरवाहि मारि ताइका सुवाढो । भञ्जो गिनको दण्ड जनक-
 न्त्य का ताइओ ॥ जनकममाज नृपाल बहु मान मर्दि भृगु-
 पनि हनो । ताहि विरोध न कुणइ है सुनु सुन ताहि न नर
 गनो ॥ २२ ॥

ज्ञान गिखारन मोहिकहैं मैं सुर नर बण कीन । उत्तर
 देहि न उठि नने डाडरात पुरतीन ॥ डरडरात पुरतीन
 गमाअ मन देखि विचारो । यहि मारे यल नरक राम कर
 सुपद भारो ॥ सुपद भारो पाय हों चल्यो नाथ शिर
 गम तई । रावण आदर चहि चल्यो ज्ञान सिखावत मोहि-
 कट ॥ २४ ॥

मायामय छाया करो सिय आयसु उर मानि । मृग देख्यो
 याचि हेममय खचित रतन मणिखानि ॥ खचित रतन मणि-
 यानि लखत जानको सुखारी । यहि इति सन्दर काल
 करिय प्रभु धनुशरधारो ॥ धनुशरधारो मन समुझि जानत
 आगमको घरी । चले लषण सिय सापिके मायामय छाया
 करी ॥ २५ ॥

मृग मार्यो दूरी निकरि राम कठिन शर तानि । हा
 लक्षण प्रथमै कही पौछे राम बखानि ॥ पौछे राम बखानि
 कउन जानको विचारो । कही लषणसों बात भाय तव
 सङ्कट भारो ॥ सङ्कटवग सुमिरत तुम्हें जाहु तुरत धनुवाण
 धरि । असुरसैन्य अरिदल गते मृग मार्यो दूरी नि-
 करि ॥ २६ ॥

राम न सङ्कट कहें परै काल जरै रणमाहि । सकल सुरा-
 म्म लरि मरै समर जीति है नाहि ॥ समर जीति है नाहि

शोच मनमांसा निवारौ । राम दीनता वचन वदन कवहुँ
न उचारौ ॥ कवहुँ न संशय आनिये सत्य वचन मेरे धरौ ।
छली वैष निशिचर विपिन राम कवहुँ सङ्कट परौ ॥ २० ॥

कड्यो वचन सहि नहिं गयो उठ्यो रेख धनु खँचि । यती-
वैष दशङ्कठ शठ आयो सियदिग यँचि ॥ आयो सिय-
दिग यँचि जानकौ ताहि बुलायो । देन लागि फल मूल दुष्ट
तव वचन सुनायो ॥ वचन सुनाय सुखद कहि वैधौ भीख
नहिं कहैं लयो । भावीवश सिय रेख तजि वचन कड्यो
नहिं सहि गयो ॥ २८ ॥

रेख त्यागि सिय जब गई रघुपर लई चढ़ाय । गल्यो
गगन भयते मगन इत उत देखत जाय ॥ इत उत देखत
जाय सिया रावण जब जान्यो । कहत पुकारि रुपाल नाथ कहुँ
दूरि परान्यो ॥ दूरि परान्यो लषण कहैं मोहिं दशानन
हरि लई । परौ विवश दशकण्ठके रेख त्यागि जब सिय
गई ॥ २६ ॥

राम राम कहि खग चल्यो गुघ्र जटायू देखि । रोच्यो
रथ रघुवरतिथि दशशिर हरौ विशोख ॥ दशशिर हरी
विशेषि मारि रथ भूतल ढाख्यो । सौतहि लई कुड़ाय विकल
दशशिर महि पाख्या ॥ दशशिर पार्यो भूमितल छत
चूर उर यल हल्यो । मुकुट अस्त्र शस्त्रहि दपट राम राम सुनि
खग चल्यो ॥ ३० ॥

अति रिस रावण रण रच्यो तीक्ष्ण काढ़ि रुपान । दल्यो
पक्षमहि खग गिर्यो कहि मुख रुपानिधान ॥ कहि मुख
रुपानिधान साजि खन्दन सिय लौन्हौ । लै नभपथ फारि
चल्यो गौध विह्वल गति कौन्हौ ॥ विह्वल गति कपि सिय

नने नूपुर ठे कपि कर सन्धो । तरु अशोकतर राखिक अति
मिग गवण फिरि रन्धो ॥ ३१ ॥

लरण बात नौकौ नहौं बन सिय आये त्यागि । असगुन
मम मन हान अति सिय बिन उर विरहागि ॥ सिय बिन उर
तिग्यागि लज्जा पद गहि समुझाये । शोचत आश्रम देखि
नारन उमडे जग छाये ॥ उमडे जल छाये बिकल खोजत गिरि
नन मर मड़ो । रुधिर धनुष आगे परयो लषण बात नौकौ
न ॥ ३२ ॥

राम राम रसना रटे लग्यो गौधपति जाय । कहौ कथा
मिय दंतु गति रामनयन जल छाय ॥ रामनयन जल छाय
गाढ़ धरि नचन उचारै । परमारथ तुम तात प्राणधन टण
कारि हारै ॥ टण समान प्राणनि दयो कोपरहित रण-
महं कटे । जियो भोग भोगो जगत राम राम रसना
रटे ॥ ३३ ॥

दर्शलागि जीवन रहेउ भाग उदय रघुराय । जेहि
विगजि गिव संवहौ लियो गोदमाहि आय ॥ लियो गोद
मांझि आय राम कडि प्राण गंवाये । भया तुरत हरिरूप
चारि भुज अस्त्र सुहाय ॥ अस्त्र सवे शिर मुकुट वर पोताम्बर
भृषण गहउ । जोरि पाणि अस्तुति करत दर्शलागि जीवन
रहेउ ॥ ३४ ॥

परमधाम गो गौधपति क्रिया कीन्ह श्रीराम । चले
विरहअङ्गुर भये विपिन श्रावरीधाम ॥ विपिन श्रावरीधाम
अर्घ आसन सब साजे । धूप दीप फल सुजल धरे रघुपति-
के काजे ॥ सब सप्रेम पायन परी दर्श पाय पावे न गति ।
राम तुन्हारै रूप लखि परमधाम गो गौधपति ॥ ३५ ॥

काठ साजि रचिकै चिता सिय सुधि कहौ बहोरि ।

श्वरौ जरि सुरगति गई क्रिया करौ प्रभु कोरि ॥ क्रिया
करौ प्रभु कोरि चले वन दूनौ भाई । सुनिगण मिलत अनेक
दर्श अभिमतफल पाई ॥ पावहि अभिमत जीव जड़
करहि योग जेहि प्रभु निता । साजि साजि सुरगति लही
काठ श्वरौ रचि चिता ॥ ३६ ॥

रामसिया खोजत गये पम्पा सुभग तड़ाग । सुन्दर
जल तरु विहंग सृग सुनिगण सदन सुवाग । सुनिगण सदन
सुवाग करत जप तप मन लाई । देखि सरोवर मुदित कौन
मज्जन रघुराई ॥ रघुराई मज्जन कर्यो नारद मुनि आवत
भये । बुलसिदास सुर सुभग सर रामसिया खोजत
गये ॥ ३७ ॥

इति अरण्यकाण्ड समाप्तः ॥

अथ किष्किन्धाकाण्ड प्रारम्भ ।

चले विपिन लक्ष्मण सहित मिले पवनसुत आय । विप्र
रूप पूछत भयो को तुम कहौ बुझाय ॥ को तुम कहौ बुझाय
विपिन सुकुमार सलोने । नृप दशरथके सुवन तासु आयसु
तजि भौने ॥ तजेउ भवन आये विपिन नारि गई शोध न
लहत । खोजत हम द्विज कवन तुम चले विपिन लक्ष्मण
सहिन ॥ १ ॥

ते हसीत मिलाइयो प्रभु गुण मन अनुमानि । कहो कथा
नन पन्नार नूपर दये बखानि ॥ नूपर दये बखानि राम
तोन्न परि पाये । निरह निरह ग्रु देखि कौश बहु विवि
समुझाये ॥ समुझाये सुप्रोव अति राम लभ्य सुख
गन्गो । प्रभु भेटे इबुमस्त उर ते सुप्रोव मिलाइयो ॥ २ ॥

पधु तोले कारण कवन बसत विपिन कपिराज । कथा
नी गत तापिकी कोपि कहा खुराज ॥ कोपि कहा
रामगज तालि एतहि घर पारै । सगति कधि तिय सहित
गोत कधि तिलक सँवारै ॥ तिलक सँवारै कालहि नहि
निष्कन्ता छपता भवन । तौ न धनुष घर कर धरै मित
करिय कारण कवन ॥ २ ॥

तन सुप्रोव दिखाइयो बानि महा बल वीर । गर्जि नगर
नाम्नो ताहि चल्थो क्रोधि रणधीर ॥ चल्थो क्रोधि रणधीर
नहि पुनि नृते भारी । प्रणागत प्रण सलुकि वाण मोख्यो
खुराई ॥ मां दा बाण अमाय करि निरो अवनि सुरका-
इय ॥ तालप तोचन पुतनि तब सुप्रोव दिखाइयो ॥ ४ ॥

प्रदान रामछवि उर धरौ वाणी कह्य कठोर । नर गति
हरि गति तनि दर्प सग प्रकाश सब ठौर ॥ सग प्रकाश सब
ठौर जगत अप्रिय कलु नाहौ । जो अप्रिय तब होय सकल
दक सन्न विलाहौ ॥ सन्न रङ्ग नहि चाहिये विधि पिपील
रचना करी । जयति हरे श्रीराम कहि प्रिय रामछवि उर
धरौ ॥ ५ ॥

प्राप गये श्रीराम कहि नारि विकल परलोग । सुप्रोवहि
जायसु दयो करहु मृतककर योग ॥ करहु मृतककर योग
नम्रण मवको समुझाये । राज हेतु सुप्रोव अनुज सँग
नगर पठाये ॥ नगर बुलाये द्विज सकल अङ्गदादिकपि बोध

लहि । बालिशोच दूषण हरी प्राण गये श्रीराम कहि ॥ ६ ॥

रामनाम कहि नृप करौ तितक सारि शिरताज । राम
छपानिधि जगतमें विरद गरीबनिवाज ॥ विरद गरीब-
निवाज कियो सुधीव सुखारौ । गिरिवन विरल विहाल
वाचि डर कम्पित भारी ॥ कम्पित डर निरभय नहीं जात
दुसह ज्वर डर जर्यो । धाम वाम नृप ग्रामको रामनाम
कहि नृप कर्यो ॥ ७ ॥

राजनैति कहि प्रभु रहे शैलप्रवर्षण आय । अनुज
सहित सुन्दर सदन राखे देव वनाय ॥ राखे देव वनाय निरखि
वर्षाअतु आई । घनघमण्ड नभ घोरं मनहु रविपर निशि
धार्ई ॥ निशि धार्ई रवि भजि गये नीरवुन्द वाणन गहे ।
तड़ित छपाण सुवृन्धतु राजनैति कहि प्रभु रहे ॥ ८ ॥

करि मनोज डेरा जगत सजि आयो करि सैन । असित
पीत सित घन अरुण तनि वितान सुखचैन ॥ तनि वितान
सुख चैन तड़ित ध्वज सुन्दर राजै । निशि दिन घन वह
रात मनहु वग दुन्दुभि बाजै ॥ दुन्दुभि बाजै मोर पिक वक
ढाढ़र वन्दौ लगत । विरहवन्त कारण सज्यो करि मनोज
डेरा जगत ॥ ९ ॥

सुरपतिकै गिरिगण असे वुन्दवाण करिलाय । कहूँ कहूँ
मारत वज्रगर घनगज शीश चढ़ाय ॥ घनगज शीश चढ़ाय
मोर हर बल पुर आये । बाजें नौवति जीति कोकिला सुयश
सुनाये ॥ सुयश जनाव वितान तनि वेलि विटप गृह गिरि
वसे । सुद्रित करि पाषाण जड़ सुरपतिकै गिरिगण
असे ॥ १० ॥

कै समुद्र महिपर चढ़्यो महि सुद्रित करि दीन । सर
सरिता जलदल परे शरपञ्जर महि कौन ॥ शरपञ्जर महि

कीन नदित बढ़वागिनि माना । वर्षत नभ चढिवारि त्रसित
गिरि दिग्गज जाना ॥ दिग्गज कम्पहि वन सदल नाद
बाद दशदिशि बढ़यो । कम्पमान महि गहि धरी कै समुद्र
महिपर चढ़यो ॥ ११ ॥

शरदभूप आगो मिलन धनल रूप नृति साजि । कमल
धौक मन्त्रन चनुर दून उठे जग बाजि ॥ दूत उठे जग बाजि
चन्द्र जनु कृत सुहायो । मरि सर निर्मल बारि पाँवड़े पावस
नायो ॥ पावस दीन्हो तिलक जग शरदराज राजत चलन ।
पावस गयो प्रणाम करि शरदभूप आगो मिलन ॥ १२ ॥

शोभ शोध अब लीजिये जाहू जहाँ कपिराज । खबरि
धिमारो सुख सुपर पाय नारि धन राज ॥ पाय नारि धन
राज बालि थल वुष्टै पठाऊं । कर धरि कीनो सखा ज्ञान दै
मन समुझाऊं ॥ मन समुझाय समेत कपि आप गमन
पर कीजिये । वानर भाल पठाय करि सियाशोध अब
लीजिये ॥ १३ ॥

लक्ष्मण चले लिवायकै प्रीति प्रबोध रिसाय । वानर
भाल बुलायकै गये जहां रघुराय ॥ गये जहां रघुराय मिले
पायन कपि नाये । रघुपति हँसि मुदु प्रकृति पुलकि गहि
कण्ठ लगाये ॥ कण्ठ लगाय बुझाय कपि विनय करौ चित
लायकै । वानर भाल विशाल भट लक्ष्मण चले लिवायकै ॥ १४ ॥

कपि लक्ष्मण सबसों कहेउ सिय सुधि खोजहु जाय । पाय
दिनस विन सुधि लिये हमहि मिल्यो जनि आय ॥ हमहि मिल्यो जनि आय बहुरि अद्भुतहि बुलाये । दुम मारुत-
सन नाद जाहू दक्षिण शिरनाये ॥ दक्षिण सिय शोधहु
सुभट भालु नील नल सुख लयो । मुंदरौ दै हनुमन्तको
दूत कपि लक्ष्मण सब कयो ॥ १५ ॥

चले सुभट व्यङ्कट विकट खोजत गिरि सर खोह । राम-
काज लवलौन मन विसर्यो तनकर छोह ॥ विसर्यो तनकर
छोह सघन वन जाय भुलाने । तृषावन्त भे विकल बिना
जल सब अकुलाने ॥ अकुलाने हनुमन्त लिखि चल्थो ववर
पैठ्यो सुभट । कथा सुनाई अशि प्रभा चले सुभट व्यङ्कट
विकट ॥ १६ ॥

जल फल खाय प्रणाम करि तेहि पठये जलतीर । सोस
प्रेम पहुंची तहां लल्लण श्री रघुवीर ॥ श्रीरघुकुलमणि वीर
पठै वदरौवन दौन्हो । कपि सब सागरतीर सीय हित चिन्ता
कौन्हो ॥ चिन्ता कौन्हो कपिन सब सम्पाती लिखि कहत
हरि । धन्य जटायू सुभटको जल फल खाय प्रणामकरि ॥ १७

सुनि सब कथा प्रणाम करि गये सुदित सम्पाति । भये
पक्ष जल दीन शुचि कहौ पक्ष गति भांति ॥ कहौ पक्ष गति
भांति धरहु धीरज सब भार्द ॥ पैहो सौतहि तवहि पार
सागर जो जाई ॥ सागर अत योजन उलधि प्रबल वीर जाइ
हि जो परि । सो सिय पावहि सत्य सुनि कपि सब कथा
प्रणाम करि ॥ १८ ॥

गयो कहत यह गौधपति कपि सब करत विचार ।
बहु रत संशय जिय कहैं अद्भुत जातो पार ॥ अद्भुत जातो
पार कहत ऋक्षेश बुढ़ाई । नल औ नील सकोच जानकी
कौन दिखाई ॥ कौन दिखाई जानकी पुनि प्रचारि कह ऋक्ष-
पति । कहा समुद्र हनुमन्त तोहि गयो कहत यह गौध
पति ॥ १९ ॥

इति श्रीकिष्किन्धाकाण्ड समाप्तः ।

७१ । भागु दून गहि जग मृज्या विधि हरि हर दिग्पाल
७२ ॥ १ ॥

अनि रिस पावक बार्गिके नैन बस्त्र घन बोरि । चढ्यो
अर्धांगनकक्षा विधिगर करन नोरि ॥ विधिगर करते तोरि
सम्पन्न पर दान्दो आगो । जग महँ सब पुर वारि विभीषण
अन न लागो ॥ भवन भस्त्र भृषण भये ममुद सुदर्प निवा-
रि ॥ मिय सणि लै कूदन भयो अति रिस पावक
बार्गिके ॥ १० ॥

करि प्रबोध मायो मरुत मधुवनके फन खाय । हर्षि
रहे प्रभुपदकमल उर भेटे खराय ॥ उर भेटे खराय दौन्ह
सणि प्रभु हँवि लौन्ही । मियदुर्दशा निहारि पवनसुत
प्रकटिन कोन्ही ॥ प्रकटिन कोन्ही सियदशा सुनत हाल
अपनि विकल । विजय करिय सिय आनिके करि प्रबोध
मायो मरुत - ११ ॥

रामवचन कपिल चलो दिग्गज अहि सकुचन्त । भालु
बनौ मर्कट सुभट यूय यूय बलवन्त ॥ यूय यूय बलवन्त अन्त
को पावडि लेखा । राम बटकको विभव रूप जानहि जिन
देखा ॥ जिन देखा ते जानहो नभ अहि पुर भूतल हल्यो ।
ममुद तोर डेरा परे रामवचन सुनि दल चलो ॥ १२ ॥

वचन सुनत रावण कड्यो मन्त्रो मित्त बुलाय । मन्त्र कहो
पृलन मवहि कड्यो विभीषण आय ॥ कड्यो विभीषण आय
मन्त्र मखि मानिय मेगे । सौतहि सौंपहु जाय मिलहु रघुनाथ
मवेग ॥ सुनि गुनि उठि लातन हल्यो मिलहि शत्रुको उर
दयो । चलो हृदय अनुमान करि वचन सुनत रावण
कड्यो ॥ १३ ॥

मन गलानि हरिहै कवन चलो ताकि प्रभु पांय । दीन

बूढ़ि जायँ खुर कुम्भजौ शेष डारि सहिभार । वारि खाय
बड़वाचनल शम्भुचन्द्र गिर डार ॥ शम्भुचन्द्र गिर डारि चारि-
सुम्भ सृष्टि नशायै । गिरि सर सागर डारि धरणि तजि धीरज
पावौ धौरज दरखौ उर तजै जलहि मिलै गिति द्वे रजौ । राम-
वाण खल ना दक्षै बूढ़ि जायँ खुर कुम्भजौ ॥ ५ ॥

सावु देहु आयसु मुदित लखौं बाटिका जाय । सुन्दर
फल लागे दिटप भोजन करौं अघाय ॥ भोजन करौं अघाय
जानकौ उत्तर दौन्हो । सुत रखवारे प्रबल पवन परवेश न
कौन्हो ॥ पवन सूर परवेश नहिं लखि न सकहिं रवि शशि
उदित । कह कपि यह भय तनक नहिं नावु देहु आयसु
मुदित ॥ ६ ॥

करि प्रणाम बूघो सुभट लग्यो फूल फल खाय । मूल
चलावै सनुदमहं रत्नक पहुँचे जाय ॥ रत्नक पहुँचे जाय
सर्द्धिमहि गर्द मिनाये । पुरी परगो अतिशोर अक्ष रावण
पठवाये ॥ अक्ष वृक्ष लै कपि हत्यो सेघनाढ आयो विकट ।
भिरै प्रबल रघुपति सुमिरि करि प्रणाम बूघो सुभट ॥ ७ ॥

ब्रह्मवाण दपि नाधिकै धरि लै गयो बहोहि । रावण
आगे करि दियो कहि कटु वचन करोरि ॥ कहि कटु वचन
करोरि कहौ रावण तव दानी । को मर्कट व्रत कहाँ काहि
बल फलकर हानी ॥ फल दल मूल विध्वंसि करि रण
कौन्हो अदराधिके । कहि कपि तव सुत छल करगो ब्रह्मवाण
कर साधिकै ॥ ८ ॥

विधि हरि हर दिग्पाल सब व्यात यक्ष गन्धर्व । पितृ
प्रेत पशु मनुज जग सचराचर सुर सर्व ॥ सचराचर सुर सर्व
गगन धरखौ गिरि घेरे । सैं तैं पुर परिवार धाम धन तिय
सुत तेरे ॥ निय सुत तेरे लोक सब भये रहे पुनि होहि

अथ सुकुम्भारण्य पारम्पर्यम् ।



बैद्ये सेतु नारग भयो चलो विपुल कपिलयन । गर्जहि
मर्कट भातु सत्र नाये राजिवनयन ॥ नाये राजिवनयन
न दोहारे वर सजुग्रायो । सुभा न रात्र नै नास केहि
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ १ ॥

नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ २ ॥

नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ ३ ॥

नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥
नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ नति न नायो ॥ ४ ॥

बन्धु दाया हृदय लौन्हे दुरत बुलाय ॥ लौन्हे दुरत बुलाय
तिलक एनि निज घर लारो । रावण पुर सब दिशो मिल्यो
जब शीघ्र उतारो ॥ शीघ्र उतारे शिव दयो तब पाये लङ्का
भवन । लो पुर धन पापन परत जन गतानि हरि हे
कवन ॥ १४ ॥

सखा निकट बैठारिकै पूछी सागर पाय । केहि विधि
उतरै कपिकुटज तेहि विधि करिय उपाय ॥ तेहि विधि
करिय उपाय जल करि व्रत तट कोन्हो । कुत्र न ब्रवहि
विशेषि तबहि प्रभु प्रभु घर लौन्हो ॥ धनु घर उर भारो
बिबल मिल्यो रत्न तै पायकै । पत्य देहि कपिकुटजहँ
सखा निकट बैठावकै ॥ १५ ॥

नाथ सुगम मारग रच्यो जल सहि पावक पौन । विष्टप
शैलसर जड़ रचे इनको सिखवत कौन ॥ इनको सिखवत
कौन करहु प्रभु पुन उतार्इ । गिरिगण बांधहि सैतु नील
नल दूनहुँ आई ॥ दूनहुँ आई बांधि हैं शैल सकल मर्कट
सच्यो । आपु प्रनाप सहाय मम नाथ सुगम मारग
रच्यो ॥ १६ ॥

सुनि साँचे सागर वचन कपियति कौश बुलाय । धावहु
गिरि तरु आनिके नलहि देहु सुख पाय ॥ नलहि देहु सुख
पाय धरहि गिरि सागरमाहीं । सुनि आयसु कपिवृन्द चले
चहुँ दिशि भ्रम नाहौं ॥ भ्रम नहि शिर वझुल करहि कोटि
कोटि गिरि धरि रचन । देहि आनि नल नीलरुहँ सुनि
साँचे सागर वचन ॥ १७ ॥

इति सुन्दरकाण्ड समाप्तः ॥

दार्द्र्ये ॥ दुःखदार्द्र्ये मारि सकल रावण मन शोचत चले । जय
जय रघुवंशमणि मारि दुष्ट रण दलमले ॥ ८ ॥

रण रावण आतुर चल्थो अतुरसेनदल साथ । करत
युद्ध देवन डरत धरत शरासन हाथ ॥ धरत शरासन हाथ
चलत महि दिग्गज डोलैं । जुभित उद्गधि जल शृङ्ग शैत
रासि सहिधर बोतै ॥ सहिधर बोतै चति सभय रवि सुद्रित
सन मल हथ्यो । भुज जचण्ड रण मण्डियो रावण रण आतुर
पतयो ॥ १० ॥

हारि गये दल दल कसुर चलो दालिसुन दीर । सुहृद
धरि प्रभु पाँयतर मिले हर्षि रघुवीर ॥ मिले हर्षि रघुवीर
वाधिसुन कारण भाख्यो । गढ़ घेरो करि मल जहां
लावक तेहि राख्यो । राखि वीर पुर भयो दयो लड़
जति प्रदत्त सुर । भयो युद्ध कुञ्जित अनर हारि गये दल दल
सुहृद ॥ ५ ॥

देवनाद जोधा सुहृद लक्षण हन्यो विचारि । भई मूरछा
प्रभु लखे हनुमत् लीन प्रचारि ॥ हनुमत् तीन प्रचारि
जैनजी लेन पठायो । दुष्ट हन्यो कपि वोच शैल पिर राखि
तिगयो ॥ शैल घीघ ठेकन भरत तानि गारि घायन
विन्द । राज कहत नैंदत बखो लखण घाय पीड़ा
सुन्द ॥ ६ ॥

जति जगैह जेउने भन बखो कीम चहुवाण । विज-
त होनि सायन न पठवैं तोहि बगण ॥ पठवहुं तोहि
मगर लखि ली कलम दपीला । तब प्रयापते नाउ जाउं
जहँ प्रभु जगद्वेष ॥ प्रभु जनकौन विचारिके दोउ पग धरि
पावन परत । धन्य धन्य हनुमत् जग घात सनेह भेटयो
मरत ॥ ७ ॥

लखण उठि ठाढ़े जगे जीहो बैच उपाय । सुनि राखण
लखण भयो उपाय जाय । जाना जाय जगव कहै
बगण लख जेव । निहै बगण जाय महुन बस प्रभु मणि
तेन । कपि पुर महुन बसुहैं जति मि । लखी वि । यदो ।
यह कहि रख ॥ उत गयो लखण उठे ठाढ़े जगे ॥ ८ ॥

साहि दुष्ट रघु दहिमले सुर कुञ्जुगी बजाय । लक्षणको
घायतु दिमो तान लङ्कार जाय ॥ तान लङ्कार जाहि हत
राज सुत जाई । घायतु शिर धनि मजस हूँ देव । दुज-

पुनः परा हनुना तद्गो आय सस्यन निय शनः
 - तेन तद्गो तुमल जीति अक्षर संग्रामः जीति नक्षर
 - तान् देन पत्र स्वयन वसाये । राज विभीषण दीन तुमल
 - तान् देन पाये ॥ नारद गारद गण्ड पुत्र पुत्र जीति यावत्
 - तान् देन पाये ॥ नारद गारद गण्ड पुत्र पुत्र जीति यावत् ॥ २६ ॥

[illegible]

पाये यत् सन्नेत्र ले कला देखूँ तंदि मत । यदि महर
 मयोंत नहि कपे मनुष्य सभ बात ॥ कला मनुष्य जगद
 माँहि न भूला निजगी । मर्यादा नहि स भोग दया
 मानव नृपदेव ॥ आवत देखि ई । मर्यादा नहि स
 मर्यादा । निदा बहुरि अपि कला मय पावे जो लखे
 मर्यादा ॥ २० ॥

[illegible]

एतन्मत्तं प्रमुक्तं तैर्देवैश्च न गन्तव्यं । नगरं चारि
न नृपतिं चैव उत्तरे कृपानिधानम् ॥ उत्तरे कृपानिधानं नित्यं
न प्रदत्तं मोक्षार्थं । आशिष्य देव तन्नेह क्षम्यते पूज्ये दुर्जि-

पूजा शङ्करकौ करी सेतु सिया दरशाय । पञ्चवटी कुम्भ-
जहि मिलि अति आदि कपिराय ॥ अति आदि कपिराय
मिले अनसूयहि जाई । आशिष आयसु पाय चले आगे
रघुराई ॥ रघुराई आये तहाँ चितकूट मङ्गल धरौ । पै-
अन्हाय सुनिगण मिले पूजा शङ्करकौ करौ ॥ १४ ॥

आयसु पायो सुनि दयो चले हर्षि श्रीराम । यमुनहि
पूजि सप्रेममय प्रसुदित कौन्ह प्रणाम ॥ कौन्ह प्रयाग प्रणाम
मिले सुनिगण प्रसु जाई । करि मज्जन स्थि सहित विप्र
सात्वता बड़ाई ॥ मान बड़ाई पूजिकै पुनि विमान साबुर
गयो मिले निपादहि गङ्गातट आयसु पायो सुनि दयो ॥ १५ ॥

कपि हनुमन्त पठाइयो भरत कुशलता देखि । आवत स्थि
लक्ष्मण सहित यह तुन कहौ विशेषि यह तुम कहौ विशेषि
प्रातउठि भरत निहारौ । पुरवासि न पुनि मिलौ मातुको शोच
निदागै ॥ शोच निवारौ अवधको सब प्रकार समुदाइयो ।
भरत प्रबोधन हेत प्रसु कपि हनुमन्त पठाइयो ॥ १६ ॥

पुनि निगढ़ डर ताइयो रघुपति करुणापुच्छ । लै आयो
मन्दिर परत सुजल धोय पदकच्छ ॥ सुजल धोय पदकच्छ
रजिह आसन बैठायो । धूप दीप नैवेद्य फूल फल चक्रुर
धरयो ॥ चक्रुर आदि भेन सुन ताप बहुत सुझ पाइयो ।
प्रात तनाव निमान चढ़ि पुनि निगढ़ डर ताइयो ॥ १७ ॥

भरत देखि हनुमन्त जन हय धरैरहु डूब लौन । जटा
शोक जुनिवन वन गेय पावरी लौन ॥ भेन पावरी लौन
राम स्थि बहिन उवायो । सुन मासन मासौन वजन शृण्व
तजि लारी ॥ सुनय गति गति जान प्रसु चदवि चान्त दिन
आहि न । गह कोहि बिक बिक कहन भरत देखि हनुमन्त
जन ॥ १८ ॥

साई ॥ तुनिसाई प्रभु भेंटिके भरत हृदय भगवन्त लै । अति
सनेह दूरे जनन भरत सज्ज हनुमन्त लै ॥ २३ ॥

मिले सकल पुर जन मुदित राम चरित यह कीन । सब
जानत प्रपन्नहि मिले हमकहं राम प्रवीन ॥ हमकहँ राम
प्रवीन जेइ सज्जन नर नारी । यथा योग्य मिलि सबहि
बहुरि भेंटौ महतारौ ॥ भेंटौ महतारौ सबै प्रथम कैकयी
पुनै हित । निरहदिया नाथी सकल मिले सकल पुरजन
मुदित ॥ २४ ॥

इति लङ्काकाण्डसमाप्तः ॥

अथ उत्तरकाण्ड प्रारम्भ ।

राम कक्ष आये कुशल घर घर यज्ञत साज । पुरी भई
समाप्ता । रामराज्यके काज ॥ रामराज्यके काज भरत
सब साज सजाई । पुर गन्धर्व मुनीश सकल आये सुरसाई ॥
सुरसाई मङ्गल सजे वजे अवध दन्तुभि विमल । वर्षि सुमेन
जय जय कहत राम अवध आये कुशल ॥ १ ॥

एत तिहासन शुचिदन्त्यो रघुपति बैठे आप । भूपति नखि-
तर जनमगत कोटिन आनुप्रताप ॥ कोटिन आनुप्रताप
देवधनि दिप्र उचारै । लक्ष्मण धनुबाण देख भरतादिक
धारै ॥ भरतादिक सुखनय यगन तिय आई भूपति दन्त्यो ।
राजसिगा शोभित भये शम तिहासन शुचि दन्त्यो ॥ २ ॥

मद नामकै । हम निशिदिन विषयाविवश सुरपति कहत
प्रणामकै ॥ ७ ॥

रविञ्जलि जोरे कहत राम सुनहु मम वैन । रुपा
करिय निज चरण रति निशि दिन राजिवनैन ॥ दौजिय
राजिवनयन तोष बड़ हृदय हमारे । जबते मम झल जन्म
रावरे नरतन धारे ॥ नरतन धरि यश विस्तरयो चिरञ्जीव
जोरी रहत । जय जय रविञ्जलरविविमल रविञ्जलि जोरे
कहत ॥ ८ ॥

अनिल अनल धर विनय करि खलखण्डन तुम राम ।
राज राज लयएर विघड़ राजहि जग अभिराम ॥ राजहि
जग अभिराम लख सज्जन सुखकारी । नरतन धनु धरि हाथ
हरयो धरयो प्रघभारी ॥ धरयो नखन खण्डि खल राज
विराजत सुवन धरि । जय जय श्रीसीतारामन अनिल अनल
धर विनय करि ॥ ९ ॥

निगम विप्रतन करि कहत राम सुनहु सुरईश । कोटि
कोटि यत्न करत नहि पावत योगीश ॥ नहि पावत यो-
गीश हृदय शङ्कर पचिहारे । विधि सनकादिक नेम धर्म
करि तुम्हें निहारे ॥ तुम्हें निहारत सुख लहैं ते कपि भालुहि
कर गहैं । जयति राम लौला अगम निगम विप्रतन करि
कहैं ॥ १० ॥

भारद्व नारद जोरि कर विनय करत दित ताय । अद्भुत
चन्ति दुन्दार प्रभु सुनिये औरघुराय ॥ सुनिये औरघुराय
पिता ढरद सम नाहौ । तख सम तन तजि दौन सुयश
जाको जगनाहौ ॥ सुयश कियो जेहि जन्म भरि गयो विरह
त असरघर । गौधक्रिया निजकर कहैं भारद्व नारद जोरि
कर ॥ ११ ॥

जड़ें तों गुण मुनिमें कहीं कपि समाजके काज । भरत
 नालने पिन सदा कपिनायक शिरताज ॥ कपि नायक
 तित्तन निने उठि सनहि बहोरी । विदा किये सन्मानि
 नालन प्रीति न योगे ॥ प्रीति न योरी प्रभु करी सब प्रणाम
 नालन लगे । बार बार यश प्रभु कहैं कहँ लौं गुण मुनिमें
 नालन ॥ ११ ॥

गम गम गजन भयो गयो सकल दुख भागि । रोग
 नालन यमगति यमन काज कर्म गुण त्यागि ॥ काज कर्म गुण
 नालन भई गायकको कण्ठो । बारि दमन गति बारि भई
 नालन गायकको ॥ सुभी गुर धरणो भई कपट दश पाखंड
 नालन । धर्म नालन विचार नर राम राग राजत भयो ॥ १२ ॥

काग द्रोघ अत्र गेम मय मान मोह मद गर्व । दोष दुःख
 नालन पाग मय दारिद्र्यदाह न सर्व ॥ दारिद्र्यदाहन सर्व वैर पर-
 नालन नालन । अहं भाव रात्र कूटि गर्व मति परअपकारी ॥
 पदमय नालन गुण भोग याग मति प्रकट अत्र । गये
 नालन काज काग द्रोघ अत्र रोग सब ॥ १३ ॥

नेत्र द्वेन प्रकटे जगन दया जसा सन्तोष । योग यज्ञ जप
 नालन नालन वेद नालन पोष ॥ वेद सुमङ्गल पोष रहौ परमा-
 नालन । नालन नालन दुःख दुःख दुःख दुःख दुःख दूरी ॥
 नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन । कमल कोक
 नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन ॥ १४ ॥

एत राग राग गायनो यह कलिकर्म न शौर । ताते
 नालन नालन मन्त्र यह शिरमौर ॥ मन्त्र यह शिरमौर
 नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन । साधन उत्तम जानि सुमति निज
 नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन । मन्त्र यह शिरमौर
 नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन नालन ॥ १५ ॥

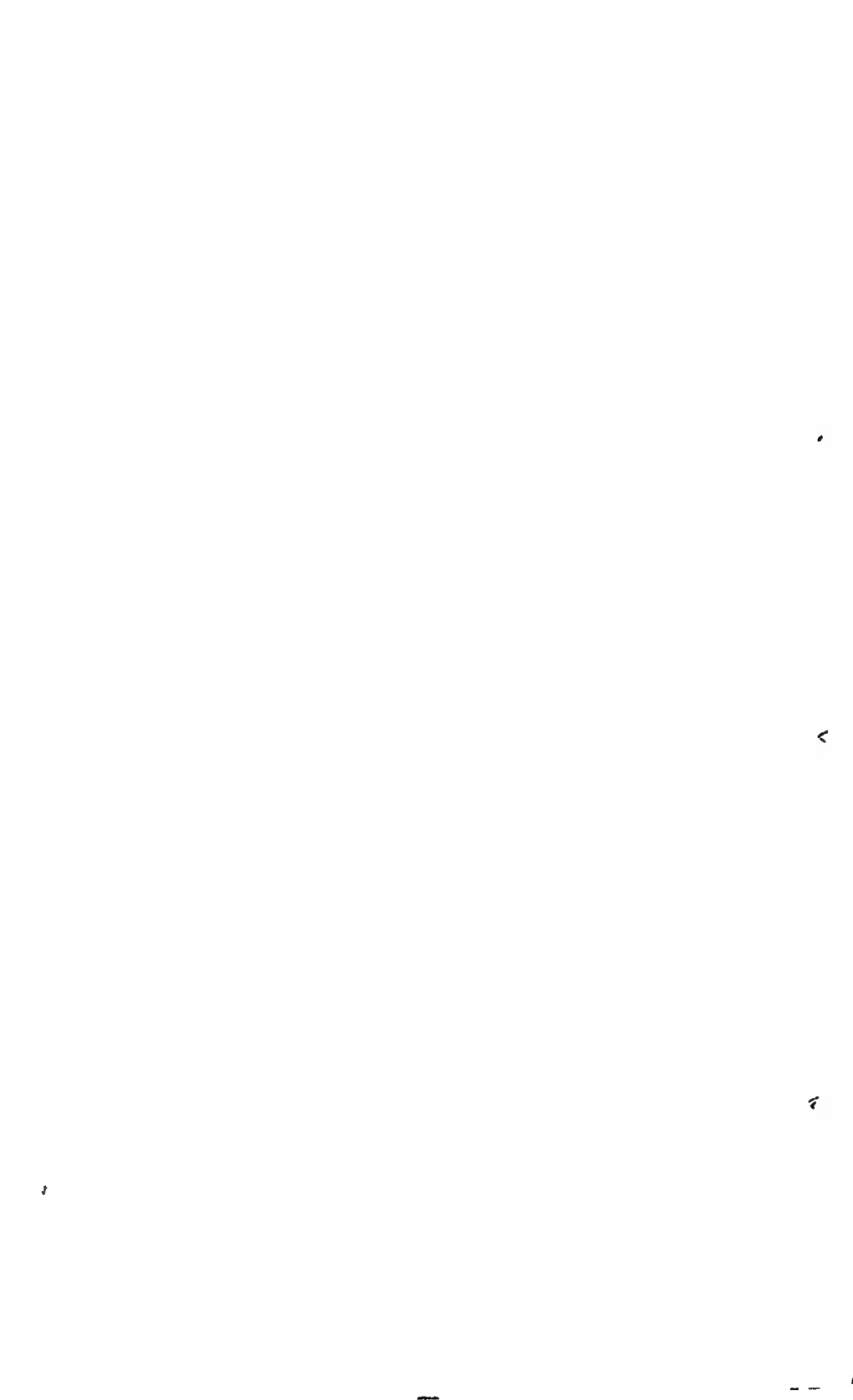
न निजम् । लज्जितान् लोकांस्तत्रैव कथयामास ततः दत्तम् ॥ १३ ॥

हे वृद्ध तु न मरिच्यो जिन गङ्गापर जाय । मान जान मरिच्यो दियो मरिच्यो धरि पाय ॥ रोयि लभा धरि पाय वैद्य धरि गङ्गा रनौ । महि कटोरि पुनि हत्यो वीर्य दूर दूर दूर ॥ चरण धरे कन्यत असुर तैन सगर मरिच्यो दारमरी । रगविनयौ शुभ सुयमदा ये वृद्ध तु नि मरिच्यो ॥ १४ ॥

हे हनुमन्त विचारि तुनि प्रथम निताये जोहि । कपिमहि एनि दत्त जोरिसे ते वदिक कर जोहि ॥ ते मुद्रिक कर जोहि दार ते सुमट दिवायो । वदित लगे भव भरण जाय ते नि तुल्य निगयो । तुल्य पिचायो सवहिको समुद्र-लीन मरिच्यो एनि । पञ्च तथ सत्याति दै ये हनुमन्त विचारि तुनि ॥ १५ ॥

एते उदधि पारै सुमट सायौ तट वैठाय । देखि सौय रवि दास ते वन उजारि फल जाय ॥ वन उजारि फल खाय मरुत पारै सुमट भायौ । करि उपाय पुर लङ्का बूझि घर घर पुर गायौ । जारि वारि एनि वारिनिधि बूझि चलो द्यंकट दिवट । गर्जत दोर कडोर अति गयो उदधि पारै सुमट ॥ १६ ॥

निय मरिच्यो ह दत्त ते चलो दिग्गज दारकन चक्र । पार जाय छेदो मरिच्यो दुर्ग क्रियो पुर भङ्ग ॥ दुर्ग क्रियो पुर भङ्ग रण रण दूझ गयो । द्रोणागिरि धरि शीघ्र रथन नभ-भङ्गन गयो ॥ कारण धावत भर लख्यो भरत कोपि उर धल दियो । राजन मोच उरभानिके सिय हित गिरि धरि ते ॥ १७ ॥



सुख पायवो । शुक नारदको सीख यह एक रामगुण
गायवो ॥ २५ ॥

एक राम सुख नाम धृत ध्यान रामको रूप । राम चरित
गावत परम धर्म पवित्र अनूप ॥ धर्म पवित्र अनूप करिय जद
लौं जग जीजै । रसना रस करि चरित सरित निशि बासर
पौजै ॥ निशि बासर अम तजि भजं बुलसिदास यह शुभ
सुलत । कामधेनु कलि कल्पतरु एक राम सुख नाम
धृत ॥ २६ ॥

इति श्री उत्तरकाण्ड समाप्तम् ॥



॥ मृगो मृगो मृगो मृगो मृगो ॥ गीतमनापसतीय तरो
 मग ॥ गम धर्म मिप्रिनागको पग ॥ आइ विलोकि
 मिप्रिनागको ॥ दपि नरेश गमान गयो दवि ॥ आयसु
 दान्द मिप्रिनागको ॥ चाप चाल वन पूज महेशनु ॥ डिगे न
 गमो मृग प्रगापनु ॥ सुनते दोगममान गरासनु ॥ मेलि
 निगा मृगमान नगाइ ॥ गमि प्रधान धरा मरु अम्वर ॥
 दान्द चर्मा मृग चर्मा नहीदर ॥ मारग वोच मिले फर-
 नाद ॥ चापहि सांघि भये तपसीवर ॥ राउ विवाहि
 राउ तपसे धर ॥ गान्दग्वि शिवाइ यथापनि ॥ जो सुनिकै
 नगाइ गडे गति ६ ॥ दोडा ॥ चरित चारु रघुवीरके
 रनि मन दान्द विचार ॥ निज मनसों तुलसी कहै
 वन न दौड भव पार ७ ॥

इति श्रीवाल्मीकिरामायणसमाप्तम् ॥

चामरान्द ॥ जाय दोगलैजने सुहाय आरसी गही ॥
 नाने नमोप देश लेखि प्रोत है सही ॥ रायकानमें मनोज-
 गद आइ यों दही ॥ राज दंव रामको वने सिधाव तो सही ॥

अथ रामायण छन्दावली ॥

दशकन्धर घटकर्ण अथ भारधरा दुख होइ । गई गगन गोदेह
 धरि कहि सुरपतिसों रोइ १ ॥ छन्दचौपय्या ॥ सुरपतिगुरु
 वृष्णा सुरमति सूक्ता गे विधिलोक तुरन्ता । विधि सुर समुक्ताये
 सङ्ग सिधाये जहँ सोवत श्रीकन्ता ॥ दशमुखकी करणी बहुवि-
 धि बरणी धरणी जेहि विधि रोई । सुनि शारंगपाणी भइ नभवा-
 णी विधि जाना नहिं कोई ॥ विधि वचन सुनाये सुर समुक्ताये
 तजहु शोच मन देवा । जो जनहितकारी प्रभु असुरारी
 करहि पार सोइ खेवा ॥ वानर गोपूजा मन धरि रौखा बसहु
 जाय वनमाहीं । अवधेशनिकेता व्यूहसमेता प्रभु आवत
 तुमपाही २ ॥ दोहा ॥ यहि विधि विबुध विबोधि गे गे
 सुर निज निज धाम । कछु काल बीते अवध प्रकट भये
 श्रीराम ३ ॥ अश्विदहनछन्द ॥ जनहितकारी प्रकट
 सुरारी । नरतनधारो छविमुखकारी ॥ मृदुभुवकारी अरि-
 दलहारो । सुमुख निहारो बलि महतारी ॥ अवधविहारो
 अवधप्रहारो । जयतपुरारी सबअवहारो ॥ अवधउधारो यह
 प्रणभारो । तुलसिहि तारो शरण सन्धारो ४ ॥ हरि-
 गीतिकाछन्द ॥ सन्धारि शरण विचारि तुलसी रामयण
 गावत लियो । तयतापयमन कलेशहरको शौर नहिं
 जग मग वियो ॥ जेहि गाइ यमन किशतखल हरिपुर गये
 करि सुधि हियो । रघुवीरयण सुनि हिय न हरप्यो बुरो ति-
 न अपनो कियो ५ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ राजत सेचक अङ्ग
 मझाछवि । दोल मनोहर कर्हहि महाकवि । जो सुनिके

सामाज्य रक्षागती ।

सुनोततान् लियो पणाम गङ्गके ॥ दोहा ॥ लखि सुकण्ठ
सामान्यतः मन्मथ लोच विचार । पुरुषसिंह ये कवन हैं
पणाम गङ्गके ॥

इति श्रीभारव्य हस्तसमाप्तम् ॥

॥ १०५ ॥ रामरामको लेवाइके तब शैल ऊपर
जाका जावेदति तोय वेहरि कीन्ह प्रीति दहाइके ।
मिहो लम शैलऊपर राम ब्रूक कपीशसों ॥ त्यों कयो
गङ्गा गङ्गा गङ्गाको डर भामसों ॥ बालिको बधि बाणसों
गङ्गा गङ्गा कां गङ्गा । जानको लुमको मिलावों
विद्विग्न कपिने कटो ॥ बालि मारि कपालराम सुराज
दहाइ सुकण्ठ ॥ भाम चारि सुनामके तहँ शासना करि
दहाइ ॥ जाका सुवि लोको कपिप्रेम कोश पठाइके ।
माममे मयि वेगि ल्यावहु स्वांजि देखवहु जाइके ॥ दोहा ॥
दीन्त्रा विवर प्रयोग निन अग्रन कियो फलफूल । पूँछि
निर्घाटि मृदे नयन ठाढ़े जतगिधिलूल २ ॥

इति श्रीक्रिष्णध्याकाण्डसमाप्तम् ॥

नोटकचन्द्र ॥ हनुमान गयो तरि सागरको । उलथ्यो
ननु गोइ अनाथको ॥ गिरि ऊपरपे चढ़ि लङ्क तखी । हनि
लानिनी विविधान भव्यो ॥ लघुरूप धरयो हनुमान बली ।
विधि तह विनोक्त नाइ भयो ॥ रघुवीर प्रिया कितहूँ न
मिता । नईं देवि विभीषणतेरि बली ॥ रघुवीर सुप्राजुहि
चित्त रघु । तन्विके हुलमान हियो सुभरयो ॥ तेहिको

कैश्यी सुनी सुदात शोकमात ते गहौ । राज मांग पूतको
 श्रीरामको बने रही ॥ राइनते सुनी सो बात तात ताप यों तये ।
 रामसीय सङ्गले सवन्धु जाननै गये ॥ रायरामचन्द्र साथ
 प्राण काढ़िकै दये । गङ्गाग होइकै सुचित्रकूटमें गये ॥ राजका-
 जकै भरत्य शोकसिन्धुमें भले । साथ लै वशिष्ठ वन्धु पांथप्याद ही
 चले ॥ कैवटै सवन्धु भेंटि राम प्राग जाइकै । राम दीन
 पावरो हिये सुजीन लाइकै १ ॥ दोहा ॥ राम पावरी
 पाइकै गवन गेहको कौन । गणक बोलि तब भरथने नेमध-
 रमव्रत लौन २ ॥

इति श्रीअयोध्याकाण्डसमाप्तम् ॥

सुन्दरौल्लन्द ॥ विदेहजातकी कहे सुरेशतातने छुवो ।
 श्रीरामवाण लागते विहीननेन सो हुवो ॥ श्रीदेवदत्त
 तातको श्रीराम इन्दना कियो । तिन्होंकि तीय सीयको
 सचैलभूषणो दियो ॥ विराध बड़ि रामचन्द्र शारङ्गके
 गयो । तहां सुरेश देखिके सवन्धु सुखसो भयो ॥ बहोरि
 श्रीसवन्धुसङ्ग पञ्चवाटिका गये । तहानखानकाननाक सूप-
 नेखके हये ॥ लिङ्गुअ आदिद्वै सुरारि एक वाणसों दये ।
 सुनी सो बात रावणा मरौचपास सो गये ॥ कहौ कथा सुनी
 तिनो सो नेङ्करङ्ग सो भयो । लखो श्रीराम मारि ताहि
 धाम आपनो दयो ॥ सुन्यो सो शब्द सीय शेष राम पास पाठयो
 कखो बिहूप रावणा लै सीय जातयो भयो ॥ सवन्धुशाल देखिकै
 कपाल दुःखमें पगे । तहां ललामशातते तिन्होंतो वृक्तते लगे ॥
 कहौ सुसुद्धि गोधने कदम्बवन्धुकै चले । करौ सनाथ शेवरी स-
 वन्धु वेगलै भले ॥ बहोरि पग्यनाल श्रीरामराग जायकै । तहां

[illegible]

मिति सुद्रि लई सगरौ । हरषे हरिको मिलि ज्यों नगरौ ॥
 तहं जाय लखौ रघुवीरप्रिया । लक्षपद्म मलौ सुखदैन सिया ॥
 पुनि रावण अनिकलेश कियो । सुनि क्रोध भयो हनुमान
 हियो ॥ सुदगै दइ डारि निहारि प्रिया । सुखदुःख भयो हनुमन्त
 हिया ॥ रघुवीरको दूत प्रसन्नकिया । फलखानको आयसु
 मांगि लिया ॥ लखि बाग लग्यो फल खान हनू । उत्तपात महा
 अतिवाग धनू ॥ मनुजार्दन जाय पुकार करौ । हनुमान हनी
 सेना सगरौ ॥ घननाद गज्यो पवनातमजा । दशकन्ध
 सभामहं जाइ गजा ॥ चलिगो रिपु ज्यों न डर्यो मनमें । मद-
 मत्त गयन्दनके घनमें ॥ घनतेल लंगूर लपेट सहौ । जलसो
 निजपेकरि लङ्ग दहौ ॥ हनुमानके हांकते गर्भ गिरयो । मनुजाद
 चिया नहिं धीर धर्यो ॥ सियआयसु लेकरि सिन्धु तर्यो ।
 हनुमान सदेह कछ्यो सिगरयो ॥ सुनिकै हियसिन्धु अनन्द नर्यो
 सजि सेन समूह पयान कर्यो ॥ बल देखि पयोनिधि पांथ-
 पर्यो । नल देखिकै सेवु समुद्र तर्यो ॥ सुनि मयतनया पिय-
 पांथ परी । प्रभु व्यापकविष्व विराटहरौ ॥ तव जाय सभाह
 विचार करौ । तपसौन धरो हमरौ नगरौ ॥ तिन मन्त्रिन मन्त्र
 कुमन्त्र कियो । लघु बन्धुहि मारैसि लात हियो ॥ रघुवीरके
 तीर गयो भजिकै । नृपको अविवेक कछ्यो सजिकै ॥ प्रभु लङ्ग
 हि अङ्गदको पठयो । पद रोपि सभाप्रण जाइ ठयो ॥ दशकन्ध
 सभा महं वीरवचा । नटर्यो पदज्यों महिसङ्ग रचा ॥ वरवीर
 सभा नइ नारि फिर्यो । रघुवीर पदाम्बुज पाद पर्यो ॥ दोहा
 सुनि लंपाल अङ्गदवचन वृक्षे मन्तीयूह । अनी चारि करि
 द्वारचहुं लागे कौशसमूह २ ॥

इति श्रीसुन्दरकाण्ड समाप्तम् ॥

॥ गहि वल चामर चमर
 ॥ भरतादि अनुज निभीषणाङ्गद
 ॥ सनु मिया श्रीरघुवीरको अवि-
 ॥ कउ दाम तुलसी जन्मसुख लहि
 ॥ नित नव मङ्गल अनध-
 ॥ लईह चारिफल अछत तनु
 ॥ नित प्रीति सरित अन्धादबन्धु-
 ॥ गज बाजि राजसमाज लखि सब
 ॥ बैठे सभामहँ जाइ श्रीरघुवीर दुख
 ॥ उलूकको लखि लोग सब विस्मय
 ॥ अतिरिक्ति उरमिलासो सबनि सुत द्वैद्वे
 ॥ गन युगल जाये सब निगम आनंद बने ॥
 ॥ मन्त्रादि नाद आदि मृनिवर सकल अवधहि आवही ।
 ॥ नर्तन गीत गववाके चरित सब विधिहि जाय सुनावही ।
 ॥ गक वारको महिदेवको सुत सभामहँ आयो मरयो । गुरु
 ॥ वृद्धि तपने पारि अट्टहि तवहिमँ उठि जिय परयो ॥ यहि
 ॥ भक्ति रामचरित पामपवित नित नूतन करै । कहि दास-
 ॥ तुलसी सुनत सबके वचन मन पानक टरे ॥ दोहा ॥ सुनि
 ॥ मीताई युगल मुन राम कोन्ह अनुमान ॥ लोक सिखावन
 ॥ दोन्ह दिन बागे श्रीभगवान ४ ॥

इति श्रीउत्तरकाण्ड समाप्तम् ॥

इति लक्षाकाण्ड समाप्तम् ॥

छन्द ॥ शुभ सगुण अवध जनाइ तेहि क्षण होत मुद
मङ्गल महा । शीतल सुगन्ध सुमन्द मारुत अमल जल सुर-
सरि बहा ॥ शुभ अङ्ग फरकत भरतके हिय हुलसि अहि
आनन्द लहा । तेहि समय श्रीहनुमान प्रभुको आइ सन्देशो
कहा ॥ मन हरष भरत सुनाइ गुरु कहँ मातु सकल बुला-
इ कै । कहि खवरि श्रीरघुवोरको तिन सजे मङ्गल जाइ कै ॥
गुरु बन्धु संयुन चले प्रभुपर निरखि पदपङ्कज गहे । धरि
भरत भुज उर ल्याइ प्रभु राजीवलोचन जल बहे ॥ पुनि प्रेम-
युत सब मातु भेटौं निरखि प्रभु हुलख्यो हियो । तिन कनक
मणिगण वसन भूषण आनि महिदेवन दियो ॥ शुभ समय
जानि वशिष्ठ वेगि लिवाइ लियो सुमन्तको । सब राजसाज
सम्हारि तेहि क्षण राज दिय अगवन्तको ॥ सिय सहित रघु-
कुलमणि विराजत सुभग सिंहासन परैं । सुर सुमन वरषहि

हृन्ममकल, मलमूल । तुलसी मर्म हियो गलहि उपजत सुख
 रनुजन ॥ रेफरमित परमातमा सह अकार सिय रूप । दौरघ
 मिलि मिलि जीतवन तुलसी जमन अनूप ॥ अनुस्वार काग्य
 नाना मोहर तरा नकार ॥ मिलत गकार मकारसों तुलसी
 करे भाग्य ॥ ज्ञान विरागें भक्ति राग नूनि तुलसी पेपि ।
 नग्यो मनि मनि गनुउरत प्रणिमा भिन्नद विशेषि ॥ नाम
 नाना जगनि जिय तुलसी करि परमान ॥ वरण निषयंग
 भोगो लोको मकत गुण जान ॥ नगती शुभ कारण सनुमति
 भोगो मोग्य नाम । नगदरग्य शनि शुभलग्न भक्ति
 नाना गणाय ॥ तुलसी राम समान वर लपनेह अपर न जान ।
 नाना गणाय रनिनेन प्रनि चानि गति परमान ॥ अहि रस-
 ना अथ धनु गग गणयति द्विगुणवार । माधव सित सिय-
 जनन रिति गगरोना अवतार ॥ भरण हरण अति अमिति विधि
 नत्व अथ कर्मिणी । गङ्गा नमि मिद्वान्त मत तुलसी वदन
 विनानि ॥ विमल मोक्ष काग्य सुमनि सतमैया सुखधाम ॥
 गङ्गा नमि पटि ननि पाद हैं विनि भक्ति अभिराम ॥ मन भय
 नाना गणाय प्रकट रुन्द युव होइ । मो वटना शुभदा सदा
 नाना गणाय नव लड ॥ नाना ममान तावान लघु अपर वेद
 गङ्गा नमि संभागादि विरुप नि पदन अत्त रुइ जान ॥ दौरघ
 नाना गणाय पठन गड गुण गहि विद्याम । प्राकृत प्रकट
 नाना गणाय नाना वा वा वा । द्विगुण गीत सारग्य रा-
 नाना गणाय नाना गणाय प्रत्येकन युग नद हरण लोइ ॥
 नाना गणाय नाना गणाय तुलसी वलभ नाम । सकुचति
 नाना गणाय निर्गन्ध मिय धरमधुरन्धर राम । दस्यति रस रसना
 नाना गणाय वदन सुगेह । तुलसी हर हित वरण शिशु
 नाना गणाय ननद ॥ हिय निगुण नाना सङ्ग रसना राम

तुलसी सतसई ॥

नमो नमो ओजान प्रभु परमात्म परधाम । जेहि
सुनिरत सिध होत हैं तुलसी जन मन काम ॥ राम वाम दिशि
जानकी लख्य दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याणकर
तुलसी सुरतव तोर ॥ पञ्चपुरुष परधाम वर जापर अपर
न धान । तुलसी सो सनुजन सुनत राम सोई निर्वाण ॥
सकल सुखद एव जातु सो राम कामनाहीन । सकल काम-
प्रद सर्वहित तुलसी कहहि प्रवीन ॥ जाके रोमैरोम प्रति
अमित अरित प्रहृष्ट । सो देखत तुलसी प्रकट अमल सु-
अचल प्रचण्ड ॥ जगतजननि ओजानको जनक राम शुभ
रूप । जातु रूपा अति अचहरणि करणि विवेक अनूप ॥ तात
भावपर जातुके ताम्रु न लेश कलेश । ते तुलसी तजि जात
निमि तजि घर तर परदेश ॥ पिता विवेकनिधान वर मातु
दया युत नेह । तासु सुवन किमि पाइ है अनत अटन तजि
गेह ॥ बुद्धि विनय गतिहीन शिशु सुपथ कुपथ गत जान ।
जननि जनक तेहि किनि तजै तुलसी सरिस अजान ॥ मात
तात तियरानख बुधि विवेक परमान । हरत अखिल अघ
तरण तर तव तुलसी कष्ट जान ॥ जिन्दते उद्धव वर विभव
ब्रह्मादिक संनार । सुगति तासु तिनकी रूपा तुलसी बढहि
विचार ॥ अग्नि रवि सोताराम नभ तुलसी उरसि प्रमाण ॥
उदित सदा अथवत न सो कुवलित तमकर हान ॥ तुलसी
कहन विचार गुरु राम सरिस नहि आन । जातु रूपा शुचि
होति रुचि विशद विवेक प्रमान ॥ रारसरूप अनूप अल

[illegible]

सुनाम । मन्हुँ परट सम्युट लसत तुलसी ललित ललाम ॥
 प्रसु पुण्यगण भूषण वनन वचन विशेष सुदेश । रामसुकौ गति
 कामिनौ तुलसी करतव केस ॥ रघुबरको रति तियवदन
 ब्रज कह तुलसीदास । शरदप्रकाश अकाशछवि चारु चिबुक
 तिल जात ॥ तुलसी घोमत नखतगण शरदसुधाकर राध ।
 सुता फाटार कालक जनु रामसुवध शिशु हाथ ॥ आत्म
 मय्य विवेक विनु राम भजत अलजात । लोक सहित पर-
 लोककी अवश विनाशी बात ॥ दल मशत मानस तजे चन्द्र
 शीत रवि घान ॥ मोर मद्ददिक जो तजे तुलसी तजे न
 राम ॥ आसन दड़ आहार दड़ सुमति ज्ञान दड़ होय ।
 तुलसी विना उपासना विनु दुलहेको जोय ॥ रामचरण
 अवलम्ब विनु परमारथको आश । चाहत वादिवुन्द गहि
 तुमी चढ़न अकाश ॥ रामनाम तरुनूल रस अष्ट पल फल
 एक । युगत सत्त शुभ चारि जग वरणत निगम अनेक ॥ राम
 कामनरु परिहरत सेवन कलितरु ठूँठ । स्वारथ परमारथ
 चइत सकल मनोरथ कूँठ ॥ तुलसी केवल कामना राम-
 चरित आराम । निश्चिर कलि करि निहत तरु मोहि कहत
 विधि वाम ॥ स्वारथ परमारथ सकल सुलभ एकही ओर ।
 द्वार दूसरे दीनमा उचिन न तुलसी तोर ॥ हितसम हित
 रति रामसन रिपुसन-धैर विहाव ॥ उदासीन संसारसन
 तुलसी सहज सुभाव ॥ निलपर राखै सकल जग विदित
 विलोकित लोग ॥ तुलसी महिमा रामकी को जग जानन
 योग ॥ जहाँ राम तह काम नहि जहाँ काम नहि राम ।
 तुलसी कबहीं होत नहि रवि रजनी ब्रक ठाम ॥ राम दूर
 माया प्रबल घटति जानि मनमोहि । बढ़ति भूरि रवि दूर
 लखि शिरपर पगुतर छाहि ॥ सम्पति सकल जगत्तकी

तनूतो नोरोनोकरई चातक होको साथ । सुनियत जा-
 नत नोरोनोकरई दारें नाथ ॥ प्राति पधोना पत्र ली प्रकट
 नत पधोना । याचक जगत अधीन इन किये कनोछो
 जान ॥ ऊं तो जान पयोदरा नोचो पियत न नीर । कै धांचे
 नोचो जान पयोदरा नोचो पियत न नीर ॥ क नरपे वन समय धिर
 न भोरि जाग गिरन ॥ तुलसी चातक याचकहि त-
 नूतो नोरोनोकरई ॥ चढत न चातक चित कजहुँ प्रय ज्यो-
 नोचो जान ॥ आनि प्रेमयोगीवर तुलसी योग न दीप ॥
 नोचो जान ॥ मान धांगनी एह एक घन यानि ॥ दैत सो शुभाज-
 न भया नोचो भोरि पानि ॥ द्वे अधीन याचक नोचो अ-
 नोचो जान ॥ ऐन मानो मांगनहि को वारिद जिन द्य ॥
 पन मानो दानि मग्न अनि भागीर नर स्त्रीकि । दीप
 न मानो दानि मान तुलसी रागहि रीझ ॥ कोन जिदाये
 जननमद जीवनदायक पानि । भयो कनोछो चातकहि
 पानि पानि पानि । मान राखियो मांगियो पियसों सज
 नोचो । तुलसी नोचो तत्र कवैं जग चातक मन लेट ॥ तुलसी
 चातक नोचो मान राखियो प्रेम । वल्लभ दखि ताति को
 निहो निहो नम ॥ उरल वरपि गरजत तरजि डारत दारिज
 वडार । चितव कि चातक जतद नजि कवहुँ आन ली ओर ॥
 मान पान पान जन पज करे टक टक । तुलसी तदपि
 न चातक वतुर चातकहि चक ॥ रतन रतन रसना लटो
 नम सृष्टिगो अह ॥ तुलसी चातकके हिये नित नूतनहि
 नम ॥ गला यमुना सरस्यतो सातसिन्धु भरिपूर । तुलसी
 चातकके मने विन स्नानो नव धूर ॥ तुलसी चातकके मने
 स्नानो पियत न पानि । प्रेमवृषा बढता भली घटे घटंगी
 पानि ॥ सर सरिता चातक तजे स्वाती सुधि नहि लेव ।

तुलसी स्वाग्ध मौन जग परमारथ रघुनाथ । तुलसी खोटे
 दासकर राखत रघुवर स्नान । ज्यों खूरखड परोहितहि देत दान
 यजमान ॥ ज्यों जग दैरी मौनको आपु सहित परिवार । त्यों
 तुलसी रघुनाथ बिन आपनि दशा विचार ॥ तुलसी राम
 भरोल शिर त्रिये पाप धरि जोट । ज्यों व्यभिचारो नारिकहँ
 बड़ी खसन्की ओट ॥ खानी सौतानायनी तुलसी नेरी
 दौर । तुलसी काग जहाजको सूतन गौर न ठौर ॥ तुलसी
 सब छद्म छंड़िके कीजै राम सनेह । अन्तर पतिसों है कइ
 जिन देखी सब देह । सबहौ कोप रखे लखे बहुत कहे का होय ।
 तुलसी तेरो रान तनि हित जग अरन कोय ॥ तुलसी हन-
 सों रामसों भसी निलो है सून । छंड़े वने न संग रहे ज्यों घर-
 माहँ वपूत ॥ कोटि विघन सङ्कट विकट कोटि घञु जो साथ ॥
 तुलसी बल नहि करि सकैं जो सुदृष्ट रघुनाथ ॥ लगन सुहृ-
 त योगदल तुलसी गनत न काहि । राम भये जेहि
 दाहिने सबै दाहिने ताहि ॥ प्रभु प्रभुना जानहँ दई बोल
 सजित गहि बांह । तुलसीते गाजत फिरहि रामछलकी
 छाँड ॥ लावन साँतति सब सहत सुमन सुखद फल लाहु ॥
 तुलसी चातक जलदको रौकि वृत्ति बुध काहु । चातक
 जीवन जलदकहँ जानत लग्य सुरोति । लखत लखत लखि
 परत है तुलसी प्रेन प्रतीति ॥ जीव चराचर जहँलगे है सब-
 को प्रिय देख । तुलसी चातक मन बसो घनसों सहज
 सनेह ॥ डोलन विष्ट विष्ट वन विप्रत पोखरौवारि ।
 सुयश धवल चातक नवल तोर सुवन दृष्टचारि ॥ सुख सौठे
 यानत अतिन कोकिर मोर चकार । सुयश लतिन चातक
 वलित रहौ सुवन भरि तोर ॥ मांगत डोलत है नहीं तजि घर
 अनत न जात । तुलसी चातक भक्तकी उपमा दंत लजात ॥

तुलसी सेवक वश कहा जो साहब नहिं देइ ॥ आश पपीठा
 प्यदकी सुनु हो तुलसीदास । जो अंचवै जल स्वातिको
 परिहरि वारहमास ॥ चातक यन तजि दूसरे जियत न नाई
 नरि । मरत न माँगे गर्द्ध जल सुरसरिहूको वारि ॥ व्याधा
 वधो पपीहा परो गङ्ग जल जाय । चोंच मंदि पीवै नहीं
 डिय पिय मों प्रण जाय ॥ अधिक वधो परि पुख्यजल उपर
 उठाई चोंच । तुलसी चातक प्रेमपट मरत न लायो खोंच ॥
 चातक नृति सिखाव नित आन नौर जनि लेहु । ये हमरे
 तुलसी धरम एक स्वातिसों नेहु ॥ दरशन परशन आन जल
 विनु स्वातो सुनु तात । सुनत चेचुवा चित चभो ससुक्ति
 नीति वर बात । तुलसी सुतमे कहत हैं चातक वारस्वार ।
 तात न तरपन कौजियो विना वारिधरवार ॥ वाज चङ्गु गत
 चातकहि भई प्रेमकी पौर । तुलसी परवश बाढ़ सम परि
 है एहुमो नौर ॥ अण्ड फोरि किय चेचुवा तुषा परो नौहार ।
 गहि चङ्गुल चातक चवुर ढाख्यो बारहि वार । होय न चातक
 पातकी जीवनदानि न मुढ़ । तुलसी गति प्रह्लादकी
 ससुक्ति प्रेमपद गूढ ॥ तुलसीके मत चातकहि केवल प्रेम-
 पियास । पियन स्वातिजल जान जग तावत वारहमास ॥
 एक भरोसो एक बल एक आश विश्वास । स्वातिसलिल
 रघुनाथ वर चानक तुलसीदास ॥ आलवाल सुक्ताहलनि
 द्विय मनेइ तरुमूल । हेरु हेरु चित चातकहि स्वातिसलिल
 नुहलत ॥ रामप्रेम विन दूवरे रामप्रेम सह पौन । विशद
 सुलिल सरवर वरन जन तुलसी मन मौन ॥ आप अधिक
 वर वैद्य धर्म कहै कुङ्कुमराग । तुलसी ज्यों सुगमन सुरे
 पर प्रेमपट दाग ॥

इति प्रेम भक्ति निर्देशः 'धर्मः सर्गः १ ॥

॥ १ ॥ जनकाचार ॥ पुनः सुविष्टं जाहि विधि प्रकट तौनि
 ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

अकान समान । राज करत रज मिलि गयो सदत सकल
 झराराज ॥ तुलसी भीठे वचनते सुख उपजत चहुँ ओर । वशी-
 करण यक मन्त है परिहस वचन कठोर ॥ रामरूपाते होत
 सुख रामरूपा विन जात ॥ जानत रघुवर भजनते तुलसी
 शठ अलतात ॥ सनसुख द्वे रघुनायके देहु सकल जग पीठि ।
 तजे केचुरो उरगकहँ होत अधिक अति डोठि ॥ मरयादा दूर-
 हि रहे तुलसी किये विचार ॥ निकट निरादर होत है जिमि
 सुरसरिवरवार ॥ राम रूपानिधि स्वामि मम सब विधि
 पूरणकाम । परमारघ परधाम वर सन्त सुखद बलधाम ॥
 रामहि जानहि राम रट भजु रामहि तजु काम । तुलसी राम
 अजान न किंसि पावहि परधाम ॥ तुलसी पति रति अङ्क
 सम सकल साधना सून । अङ्क रहित कछु हाथ नहि सहित
 अङ्क दश गून ॥ तुलसी अपने रामकहँ भजन करहु ब्रह्म
 अङ्क । आदि अन्त निरवाहिवो जैसे नवको अङ्क ॥ दुगुणे ति-
 गुणे चोगुणे पञ्च षष्ठ्यो सात । आठौते पुनि नव गुणे
 नवके नव रहि जात ॥ नवके नव रहि जात हैं तुलसी किये
 विचार । रमो राम इमि जगतमें नहीं द्वैत विस्तार ॥ तुलसी
 राम सनेह कस त्याग सकल उपचार । जैसे घटत न अङ्क नव
 नवको लिखत पढ़ार ॥ अङ्क अगुण आरु रगुण समुक्त
 उभय प्रकार । पोये राखे आप भल तुलसी चार विचार ॥
 यहि विधिते सब राममय समुक्तहु सुमतिनिधान । याते
 सकल विरोध तजु भजु सब समुक्त न आन ॥ राम कामनाही-
 न पुनि सकलकामकरतार । याहीते परमात्मा अव्यय
 अमल उदार ॥ जो कछु चाहत सो करत हरत भरत गत भेद ।
 काहु सुखद काहु दुखद जानत हैं बुध वेद ॥ सन्त कमल मधु-
 मास कर तुलसी वरण विचार । जग सरवर तर भरण कर

[illegible]

रचै वैहि विधि पक्ष मयूर ॥ काकसुता गृह ना करे यह
 अचरु बड़वाय । तुलसी कहि उपदेश सुनि जनित
 पिता घर जाय ॥ सुपट कुपट लौन्हे जानत ख खभाव अनु-
 तार । तुलसी सिद्धवन नाहि शिशु मूषकहन न मजार ॥
 तुलसी जानत है सकल चेतन मिलन अचेत । कौट जात
 उड़ि निय निकट बिगहि पढ़े रति देत ॥ होनहार सब आपुते
 वृथा शोच कर जौन । कच्छ ह्वै तुलसी मृगन कहहु उमेठत
 कौन । सुख चाहत सुखमें बसत है सुखरूप विद्याल । सन्त-
 त जा विधि नानसर कबहुं न तजत मराल ॥ नौति प्रीति यश
 अयश गति सबहुँ शुभ पहिचान । बस्तौ हस्तौ हस्तिनी देत
 न पनि रति दान ॥ तुलसी अपने दुखदते को कहु रहत
 अजान । कौश कुन्त अङ्गर वन्हि उपजत करत निदान ॥
 यथा धरणि सब बीजमें नखत अकाश निवास । तथा राम
 सब धर्मजय जानत तुलसीदास ॥ पुहुमौ पानी पावकहु
 पुष्पहु लहै सनात । ता कहँ जानत राम अपि विनु गुरु कि-
 मि लखि जान ॥ अगुण ब्रह्म तुलसी सोई समुण विलोकत
 सोई । दुख दुख नाना भांतिको तेहि विरोधते होइ ॥ शूर
 यथा गण जौनि चरि पलटि आव चलि गेह । तिमि गति
 जानहि रामकी तुलसी सन्त सनेह ॥ परमात्मपद राम
 एनि तीजे सन्त सुजान । जे जगमहँ विरचहि धरे देह विगत
 अलिमान ॥ चौथी संज्ञा जीवकौ सदा रहत रत काम ।
 ब्रह्मणसेतन रामपद निशि वासर वसवाम ॥ सुख पाये
 हरमन हैसत खीकात लहे विषाद । प्रकटत दुरत निरय पर-
 त केवल रत विषखाद ॥ नाना विधिकी कल्पना नाना विधि-
 को सोग । सूखमनौ अखुल तन कबहुँ तजत नहि रोग ॥ जे-
 से छुट्टीकौ सदा मलिन रहत दोड देह । बिन्दुकी गति तै-

[illegible]

उनि दिनीयः सुग्गिः ॥

॥ १ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि । तुलसी-
 ॥ २ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो
 ॥ ३ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो
 ॥ ४ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो
 ॥ ५ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो
 ॥ ६ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो
 ॥ ७ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो
 ॥ ८ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो
 ॥ ९ ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो
 ॥ १० ॥ दशमानान उरग रंग अमगौरि ॥ तुलसी तेरो

गत नाना भांति तेहि प्रकटत कालहि पाय । जान जाय गुरु
 ज्ञानते विन जाने भरमाय ॥ तुलसी तरु फूलत फलत जा
 विधि कालहि पाय । तैसेही गुण दोषते प्रकटत समय
 सुभाय ॥ दोषहु गुणकौ रीति यह जानु अनल गति देखि ।
 तुलसी जानत सो नदा जेहि विवेक सुविशेषि ॥ गुरुते आवत
 ज्ञान उर नाशत सकल विकार । यथा निलय गति दीपकै
 मिटत सकल अधियार ॥ यद्यपि अवनि अनेक सुख तोय ता-
 सु रस ताल । सन्तत तुलसी मानसर तदपि न तजहि मराल ॥
 तुलसी तोरत तीर तरु मानस जहँ सविडार । विगत नलिनि
 अलि नलिन जल सर सरिहू बड़ि आर ॥ जो जल जीवन
 जगत को परतत पावन जौन । तुलसी सो नीचे ढरत ताहि
 निवारत कोन ॥ जो करता है करम को सो भोगत नहि आन ।
 ववनहार लुनि है सोई देनो लहै निदान ॥ रावण रावणको
 हन्यो दोष रामकहँ नाहि । निज हित अनहि देखु किन
 तुलसी आपहिमाहि । सुमिरु राम भञ्जु रामपद देखु राम
 सुदु राम । तुलसी समुक्तहु रामकहँ अहनिशि इह तव
 काम ॥ रज अप अनल अनिल नभ जड़ जानत सब कोइ ।
 इह चेतन्य सदा समुक्त काजरत दुख होइ ॥ निजकृत विल-
 सत सो सदा विन पाये उपदेश । गुरुपगु पाय सुमग धरै
 तुलसी हरै कलेश ॥ सलिल शुक्र शोणित समुक्त पल अरु
 अस्थि ससेत । बाल कुमार युवा जरा है सुसमुक्त कर चेत ॥
 ऐसिहि गति अवसानकौ तुलसी जानत हेत । ताते यह गति
 जानि जिय अविरल हरि चित चेत ॥ जानै रामखरूप जब
 तव पावै पद सन्त । जन्म मरण पदतै रहित सुखमा अमल
 अनन्त ॥ दुखदायक जाने भले सुखदायक भजि राम । अब

[illegible]

वीच रैयत वितय पति पति तुलसी तोर । तामु विमुख सख
 सति विष्म सपनेहु होन न भोर ॥ द्वितीय कोल राजिव
 प्रथम बाहु न निचय साहि । आदि एक कल दे भजहु वेद
 विदित गुण नाहि ॥ वसत जहां राघव जलज तेहि मिति
 गोजहि सङ्ग । भज तुलसी तेहि अरि सुपद करि उर प्रेम
 अभङ्ग ॥ भजहु तरणिअरि आदिकहँ तुलसी आत्मज अन्त
 पञ्चानन लहि पदम मधि गहे विमल मन सन्त ॥ वनिता
 शैल सुतासकी तामु जनमको ठान । तेहि भज तुलसीदास
 हित प्रणत सकल सुखधाम ॥ भज पतङ्गसुत आदिकहँ
 मृत्युञ्जय अरि अन्तु । तुलसी पहकर यज्ञकर वरण पाँसु-
 निच्छन्तु ॥ उलटे नासो तामु पति सौ हजार मन सत्य ॥
 द्वितीय द्दितिय हर कास नहि भज तेहि तुलसीदास । काका-
 मन आसन किये सासन लहे उपास ॥ आदि द्वितीय अव-
 तारकहँ भज तुलसी नृप अन्त । कमल प्रथम अरु मध्य सह
 वेद विदित मत सन्त ॥ जेहि न गन्यो कछु मानसहु
 सुरपति अरि सौ आस । तेहि पद श्रुतिता अवधि भव तेहि
 भज तुलसीदास ॥ नैनकरण गुणधरण वर तावर वरण
 विचार । चरण सतर तुलसी चहसि उवरन शरणअधार ॥
 भजु हरि आदिहि बाटिका भरिता राजिव अन्त । करिता
 पद विश्वास भव सरिता तरसि वरन्त ॥ जड़ मोहन वरणादि-
 कहँ सह चञ्चल चित चेन । भज तुलसी संसार अहि नहि
 गहि करत अचेन ॥ मरण अधिप वारण वरण दूसर अन्त अगार ।
 तुलसी द्रुपु सह रागधर तारण तरण अधार ॥ ज्यों उरविज
 चाहसि कटित तौ करि घाटित उपाय । सुमन सवर वर अरि-
 चरण सेवन सरल सुभाय ॥ द्वितीय पयोधर परमधन बाग
 अन्त युत सोय । भज तुलसी संसार हित याते अधिक न

तुलसी ताहि विसारि शठ भरमत फिरत भुलान ॥ कौन जाति
 जो नामनी को दुखदायक बाम । को कहिये शशिकर दुखद
 तुलसी नाम को राम ॥ को शङ्कर गुरुवागवर शिवहरको अभिमान
 का ता को प्रजजगतको भरताको हरिजान ॥ सरवेय सरजीव-
 गण रूप तेहि छपहिचान । पञ्चवर्ग गहि युतसहित तुलसी
 नामि समान ॥ होत हरप का पाय धन विपति तजे का धाम ॥
 तुलसी नामनि कनारि तर अति सुखदायक राम ॥ वीर कवन
 मरुत नगर धीर कवन रतराम । कवन क्रूर हरिपदविमुख
 को नामी लगाम ॥ कारण को कंजोव को खंगुण कह सब
 नाम । आन को तुलसी कहत सो पुनि आवन होय ॥ तुलसी
 नामा प्रिय को ओचप वितिय समेत ॥ अब समुझे जड़ सरि-
 न न मगुम माधु मचेत ॥ जासु आसु सरदेवको अरु असार
 हन जान । मरुत दुखद तुलसी तजहु मध्य तासु सुखधाम ॥
 चन्दन निधमनु प्रथम हरि जो चाहसि परधाम । तुलसी कहहि
 कवन मुनहु यही सयानप काम ॥ कुलिशधर्म युग अन्त्युत
 भनु नृपनी ननु काम ॥ अशुभहरण संगयशमन सकल कला
 मुनधाम ॥ श्रीकरको रघुनाथहर अनयस कह सब कोय । सुख-
 दाको जानन सुमति तुलसी समतादोय ॥ वैरमूलहित हरवचन
 प्रेममूल उपकार । दोहा सरल सनेहमें तुलसी करै विचार ॥
 प्राग कवन गुरु ननु जगत तुलसी और न आन । श्रेष्ठाको हरि-
 भक्तिमम को लखु लोभ समान ॥ चरण द्वितिय नाशक निरय
 तुलसी अन्तरमार । भजहु सकल श्रीकरसदन जनपालक खल-
 मार ॥ चपथेय सखर सहित यमयुत दुखद न आन । तुलसी
 दयाने दृगल अन्तिकार सहजान ॥ तुलसी यमगण बोध
 नि नृप निनि मिटै कलेश । ताते सदगुरुशरण गह जाते पद-
 पद ॥ भगव जगण कासों करसि रामस्मयन नहि कोय ।

हु विचार । तुलसी तासु शरण परे कासु न भयो उबार । धरा
 धराधर वरण युग शरण हरण भवभार । करन सतर तर परम
 पद तुलसी परमाधार ॥ वरन धनञ्जय सूनूपति चरण शरण
 रति नाहि । तुलसी जगवञ्चक किठिठि किये विधाता नाहि ।
 तुलसी रजनौ पूर्णिमा हार सहित लजि लेहु । आदि अन्त
 युन जानि कहि तुलतरपनतनैहु ॥ भागु गोबिद तिमि तासु
 पति कारर इति हिन जाहि । ज्ञान सुगति युत सुखसदन
 तुलसी मानन ताहि ॥ भजु तुलसी औघाडिकहैं सहित
 तत्त्व युन अन्त । भव आयुर्जय जासुबल मन चल बचल
 वरत । हेत कहा क्य वानपर लेत कहा इत राज । अन्त
 आदि युन नहिन भजु जो चाहसि शुभ काज ॥ चन्द्रशशि
 भजु गुण ललित समुक्ति अन्त अशुराग । तुलसी जो यह वन
 परे तौ तव पूरण भाग ॥ जिनके हरि वादन नहीँ दधिसुत
 पुन जेहि नाहि । तुलसीते नर तुल्य हैं विना समीर उड़ाहि ॥
 रवि चञ्चल असु ब्रह्म ब्रव बीच सुवास विचारि । तुलसि-
 दास आसन करे अवनिसुता उर धारि । वन वनिताद्वगको-
 पमा युन कछ सहित विवेक । अन्त आदि तुलसी भजहु परि-
 हरि मत कर टेक ॥ उर्वी अन्तहु आदि युन काल शोभी कम-
 लादि । कै विपर्य्य ऐसेहि भजहु तुलसी शमन विषाद ॥ तौ
 तोहिकहैं सब कोउ सुखद करहि कहा तव पाँच । हरव ललित
 वारिज वरण तजव लीन सुनु साँच ॥ तजहु सदाशुभ आशचरि
 भजु सुननस गरिकाल । सजु मतईश अवन्तिका तुलसी विमल
 विशाल ॥ एतवन्त वरवणयुग सेत जगत सब जान । चेत
 सहित सुमिरय करत हरत सकल अवखान ॥ मैत्रीवरणय-
 कारको सहसर आदि विचारि । पञ्चवर्ग गहियुत सहित तुलसी
 ताहि सँभारि ॥ हलधम मध्य समानयुत याते अधिक न मान ॥

तुलसी पतिपहिचान विन कोउ तुलकवहुँलहोय ॥ तुलसी तगण-
विहीन नर सदा नगणके बीच । तिनहि जगण कैसे लहै परे
सगणके बीच ॥ इन्द्रमणि सुरदेव ऋषि रुक्मिणिपति शुभ
जान । भोजनद्वहिता काक अलि आनंद अशुभ समान ॥
को हिन सन्त अहित कुटिल नाशकको हित लोभ । पोषक
तोषक दुखद अरि शोषक तुलसी लोभ ॥ सदा नगण
पद प्रीति यहि जानु नगण सम ताहि । जगण ताहि
जययुत रहत तुलसी संशय नाहि ॥ भगण भक्ति करु
भरम तजि तगण सगण विधि होय । सगण सुभाय समुक्ति
तजो भजे न दूषण कोय ॥ श्रीगज आसनजतजू बिहरत तौर
सुधौर । यज्ञ पाय मैत्राणपद राजत श्रीरघुवीर ॥ वाणवुतजू तट
निकट बिहरत रामसुजान । तुलसी करकमलन ललित लसत
शरासन वान । मृदुमेचक शिररुह रुचिर शीशतिलक भ्रूवङ्क ।
धनुशर गहि जनु तहियुत तुलसी लसत मयङ्क ॥ हंस कमल
विच वरणयुन तुलसी अतिप्रिय जाहि । तीनलोकमहँ जो भजे
लहै तासु फल ताहि ॥ आदि महँ अन्तहु महँ मध्य रहै तेहिजान ।
अनजाने जड़जीव सब समुक्ते सन्तसुजान ॥ आदि रहै मध्ये रहै
अन्त दहै सो बात । रामविमुखके होत है रामविमुखते जात ॥
ललित चरण कटि कर ललित लसत ललित वनमाल । ललित-
चिबुक दिज अधरसह लोचन ललित विशाल ॥ भरणहरणअघ्यै-
अमल सहित विकल्पविचार । कह तुलसी मति अनुहरत दोहा
अर्थ अपार ॥ वशिष्ठादिलङ्कारमहँ सङ्केतादि सुरीति ॥ कहे
बहुरि आगे कहव समुक्तव सुमतिविनौति ॥ कोष अलङ्कृत सन्धि
गति मैत्रीवरण विचार । हरण भरण सुविभक्ति भल कविहि
अर्थ निरधार ॥ देशकाल करताकरम बुधि विद्यागतिहीन । ते
सुरतरु तर दारदौ सुरसरितौर मलौन ॥ देशकाल गतिहीन जे

- - - - - तुलसी भक्तमते ॥ सोई सेमर सोइ सुवा सेवत
 - - - - - तुलसी महिमा मोह हो विदित बखानत सन्त ॥
 - - - - - तुलसी पवन देवी नयन संगथ गमन समान । तुलसी समता
 - - - - - कहत पानकहँ पान ॥ बसहा भव अरि हित
 - - - - - गोपि न ससुभक्त हीन । तुलसी दीन मलीनमति
 - - - - - पण पणोन ॥ भटपत पर अद्वैतता अटकत ज्ञान
 - - - - - गटकत गिरनते विठटि फटकत तिषु अभिमान ॥
 - - - - - गोपि गोपि हिनु दुग्गिन सुमित रहित तेहि होइ । तुलसी
 - - - - - पान पानपन पानप तुलसी रामते सोइ ॥ मात पिता निज
 - - - - - गोपि गोपि उष्ट उपदेश । सुनि माने विधि आप जेहि
 - - - - - गोपि गोपि कहे ॥ गगो भलो मनाइवो भलो होनकौ
 - - - - - गोपि गोपि गगनके गंडुआ सो गठ तुलसीदास ॥ विलि-
 - - - - - गोपि गोपि देवता करणी समना देव । सुये मार अविचार-
 - - - - - गोपि गोपि मावक एव ॥ विनहि बीज तरु एक भव शाखा दल
 - - - - - गोपि गोपि को वगै अनिगथ अमित सब विधि अकल
 - - - - - गोपि गोपि गुरु पित्र मुनिगण बुध विबुध फल आश्रित अति
 - - - - - गोपि गोपि ते सब विरदहित सो तरु तासु अधीन ॥ को न-
 - - - - - गोपि गोपि आय भव को न सेय पळनाय । तुलसी बादहि
 - - - - - गोपि गोपि आपहि आप नगाय ॥ कहत विविध फल विमल
 - - - - - गोपि गोपि न एक प्रमान । भरम प्रनिष्ठा मानि मन तुलसी
 - - - - - गोपि गोपि भुनान ॥ सुगजल घट भरि विविध विवि सौचत नभ-
 - - - - - गोपि गोपि तुलसी मन हरपित रहत विनहि लहे फल फूल ॥
 - - - - - गोपि गोपि कहति हमकहँ लखो नभतरुको फल फूल । ते तुलसी
 - - - - - गोपि गोपि गिनल मनि मानहि मुद मूल ॥ तेपि तिन्हें याचहि
 - - - - - गोपि गोपि करि करि बार हजार । तुलसी गाडरकौ ढरन जाने
 - - - - - गोपि गोपि ॥ गशि कर सग रचना किये कत शोभा सर-

तुलसी सो तव लखि परै करै कृपा वरधीर ॥ अपने खोदे
 लूपमहँ गिरे यया दुख होइ । तुलसी सुखद समुक्ति दिये
 रचत जगत सब कोय ॥ ता विधिते अपनी विभव दुख सुख
 दे करतार । तुलसी कोउ कोउ सन्त वर कीन्है विरचि विचार ॥
 रसनाहीके सुत उपर करत करनतर प्रीति । तेहि पाछे जग
 सब तगै लज्जुन न रौति अरौति ॥ माया मन जिव ईश भणि
 ब्रह्मा दिखु महेश । सुर देवी औ ब्रह्मलौं रसना सुत उपदेश ॥
 करणधार वारिधि अगम को गम करै अपार । जन तुलसी
 सनसङ्गत पाये विशद विचार ॥ गहि सुखे विरले समुक्ति
 कहि गय अपर हजार । कोटिन बूड़े खवरि नहि तुलसी कह-
 हि विचार । अब न सुनत देखत नयन तुलन न दिविश
 विरोध । कहहु कहौ केहि मानिये केहि विधि करिय प्रबोध ॥
 अवाणात्मक ध्वन्त्यात्मक वरणात्मक विधि तीन । त्रिविध शब्द
 अनुभव रगम तुलसी कहहि प्रवीन ॥ कहत सुनत आदिहि
 वरण देखत वरणविहीन । छटिमान चर अचरण एकहि
 फुलन तीन ॥ पञ्च भेद चरण विपुल तुलसी कहहि विचारि ।
 नर पशु खेडज खगज खग हनि बुध मत निरधारि ॥
 अनि विरोध तिनमहँ प्रकल प्रकट परत पहिचान । आखा-
 दर गति अपर नहि तुलसी कहहि प्रमान ॥ रोय रोय ब्रह्माण्ड
 बहु देखत तुलसीदास । दिन देखे कैले कोऊ सुनि मानै
 विश्वास ॥ वेद कहत जहँलगि जगत तेहिते अलग न आन ।
 तेहि आधार व्यवहरत लखु तुलसी परम प्रमान ॥ सरसप सूक्त
 जासुकहँ ताहि सुमेख असूक्त । कहेउ न समुक्त सो अशुध
 तुलसी विगत विसूक्त ॥ कहत आदर समुक्त अवा गहत तजत
 कहु और । कहेउ जुनै समुक्त नही तुलसी अति मतिवौर ॥
 देखो करै अदेख ब्रह्म अनदेखो विश्वास । कठिन प्रबलता

[illegible]

सात । स्वर्ग सुमन अवसन्त खलु चाहत अचरज वात ॥
 तुलसी बोल न बूझई देखत देखन जोय । तिन शठके उपदेश-
 का करव सयाने कोय ॥ जो न सुनै तेहि का कहिय कहा
 सुनाइय ताहि । तुलसी तेहि उपदेशही तासु सरिस मति
 जाहि ॥ कहत सकल घट राममय तौ खोजत केहि काज ।
 तुलसी कह इह कुमति सुनि उर आवत अति लाज ॥
 अलख कहहि देखन चहहि ऐसे परम प्रवीन । तुलसी जग
 उपदेशही बनि बुध अबुध मलौन ॥ हहरत हारत रहित विद
 रहत धरे अभिमान । ते तुलसी गुरु आव नहि कहि इतिहास
 पुरान ॥ निज नैनन दीसत नहीं गही आंधरे बाह । कहत
 मोहवश तेहि अधम परम हमारे नाह ॥ गगनवाटिका
 सौंचही भरि भरि सिन्धुतरङ्ग । तुलसी मानहि मोद मन
 ऐसे अधम समझ । दृषद करत रचना विहरि रङ्ग रूप सम-
 तूल । विहग वदन विछा करे ताते भयो न तूल ॥ चाह ति-
 हारो आपते मानन आनन आन । तुलसी करु पहिचान पात
 याते अधिक न आन ॥ आतमबोध विचार इह तुलसी करु
 उपकार । कोउ कोउ रामप्रसादते पावत परमतपार ॥ जहाँ
 तोष तहँ राम हैं राम तोष नहि भेद । तुलसी देखि गहत
 नहीं सहत विविध विधि खेद ॥ गोधन गजधन वाजिधन
 और रतनधनखान । जब आवै सन्तोषधन सब धन धूरि
 समान ॥ कुधि रति अटन विमूढ़ लट घट उदघटत न ज्ञान ।
 तुलसी रटत इटत नहीं अतिशय गति अभिमान ॥ भृशुवङ्ग
 गत दाम भुव काम न विविध विधान । तो तन वर्तमान यत
 तत तुलसी परमान ॥ भो उर सुक्ति विभव पढ़ि मनगत
 प्रकट लखात । मन भो उर अति सुक्तिते विलग विजानव
 तात ॥ रामचरण पहिचान बिनु मिटौ न मनकी दौर ।

नस्तु न करि चित्त वैन । विन्द गये जिमि गैनते रहत ऐनको
 ऐन ॥ आपुहि ऐन विचार विधि सिद्धि विमल गति मान ।
 आन दासना बिंदुसम तुलसी परम प्रमान ॥ धन धन कहे
 न होत कोउ ससुक्ति देखु धनमान । होत धनिक तुलसी
 कहत दुखित न रहत जहान ॥ हिमकी मूरतिके हिये लगत
 नीरकी प्यास । लगत शब्द गुरु तरनिकर सोसैं रही न आस
 जाके उरवर वासना भई भाष कछु आन । तुलसी ताहि विह-
 म्बना कहि विधि कथहि प्रमान ॥ रुजत न भव परचै विना
 भेषज करि किमि कोय । जान परै भेषज करै सहज नाश रुज
 होय ॥ मानस व्याध कुचाह तव सदगुरु वैद समान । जासु
 वचन अलबल अबल होन सकल रुज हान ॥ रुचि बाढ़े सत-
 सङ्गमहँ नीति क्षुधा अधिकाय । होत ज्ञानबल पीन अल
 वृजिन विपति मिटि जाय ॥ शुक्लपत्र शशि स्वच्छमी रुष्मा-
 पत्र द्युतिहीन । बडव बटव विधि भाँति विचि तुलसी कह-
 हि प्रवीन ॥ सतसङ्गति सितपत्र सम असित असन्त प्रसङ्ग ।
 जानु आपकहँ चन्द्र सम तुलसी वदन अभङ्ग ॥ तीरथपति
 सतसङ्ग सम भक्ति देवसरि जान । विधि उलटौ गति रामकी
 तरणिसुता अनुमान ॥ वर मेधा मानहु गिरा धीर धर्म न-
 योध । मिलन त्रिवेणी मनहरणि तुलसी तजहु विरोध ॥
 समस्तव सब मञ्जन विशद मल अनैत गद धोय । अवश
 मिलन संशय नहीं सहज रामपद होय ॥ क्षेम विमल वारा-
 णसी सुरअपगा सम भक्ति । ज्ञानविष्वेश्वर अति विशद
 लसत दया सह शक्ति ॥ वसत क्षेम गृह जासु मन वाराणसी
 न दूरि । बिलसित सुरसरि भक्ति जहँ तुलसी नय रुत भूरि ॥
 सित काशी मगहर अमित लोभ मोह मद काम । हानि
 लाभ तुलसी समुक्ति दास करहु वसुधाम ॥ गये पलटि आवे

रत्न चम्पार पम्पन । सूत्रम गुणहो जीवकर तुलसी सो तन-
 मन्त - पावन अपर निते गया जात तथा रविमाहि ॥ जहँते
 पत्तन ती दुग्न तुलसी जानन ताहि । प्रकट भये देखत
 पत्तन दूरत लखत कोर कोय । तुलसी यह अनिगय भगम
 तित गुन सुगम न होय । शा जग जे नयहोन नरवरवस दुखनग-
 नाहि । प्रकटत दूरत महादुखी कहँ लागि रुहियत ताहि ॥
 ग । दूरा मग अपने गहे मगकेहु गहत न धाय । तुलसी राम-
 भगा । विनु सो हिमि जानो जाय ॥ मटिते रवि रविते अवनि
 मगनेद दाय कह नाहि । तुलसी तबलाहि दुखित अति शशिम-
 गुणधन न नाहि ॥ सन्तानकौ गति श्रोतकर लेश कलेश न होय ।
 गा भिषपद मुखदा सदा जानु परमपद सोय ॥ तजत अमिय
 शशि तानि जग तुलसी देखत रूप । गहत नहौ सबकहँ विदित
 अनिगय अपन अनप ॥ शगिकर सुखद सकल जगत को तेहि
 जानन नाहि । कोक कमलकर दखदकर तदपि दुखद नहि
 नाहि ॥ विन दये ममुके सुने सोउ भौ मिथ्यावाद । तुलसी
 दूक नमके नयै महर्जाहि मितें विषाद ॥ वरपि विष्व हरषित
 दान दान नाप अघप्यास । तुलसी दोष न जलदकर त्यों जड़
 दान नदाय ॥ चन्द्र दंत अमि लेत विष देखहु मनहि विचार ।
 दुलसी विमि मिय सन्तार नहिमा विगद्गोअपार ॥ रसम विदित
 रवि रूप लखु शोन श्रोतकर जान । लसत योगयप्रकार भव
 दुलसी मनभा ममान ॥ लेति अवनि रविअंशकहँ दंति अमिय
 अवनार । तुलसी सूत्रमको सदा रवि रजनोश आधार ॥ भूमि
 भानु अयुलअप सकल चराचर रूप । तुलसी विन गुरु ना लहै
 दइ मन अमय अनूप ॥ तुलसी जे लखलीन नर ते निशिकर तन-
 योन । अदर सकल रविगत भये महाकष्ट अतिदौन ॥ तुलसी
 अन्नेद योगते मनमर्त्तति जव होय । राम मिलन संशय नहौ

प्रीति ॥ चुम्बक दरहन सेति जिम सन्तन हरि सुखधाम । जान
 निरीक्षर सम सफरि तुलसी जानत राम ॥ भरत हरत दरशत
 सबहिं पुनि अदरश सबकाहु ॥ तुलसी सुगुरु प्रसादवर होत
 परमपद लाहु ॥ यथा प्रत्यक्ष सबप बहु जानत है सब कोय ॥
 तथाहि लै गतिको लखव असमञ्जन अति सोय ॥ यथा सकल
 अपि जात अप रविमण्डलके माहिं । मिलत तथा जिव रामपद
 होत तहांलै नाहिं ॥ कर्मकोष सँग लै गयो तुलसी अपनी वानि ।
 जहां जाय बिलसे तहां परे कं पहिचानि ॥ ज्यों धरणीमहँ
 हेतु सब रहत यथा धरि देह । त्यों तुलसी लै राममहँ मिलत
 कबहुँ नहिं पुह ॥ शोषक पोषक समुक्त शुचि राम प्रकाशसह ॥
 यथा तथा बिन देखिये जिम आदरश अनूप ॥ कर्म मिटाये
 मिटत नहिं तुलसी किये विचार । करतव हीके फेर है या विधि
 सार अवार ॥ एक किये हो दूसरो बहुरि तौसरो अङ्ग । तुलसी
 कैसेहु ना नशै अतिशय कर्म तरङ्ग ॥ इन दोउनते रहत भो कोउ न
 राम तजिआन । तुलसी यह गति जानिहै कोउकोउ सन्तसु
 जान ॥ सन्तनको लै अपिसदन समुक्तहि सुगति प्रवीन । कर्मविप
 र्यय कबहुँ नहिं सदा रामरसलीन ॥ सदा एकरस सन्त सिय निश्च
 य निश्चिकर जान ॥ रामदिवाकर दुखहरण तुलसी शौलनिधान ॥
 सन्तनकी गति उगविजा जानहु शशि परनाम । रमित रहत रसमें
 सदा तुलसी रति नहिं आन । जातहूप जिम अनल मिलि
 ललित होत तन आन ॥ सन्तशौल कर सीय तिमिलमहि रामपद
 पाय ॥ आपहिं बाँधत आप हठि कौन छुड़ावन ताहि । सुखदा
 यक देखन सुनत तदपि सो मानत नाहि ॥ जौन लागते स
 गति उर्द्ध तौन गति जात । तुलसी मकरोन्त इव कर्म न कबहुँ
 नशात ॥ जहां रहत तहँ सह सदा तुलसी तेगी वानि । सुधरे
 विधिवश होय जब सतमङ्गति पहिचानि । रवि रजनीस बागवटा

नहि परमान । सो वरतरता समन कोउ सब विधि पूरण-
 नाम । कर्मना कारण सारपद आवै अमल अभेद । कर्म
 नानु यति नवन हैं तुलसी जानत वेद ॥ खेदज जवन प्रका-
 न्ते पाव करे कोउ नाहि । भये प्रकट तेहिके सुनौ कोन
 गिनोऊत ताहि ॥ भयो विषमता कर्म महँ समता किये न
 पाव । तनमो गमता समुक्त कर सकल मान मद धोय ॥
 मर्यादा गाढ़त रामस्त जग सुहृद जान सबकाहु । तुलसी यह
 पा पाव उर दिन प्रति अति सुख लाहु ॥ यह मनमहँ
 नि नि पाव दे कोउ अपर न आन । कासन करत विरोध
 दहि तुलसी समुक्त प्रमान ॥ महि जल अनल सुअनिल
 प्रतटी प्रकट तन रूप । जानि जाय वर बोधते अति शुभ
 अयन अयन ॥ गोपे आक्रममातते उपजे बुद्धि विशाल ।
 नाना अनि छलहीन है गुरुसेवन कछु काल ॥ कारज युग
 जानद द्विये नित्य अनित्य समान । गुरु गमते देखहि सुजन
 बह तुलसी परमान ॥ महि मयङ्ग अहिनाइको आदि ज्ञान
 भा भट । ना विवि तेंडे जीवरुहँ होन समुक्त विन खेद ॥
 परो फेर निज कर्म महँ भ्रम भवका यह हैत ॥ तुलसी कहत
 सुजन सुनहु चैन न समुक्त अचेत ॥ नामकार दूषण नही
 दुजमी किये विचार । कर्मनकी घटना समुक्ति ऐसे वरण
 उचार ॥ सुजन कुजन महि गत यथा तथा भानु अग्निमहि ।
 तुलसी जानन हो सुखी होत समुक्त विन नाहि ॥ मात तात
 भवगेनि विमि निमि तुलसी गति तोरि । मात न तात न
 जानु नर है तेहि समुक्त बहोरि ॥ सर्व सकल तैं है सदा
 विमो प्रिय सब ठोर । तुलसी जानहि सुहृद जे ते अति मति
 दिगमो ॥ अनङ्गार घटना कनक रूप नाम गण तीन ।
 दहमो रामप्रसादने परसुहि परमप्रवीन ॥ एक पदारथ

कहहि सुमति सब कोय । सेवक पद मुखकर सदा दुखद सेव्य-
 पद जान । यथा विभीषण रावणहि तुलसी समुक्त प्रमान ॥
 शीत उष्णकर छत्रयुग निशिदिन कर करतार । तुलसी तिन-
 कहैं एक नहि निरखहु करि निरधार ॥ नहि नैनन काहू लख्यो
 धरत नाम सब कोय । ताते सांचो है समुक्त कूँठ कवहुं नहि
 होय ॥ वेद कहत सब कोउ विदित तुलसी अपिय स्वभाव ।
 करत पान अपि रुज हरत अविरल अमल प्रभाव ॥ गन्ध शीत
 अपि उष्णता सबहि विदित जग जान । महिवन अनल
 सुआनि लग विन देखे परमान ॥ इनमहैं चेतन अमलअल
 विलखत तुलसीदास । सां पद गुरुउपदेश सुनि सहज होत
 परकास ॥ यहि विधिते वर बोध बह गुरु प्रसाद कोउ पाव ।
 हैं ते अल तिहुं कालमहैं तुलसी सहज प्रभाव ॥ काकसुतासुत-
 वासुता मिलन जननि पिबु धाय । आदि मध्य अवसान गत
 चेतन सहज सुभाय ॥ समता स्वारथहीनते होत न विशद वि-
 वेक ॥ तुलसी यह तिनहीं फवै जिनहि अनेक न एक ॥ सब स्वा-
 रथ स्वारथ रटत तुलसी घटत न एक । ज्ञानरहित अज्ञानरत
 कठिन कुमनकर टेक ॥ स्वारथ सो जानहु सदा जासों विपति
 नभाय । तुलसी गुरुउपदेश विन सो किमि जानी जाय ॥
 कारज स्वारथ हित करै कारण करे न होय । मनवा ऊषविशेषते
 तुलसी समकहु सोय ॥ कारण कारज जानता सबकाहू पर-
 मान । तुलसी कारजकारजो सो तैं अपर न आन ॥ विन करता
 कारज नहीं जानत हैं सब कोय । गुरुमुख अवण सुनत नहि
 प्राप्ति कवन विधि होय ॥ करता कारण कारजहु तुलसी गुरु पर-
 मान । लोपत करता मोहवश ऐसो अज्ञुध मलान ॥ अनिल
 सलिल विधियोगते यथा बौचि बहु होय । करत करावत नहि
 कलुक करता कारण सोय ॥ जेम धरथ करतार कर तुलसी

—रूपमान । तुलसी ना लखि पाइ हो किये अमित अनु-
मान ॥ यन्मान माचो रहित होत नही परमान । कह तुलसी
पगल जो मो कह अपरको आन ॥ मिति कारण करता सहित
कारज जिये अनेक । जो करता जाने नही तौ कह कवन
निनेह ॥ स्वर्णकार करता कनक कारण प्रकट लखाय । अल-
तार कारज सुखद गुण प्रोभा सरसाय ॥ चामीकर भूषण
प्रमिता करता कह तव भेद । तुलसी जे गुरु गमरहित ताहि
प्रमिता प्रनि खेद ॥ तन निमित्त जहँ जो भयो तहां सोइ पर-
मान । गिन जाने माने तहां तुलसी कहहि सुजान ॥ मृण्मय-
भाजन निर्मित विधि करना मन भव रूप । तुलसी जानेते सुख-
द गुरु गम ज्ञान अनूप ॥ सब देखत मृण भाज नहि कोइ कोइ
दृष्टत कुनाल । जाके मनके रूप बह भाजन विलखु विशाल ॥
एके रूप कुनालको माटी एक अनूप । भाजन अमित
विशाल लघु सो करता मन रूप ॥ जहां रहत वस्तत तहां
तुलसी निव्य स्वरूप । भूत न भावी ताहि कह अतिशय अमल
अनूप ॥ ग्राम ममोर प्रत्यक्ष अप स्वच्छा दृश लखात । तुलसी
गमप्रमाद विन अविगति जानि न जात ॥ तुलसी तल रहि
जान हे युग तन अचल उपाधि । यह गति तेहि लखि परत
जेहि भई सुमनि गुठि साधि ॥ करता कारण कालके योग
कर्म मन जान । पुनःकाल करता दुरत कारण रहत प्रमान ॥

इति पञ्चमः सर्गः ॥ पू ॥

विविध गुण संज्ञा अगम अपार । तुलसी सुगुरुप्रसादते पाये
 पद निरधार ॥ गन्ध न मूल उपाधि बहू भूषण तन गण
 जान । शोभा गुण तुलसी कहहि समुक्तिहि सुमतिनिधान ॥
 जैसो जहां उपाधि तहैं घटित पदारथ रूप । तैसो तहां प्रभा
 समन गुणगण सुमति अनूप ॥ जानु वस्तु अस्थिर सदा मिटत
 मिटायै नाहि । रूप नाम प्रकटत दूरत समुक्ति विलोकहु
 ताहि ॥ पेष रूप संज्ञा कहव गुण सुविवेक विचार । इतनो-
 र्हें उपदेश बर तुलसी किये विचार ॥ सदा सगुण सीता रमण
 सुखसागर बलधाम । जन तुलसी परखे परम पाये पद
 विश्राम । सगुण पदारथ एक नित निर्गुण अमित उपाधि ।
 तुलसी कहहि विशेषते समुक्त सुगति सुठि साधि ॥ यथा एक-
 महैं वेद गुण तामहैंको कहू नाहि । तुलसी वर्तत सकल हैं
 समुक्त कोउ कोउ ताहि ॥ तुलसी जानत साधुजन उदय
 अस्तगत भेद । विन जाने कैसे मिटे विविध जनन जन खेद ॥
 संशय शोक समूल रुज देत अमित दुख ताहि । अहि अनुगत
 सपने विविध चाहि परायण जाहि ॥ तुलसी सांचो श्राप है
 जब लगि खुलैं न नैन । सो तबलगि जबलगि नहीं सुने
 सुगुरुवर बैन ॥ पूरण परमारथ दरश परशत जौलगि आश ।
 तौलगि खन उत्थान नद जबलगि जल न प्रकाश ॥ तबलगि
 हमते सब बड़ो जबलगि है कछु चाह । चाहरहित कह को
 अधिक पाय परमपद थाह ॥ कारण करता है अचल अपि अ-
 नादि अजरूप । ताते कारज विपलतर तुलसी अमल अनूप ॥
 करता जानि न परत है विन गुरुवरपरसाद । तुलसी
 निज सुख विधि रहित केहि विधि मिटे विषाद ॥ मृगमय
 घट जानत जगत विन कुलाल नहि होय । तिमि तुलसी
 करता रहित कर्म करै कहुँ कोय ॥ ताते करता ज्ञान कर जाते

निहोतेऊपरहं महाप्रनल पति सोइ । जो कोइ तेहि पाछे
 नहि सो पर पागं होइ ॥ तुलसी होत नहीं ककुब रहित सुवन
 चनार । तोहीते अपन भयो सब विधि तेहि परचार ॥ सुवन
 देखि भूति सकल भय अति परम अधीन । तुलसी जेहि समु-
 स्तारये गो मन करन मलोनि ॥ मानन सो साँचो हिये चुनत
 सुभात नादि ॥ तुलसीते समुपन नहीं जो पद अमल
 गनादि ॥ जाहि कहत है सकल सो जेहि कह तब सो ऐन ॥
 तनपा नाहि समुपति हिये अगह कहु निन बेन ॥ तुलसी
 जो ते गो नहि कहत आन सब काय । यहि विधि परम विड-
 म ॥ कहत न काहदं होय ॥ गुरु करियो सिद्धान्त यह होय
 यथायथ वाय । अमुचित उचित लावाय उर तुलसी मिटे
 प्रियाध ॥ मनगदनि को फल यही संशय लहै न लेश । है
 अस्विय शक्ति चाल चित पावे पुनि न कलेश ॥ जो मरयो पद
 मयन को यद लागि साध अमाध । कवन हेतु उपदेश गुरु
 मननदनि भय वाय । जो भावो कहु है नहीं कूठो गुरु सत-
 मत्त । पुनि द्रुपति ते भूँउ गुरु सत्तनको परसङ्ग ॥ जोले लखि
 नडा पान तुलसी परपद आप । तोलनि सौहि त्रिवश
 मदन कहत पुनको बाप ॥ जहँलनि संज्ञा वरण भो जासु
 कहने होय । तो तुलसीसे है सबल आन कहा कहु होय ॥
 अपने नैनन देखि जे चलहि सुमतिवर लोग । तिनहि न
 विपनि विप्राद रुज तुलसी सुमति सुयोग ॥ मृगा गगनचर
 ज्ञान विन कन नहीं पहिचान । परवश शठ दठ तजत सुख
 तुलसी निग्त भुलान ॥ काह कहो तेहि तोहिके जेहि उप-
 देश नान । तुलसी कहत सो दुख सहत समुक्त रहित
 दिन बान ॥ विन काटे तरुवर यथा मिटे कवन विधि क्हाइ ।
 तो तुलसी उपदेश विन निःसंग्य कोउ नाह ॥ अपनो कर-

जल थल तन गत है सदा ते तुलसी तिहुँ काल । जन्म
मरण समुक्तो विना भाषत समन विशाल ॥ तैं तुलसी करता
सदा कारण शब्द न आन । कारण संज्ञा सुख दुखद विन
गुत तेहि किमि जान ॥ कारजरत करता समुक्त दुख सुख
भोगत सोय । तुलसी श्री गुरुदेव विन दुखप्रद दूर न होय
कारण शब्द स्वरूपमें संज्ञा गुण भव जान । करता सुखगुते
सुखद तुलसी अपर न आन ॥ गन्ध विभावरी नीर रस सलिल
अनल गत ज्ञान । वायुवेगकहँ विन लखे बुध जन कहहि
प्रमान ॥ अनुस्वार अक्षर रहित जानत हैं सब कोय । कह
तुलसी जहँ लगी वरण तासु रहित नहिं होय ॥ आदिहु अन्त-
हु है सोई तुलसी और न आन । विन देखे समुक्तो विना
किमि कोइ करै प्रमान ॥ रहित विन्दु सब वरणते रेफ सहित
सब जान । तुलसी स्वर संयोगते होत वरण पद मान ॥ अनु-
स्वार सूक्ष्म यथा तथा वरण अक्षर । वो सूक्ष्म अक्षर सो
तुलसी कवहुँ न मूल ॥ अनिल अनल पुनि सलिल रज तनगत
तनवत होय । बहुरि सो रजगत जल अनल मुक्त सहित रवि
सोय ॥ और भेद सिद्धान्त यह निरखु समति करु सोय । तुलसी
सुत भव योग विन पितु संज्ञा नहिं होय ॥ संज्ञा कह तब गुण
समुक्त सुनव शब्द परमान । देखव रूप विशेष है तुलसी वैष
वखान ॥ होत पितातै पुत्र जिमि जानत को कहु नाहि । जबलगी
सुन परसो नहीं पितु पद लहै न साहि ॥ तिमि वरणन संज्ञा
करे वरण वरण संयोग । तुलसी होय न वरण कर जबलगी
वरण वियोग ॥ तुलसी देखहु सफलकहँ यहि विधि सुत
आधीन । पितु पद परखि सुदृढ़ भयो कोउ कोउ परम
प्रवीन ॥ जहँ देखो- सुत पद सकल भयो पिता पद लोप ।
तुलसी सो जानै सुई जासु अमोक्षिक चोप ॥ ख्यात सुवन

अपनी तर्जन व्यापारहैं भलो मन्द जेहि काल । तब जानव
 तुलसी भरे पतिगग बुद्धि विशाल ॥ तुलसी जबलगि लखि
 पाग देत पाणको भेद । तबलगि कैसेकै मिटे करम जनित
 तब गोर ॥ जोर देठ सोइ प्राण हे प्राण देइ नहि दोय ।
 तुलसी जो लगि पाय है सो निरदय नहि होय ॥ तुलसीते
 भूँठी भगो करि भूँठी राँग प्रीति । है साँचो हो साँच जब गहै
 गमनी रीति ॥ भूँठी रचना साँच है रचत नहीं अलसात ।
 भाजनद कागरत निदृष्टि नेक न वृक्षत बात ॥ करम खगै कर मोह
 थल प्रल चराचर जाल । हरत भरत भर हर गनत जगत
 जातयो काल ॥ जूदन काल किल सकल बुध ताकर यह व्य-
 यथाग । उपपति श्रिति लय होत हे सकल तासु अनुहार ॥
 अहं निगताय दल विपल शाखायुत वर मूल । फूलि फरत
 उत आमुद्रत तुलसी सकल सतूल ॥ कहतब करतब सकल
 नेदि नहि रहत नहि आन । जानन मानन आन विधि अनू-
 सात अन्या ॥ हानि लाभ जय विवि विजय ज्ञान दान
 मनमान । खान पान शुचि रुचि अशुचि तुलसी विदित
 विधान ॥ भानक पालक सम विपम रम भम गम गति ज्ञान ।
 घट बट लट नट नहि जट तुलसी रहित न जान ॥ कठिन
 काम करयौ कवन करता कारक काम ॥ काय कष्ट कारण
 काम हीन काल सम ग्राम ॥ खबर आतमा बोध वर खर
 निन कबहुँ न होय । तुलसी खसम विहीन जे ते खरतर
 नहि मोय ॥ चित रति विन व्यवहरित विधि अगम सुगम
 पय नीच । धीर धरम धारण हरण तुलसी परत न बीच ॥
 कष्ट उप विवरन विगड तासु योग भव नाम । करता नृप
 नृद नानि नेदि नंजा सम गृणधाम ॥ नाम जाति गुण देखि
 है भूँ प्रवग उर भर्म । तुलसी गुरुउपदेश विन जानि सकै

तब आप लखि सुनि गुनि आप विचार । तौ तोहिकहँ दुख-
 दा महा सुखदा सुमति आधार ॥ ब्राह्मण वर विद्या विनय
 सुरनि विवेकनिधान । पथ रति अनय अतीत मति सहिनि
 दया ब्रुति नान ॥ विनयछत्र शिर जासुके प्रतिपद पग-
 उपकार । तुलसी सो चलौ सहौ रहित सकल व्यभिचार ॥
 वैश विनय मग पग धरै हरै कटुक घर बैन । सद्य मदा
 शुचि सरलता होय अचल सुख ऐन ॥ शूद्र बुद्ध पथपरि हरै हृदय
 विप्रपद मान । तुलसी मन समता सुमति सकल जीव सम
 जान ॥ हेतु वरण वर शुचि रहनि रसनि रास सुखसार ।
 चाहन काम सुरा न रस तुलसी सुदृढ़ विचार ॥ यथालाभ
 सन्तोषरत गृह मगवन सगरौत । सो तुलसी सुखमें सदा
 जिन तनु विभव विनीत ॥ रहै जहां विचरै तहां कमौ कलह
 कलु नाहि । तुलसी तहँ आनन्द संग जात यथा संग छाहि ॥
 करत कर्म जेहि को सदा सो मन दुखदातार । तुलसी जो
 समुक्त मनहि तो तेहि तजै विचार ॥ कहत सुनत समुक्त
 लखत तेहिते विपति न जाय । तुलसी सवते विलग हैं जबते
 नहि ठहराय ॥ सुनत कोटि कोटिन कहत कोड़ी हाथ न
 एक । देखत सकल पुराण अति तापर रहित विवेक । समु-
 क्त है सन्तोष धन याते अधिक न आन । गहत नहीं तुलसी
 कहत ताने अबुध मलान ॥ कहा होत देखे कहे सुनि समुक्त सब
 रौनि । तुलसी जबलगि होत नहि सुखद रामपद प्राते ॥
 कोटिन साधनके किये अन्तरमल नहि जाय । तुलसी जो
 लगि सकल गुण सहित न कर्म नशाय ॥ चाह बनौ जबलगि
 सकल तबलगि साधन सार । तामहँ अमित कलेशकर
 तुलसी देख विचार ॥ चाह किये दुखिया सकल ब्रह्मादिक
 सब कोय । निचलता तुलसी कठिन राम रूपावश होय ॥

नि-ति परे जानहि नात नगाय । बातहि आदिहि दीप भव
 ना-दि पन नगाय ॥ नातहिते बनि आवई बातहिते बनि
 ना- । नातिने तर तर पिनन बातहिते बोरात ॥ बात बिना
 ना-ग । निहल जानहि ते हरषात । बनत बात बर बातते
 ना- । ना-गना ॥ वलमो जानु बात विन बिगरत हर दूक
 ना- । नागाने दुख नातके जानिपरत कुशलात ॥ प्रेम वैर
 ना- पण्य पन गण अपयण जय हान । बात बीज दून सवनको
 ना-पो कर्दाइ सुगान ॥ सदा भजन गुरु साधु द्विज जीव दया
 ना- । सुखद सुनै रत मय्यत्रन स्वर्ग सप्तसोपान ॥ बच्चक
 ना- । नातनय विविहिंसा अतिलीन । तुलसी जगमहँ
 ना- । ना नरकनिशंनो तोन ॥ जे नर जग गुण दोषयुत तुलसी
 ना- । ना विचार । कबहुँ सुखी कबहुँ दुखित उदय अस्त व्यवहार ॥
 ना- । नागके युगलनम काल अचल बलवान । त्रिविध विकल
 ना- । नाटि तुलसी कर्दाहिं प्रमान ॥ अनुभव अमल अनूप गुरु
 ना- । नागानि होय ॥ बचे काल क्रम दोषते कर्दाहिं सुबुध
 ना- । नाव कोय ॥ सब विधि पूरण धामवर राम अपर नहि आन ।
 ना- । नाकटाक्षते होत दिये दृढज्ञान ॥ सो स्वामी सो तर
 ना- । ना सुखदातार । तात मात आपदहरण सो आसमय
 ना- । सुखद दुखद कारज कठिन जानत को तेहि नाहि ।
 ना- । नागकरा करतव बनत न काहिं ॥ तुलसी सकल
 ना- । नाव है वेद विदित सुखधाम । तामहँ समुक्तव कठिन अति
 ना- । नागभेद गुणनाम ॥ नाम कहत सुख होत है नाम कहत दुख
 ना- । नाम कहत सुख जान दुरि नाम कहत दुख खात ॥
 ना- । नाम कहत वैकुण्ठसुख नाम कहत अघखान । तुलसी तोते
 ना- । नाम कहत नाम पहिचान ॥ चारों चौदह अष्टदश रस
 ना- । नामभेद समुक्ते विना सकल समुक्तमहँ धूर

को मर्म ॥ अपन कर्म वर मानिके आप बँधो सब कोय । कार-
 जरत करता भयो आपन समुझत सोय ॥ को करता कारण
 लखै कारज अगम प्रभाव । जो जहँ सो तहँ तर हरष तुलसी
 सहज सुभाव ॥ तुलसी विन गुरुको लखै वर्तमान विधिरौत ।
 कहू कैहि कारणते भयो सूर उज्जग शशि शीत ॥ करता कारण
 कर्मते पर पर ज्ञातमज्ञान ॥ होन न विन उपदेश गुरु जो षट
 वेद पुरान ॥ प्रथम ज्ञान समुझे नहीं विधि निषेध व्यवहार
 उचितानुचितहि हेरि धरि करतव करिय सँभार ॥ जब मन-
 महँ ठहराय विधि श्रीगुरुवरपरसाद । इहि विधि परमात्म
 लखै तुलसी मिटै विषाद ॥ बरवस करत विरोध हठि होन
 चहत अकहौन । गहि गति बक बृक भ्रान इव तुलसी परम
 प्रबौन ॥ साक कर्म भेषज विदित लखत नहीं मतिहौन ।
 तुलसी शठ अकवश विहठि दिन दिन दोन मलीन ॥ करता-
 हीते कर्म युग सो गुण दोष सखप । करत भोग करतव यथा होय
 रङ्ग किन भूप ॥ वेद पुराणरुशास्त्र युत निज बुधिवल अनु-
 मान । निज निज करि करि है बहुरि कहू तुलसी परमान ॥
 विविध प्रकार कथन करै जाहि यथा भवमान । तुलसी सु-
 गुरुप्रसादवत् कोउ कोउ कहत प्रमान ॥ उर डर अतिलघु
 होनकौ भव लघु मुरति भुजान । स्वर्गलाह लखि परत नहि
 लखत लोहको हान ॥ नैवदोष निज कहत नहि विविध वनावत
 बात । सहत जानि तुलसी विपति तदपि न नेक लजात ॥ करत
 चातुरी मोहवश लखन न निज हित हान । शुक्र मरकट इव
 गहत हठ तुलसी परम सुजान ॥ दुखिया सकल प्रकार शठ ससु-
 कि परतही नाहिं । लखत न कण्टक मीन जिमि अशन भक्षत
 भ्रम नाहिं ॥ तुलसी निज मनकामना चहत सुन्यकहँ सेय ।
 वचन गाय सबके विविध कहहु पचम कैहि देय ॥ बातहि बात

समयपरै सुपुत्र नरन लघुकरि गनिय न कोय । नायक पीपर
 बोजसम बनैतो ननवर होय ॥ नडे राम रत जगतमें कै परहित
 निन जाडि ॥ प्रेमपेन निनही जित्ते नडे जो सगही चाहि ॥
 दुनयो मत्तवते सने सत्तन नडे निनार ॥ तनवन चञ्चल सबल
 जग तातुग परउगहार ॥ ऊँ रहि आपन निभन वर नोचहि दत्त
 न तान ॥ छानिबुद्धि द्विजगतन्हें नहि नागगण कोय ॥ बड़े
 रसतिं तनके गुणहि वामी तवहि न हैन । तुझाते मुक्ताश्रुण
 गुना जो तन पने ॥ होहिं बड़े लघु समय सह तो लघु सकहिं न
 कारि । यद्रूपागे रूपगे तऊ नखनते बाडि ॥ उग वरग नारी
 नर्पा । नमोचो रथिवार । तुलसी परखन रडन निन इनहिं न
 पनयनार ॥ दूरगन आप समान करि को राखै डितलागि ।
 नपतौय मह जाडि पुनि पलटि बनावत आगि ॥ बल्लनन्व-
 नन्वोनिगा पदप अपन धन पाठ । पुनि गुण योगविधोगते तुरत
 जाडिं ये गाठ ॥ नोच निचाई नहिं तजे जो पावहि सतसङ्ग ।
 तुलसी चन्दनविटप वसि विनविष भय न भुनन ॥ दूरजन
 दूषणनन मदा करि देखो हिय दोर ॥ सनमुखकी गति और है
 दिव्य भये कहु और ॥ मित्रक अवगुण मित्रको परपई भापत
 नाहिं । त्रयद्वैद मिमि आपनो राखत आपहि माहिं ॥ तुलसी
 सो ममय सुप्रति सुकनो साधु सजान । जो विचारि व्यवहरत
 जग अग्रजाम अनुमान ॥ सीम सखा सेवक सखि सुतिय
 निगवान मँच ॥ मुनि करिये पुनि परिहरिय परमनरञ्जन
 मँच ॥ पट्टिहि निज रुचि काज करि कटहिं काज विगारि ।
 निया तनय सेवक सखा मनकेकण्टक चारि ॥ नारि नगर भोजन
 नखि नैवक सखा अगार ॥ सरस परिहरे रङ्गरस निरस विपा-
 दविकार ॥ दोरव रोगी दारिद्री कटुवच लोलुपलोग । तुलसी
 प्राण समानर्थी हरित त्यागिवे योग ॥ धाय लगे लोहा ललकि

वार दिवस निशि माससित असिन वरष परमान । उत्तर
दक्षिण आश रवि भेद सकलमहँ जान ॥ कर्म शुभाशुभ मित्र
अरि रोदन हँसन वखान ॥ और भेद अति अमित है कहँ
लगि कहिय प्रमान ॥ जहँलगि जन देखव सुनव समुक्तव-
कहव सुनौत । भेदरहित कछु है नहौं तुलसी वदहि विनौत ॥
भेद याहि विधि नाममहँ विनु गुरु जान न कोय ॥ तुलसी कहहि
विनौत वर ज्यों विरञ्चि शिवहोय ॥

इति षष्ठःसर्गः ६ ॥

तिनहि पढ़े तिनहीं सुने तिनहिं सुमति परगास ।
जिन आशा पाछे करे गहे अजख नौसास ॥ तबलगि योगी
जगतगुरु जवलगि रहै निरास । जव आशा मनमें जगौ जग गुरु
योगो दाम ॥ हित पुनौत स्वारथ सबहि अहित अशुचि विन-
चाउ । निजमुख माणिक सम दशन भूमि परत भौहाउ ॥ निज
गुणवटत न नागनग हर्षि न पहिरन कोल । गुञ्जा प्रभुभूषण करे
ताते बढ़ेन मोल ॥ देइ सुमन करि वास तिल परिहरि खरि रस-
लेत । स्वारथहित भूतल भरे मनमें चक तन सेत ॥ अँसुवन पथिक
निराशने तटभुइ सजल सखप । तुलसी किन वञ्चेनहौं इन सबध
ल कैकूप ॥ तुलसी मित महासुखद सबहि मितकौ चाउ । निकट
भये विलसत सुखप एक छाकर छाउ ॥ मित्र कोप बरतर सुखद
अनहित मृदुल कराल ॥ द्रुमदल शिशिर सुखात सब सह निदाव
अति लाल ॥ खल नेरे गुण मान नहिं मेढहि दाता वोप ॥ निमि-
जल तुलसी देत रवि जलद करत तेहि लोप ॥ वरषत हरषत
लोगसब करषत लखत न कोय । तुलसी भूपति भानुसम
प्रजा भागवश होय ॥ मालौ भानु कृशानु सम नौतिनिपुण
महिपाल । प्रजा भागवश होहिं कबहिं कबहिं कलिकाल ॥

१८८- । साक्ष्य सत्ता मत्यन्त रामभरोसी एक ॥ तुलसी
 सत्ता सत्ता मत्ता धर्मनिचार । सखनगौल स्वभावरीज
 मत्तामत्ता आनार ॥ गियाजिनन विनकरति रोति जासु उरहोय ।
 मत्तामत्ता मो मत्ता पापदनाहिनकोय ॥ विनप्रपञ्च खलुभोख-
 भनि ननि फा किये किये । बामनबलिमों लोन्हि कलि दीन्ह
 नारि उरिग ॥ निरुता राज गामन बलिहि कलो भलो जिय-
 नारि । पाला ननि गमभादपि मनसे गहनगलानि ॥ बदे बदे-
 ॥ १८९ ॥ तन जनोंउरिहिं । तुलसी शोचति शिरसैं बलि-
 मत्ता गनि गीति ॥ जय उपकार विकारफलतुलसीजानजहान
 मत्ता मत्ता गणि नरु कथा मत्ता उपखान ॥ ज्यों मूरख
 मत्ता मत्ता मत्ता गान । दुयोधन कह्यो धकिन आये श्याम
 मत्ता ॥ ॥ इतपर वदत विगेश जय अनहितपर अपमान । राम-
 मिमूत गिनि गामगति सगुन अवाय अमान ॥ सादसही सिख
 मत्ता गिनि कठिन परिपात । अठ सङ्गतभाजन भये हठि
 मत्ता अपि कान ॥ मारि सौंह करि खोजलें करिमतसत्र विन-
 नाम । मुने नोच निनमोचते जे इनके विश्वास ॥ रोक आपनी
 मत्ता मत्ता विद्याविहीन । ते उपदेशन मानही मोह महोद
 वि मत्ता । नमूनि सुनात कुनो नरत जागतहोरहस, य । उपदे-
 निशजगादवा तुलसी उचिन न होय ॥ परमारथ पथमत समु-
 म्मि दमन दिप्रय लपटान । उनरि चिताते अधजरी मानहुँ
 मत्ता मत्ता । नजत अमिय उपदेशगरु भजत विषय विप्रखान ।
 चन्द्रकिरणशेखे पथस चाटन जिमि गठखान ॥ सुरसदतन
 मत्ता मत्ता निपट कुचानि कसाज । मनहुं मवासे मारिकलि
 नजत मदिन ममान ॥ चार चतुर बटमार भट प्रभु प्रिय
 मत्ता मत्ता । सत्र भयो परमारथो कलि सुपन्य पाखण्ड ॥
 ॥ १९० ॥ कदानु कानि जनन महायहिपाल । साम न

खच्चिउ लैइयनीच । समरथ पापीसाँ वर तीन वेसाही मीच ॥
 तुलसी खान्ध मसुहे परमारय तन पीठि ॥ अन्ध कहे दुख
 पावकहि डिठियारे हियडोठि । अनममकौने शोचवर अवशि
 समुक्तिये आप ॥ तुलसी आपन समुक्तिविन पलमलपर परि-
 ताप । रूप खन्हि मन्दिर जत लावहिं धारि बन्ध । बोये ला-
 चह समय विन कुमतिगिरोनलि कू ॥ निडर अनय करि अन-
 कुशल वेसदाहु सम होय । गयो गयो कह सुमतिजन भयो
 कुमति कह कोय ॥ बहुसुत बहुशुचि बहुवचन बहु अचारव्यवहार
 इनको भलो मनाइवो दइ अज्ञान अपार ॥ अपयश योग कि
 जानकी मणिचोरी कि कान्ह । तुलसीलोग रिक्ताइवो कारति
 कारिबो नान्ह ॥ मंगि मधुकरी खान जे सोवत पाँव पसारि ।
 थापप्रनिष्ठ बडि परौ तुलसी बाढोरारि ॥ लही आखिकवअंध-
 रहिं वांस्त पून कव जाय । कव कोड़ी काया लड़ी जगवहराइव-
 जाय ॥ या जगसी विरगौनि गनि काहि कसो समुझाय ।
 जल जलिंगो लाव बाधिगो जनतुलसी मुमुकाइ ॥ कै जूझिवो
 कि वृक्षिवो दान कि कायकलेस । चारिचार पालोकपय यदा
 योगउपदेश ॥ बुव कि मान मरवेदवन मते खिन सब सोंच ॥
 तुलसी हाविगनि जानिवो उत्तम मध्यम नीच ॥ सहि कुबोल
 सासति असम पाय अनट अपमान । तुलसी धर्म न परिहरहि
 ते वर सन्त सुजान ॥ अनहित ज्यों परहित क्रिये आपनहित
 तमजान ॥ तुलसी चारुदिचारमति करिय काज समनान ॥
 मिथ्यामाहुर सजनकहँ खलहिं गरलसम साँच । तुलसी परसि
 परात जिमि पारइ पावक औच ॥ तुलसी खलबाणो विमल
 सुनि समुक्तव हिय हेरि । रामराज बाधक भई मन्दमन्य ॥ घेरि
 दान दयादिक युद्धके वीरवीर नहिं आन । तुलसी कहाहिं विनी-
 त इति तेवरवर परमान ॥ तुलसी साथो विपतिके विवाविनय-

दाम न भेद कलि केवल दण्ड कराल ॥ पाप पलौता कठिन
 गुरु गोला पुद्गमपाल ॥ राग रोष गुण दीपको मालो हृदय-
 सरोज । तुलसी विकसत निदल लखि सकुचत देखि मनोज ॥
 बयर सनेह सयानपहि तुलसी जो नहि जान । ते कि प्रे-पग
 भग धरत पशु बिन पूछ बखान ॥ रामदास यह जायके जो
 नर कहहि सयान । तुलसी अपने खाड़-हँ खाक भिलावत
 खान ॥ त्रिविध एक विवि प्रभु अगण प्रजहि सँवारहि राउ ।
 काले होत कृपाणको कठिन घोर घन घाउ ॥ काल विलोकत
 ईशतख भानु काल अनुहार । रवि हि राहु राजहि प्रजा, बुध
 व्यवहर्हि विचार ॥ यथा अमल पावन पवन पाप सुसङ्ग
 दुसङ्ग । कहिय सुवास कुवास तिमि काल महीश प्रसङ्ग ॥
 भलउ चलन पथ शोच भय नृप नियोग नय नेम । कुतिय सु-
 भूषण भूषित लोह निवारित हेम ॥ सुधा कुनाज सुनाज पल
 आम अशनसम जान । सुप्रभु प्रजाहित लेहि कर सामादिक
 अनुमान ॥ पाके पकए विटप दल उत्तम मध्यम नीच । फल
 नर लहहि नरेश तिमि करि विचार मन वीच ॥ धरणि धेनु
 चरि धरम तन प्रजा सुवत्स पचाय । हाथ कल् नहि लागि
 है किये गोष्ठती गाय ॥ टङ्क टङ्क द्वे परत गिरि शाखा
 सहस खजूरि । गरहि कुन्टप करि करि कुनय सो
 कुचाल सुत्रि भूरि ॥ भूमि रुचिर रावणसभा अद्भुतपद
 महिपाल । धर्म राम नय सोमवत्त अचत होत निहुं-
 काल ॥ प्रीति रामपद नौनिरत धर्म प्रतोय स्वभाव ।
 प्रभुहि न प्रभुता परिहरै कवहुँ वचन मन काय ॥ करके
 कर मनके मनहि वचन वचन जिय जानि । भूपति
 भलहि न पगिहरहि वितय विभूति सयानि ॥ गाँजौ वाण
 सुमत्त सुर समुक्ति उलटि गति देखु । उत्तम मध्यम नीच

- - - - - नया ममाठ शरीर ॥ कोख पाण्डव जानिबो क्रोध
 - - - - - मोर । पानहि मारि नग सक सयो निपाते भौम ॥
 - - - - - ते मरे मादर देउ न नाउ । जग जिति हारे
 - - - - - जिते रत्नाउ ॥ क्रोध न रसना सोझिये बड़
 - - - - - मधुर परिणाम हित बोलव बचन
 - - - - - मोठो ममयने मांगी मिलेजु भीच । सुधा
 - - - - - निन कालकूटते नीच ॥ पाही खेती लगन
 - - - - - कृपाज प्रग खेतु । बैर आपते बड़नने क्रियो पाँच
 - - - - - गुरु देत शिष्य शिषहि सुसाहब साध ।
 - - - - - फल होय भल तरु काटे अपराध ॥ चढो बवूरहि
 - - - - - गोक समाज । करम धरम सुख सम्पदा
 - - - - - कुराग ॥ पेट न फूटत विन कहे कहे न लागत
 - - - - - विचारयन समुक्ति सफेर कुफेर ॥ प्रीति
 - - - - - विवि विनिज उपाय अनेक । कल बल कुल कलि-
 - - - - - एकदि एक ॥ दम्भमहिन कलि धर्म सब
 - - - - - सनेह सब रुचि अनुहरत
 - - - - - निरुपाधिवर सदगुरु लाभ सुभोत ।
 - - - - - पोथिन सुनव सुनोत ॥ कायर क्रूर
 - - - - - मरिस उधार ॥ ज्यों जगदीशतो अति
 - - - - - जन्म जन्म तुलसी चहत राम-
 - - - - - विभवा अनुगग ॥ का भापाका संसकन विभव चाहिये साँच
 - - - - - कामनी आवे कामरी का लै करिय कमाच ॥ वरण विशद
 - - - - - सतसैया जग वरविशद गुण
 - - - - - वर माला बाला समति उर धारै यत नेह ।
 - - - - - लहै रामपतिगेह ॥ भूप कइहि
 - - - - - गुणी कहहि लवु भूप । महि गिरि गत दोउ

राज यमराज यम कहत सकोच न शोच ॥ तुलसी देवल
 रामके लागे लाख करोर । काक अभागे हगि भरे महिमा भय-
 उ न थोर ॥ भलो कहहि जाने बिना कि अथवा अपवाद ।
 तुलसी गौड़र जानि जिय करहु न हरष विषाद ॥ तन धन
 महिमा धर्म जेहि जावहुँ सह अभिमान । तुलसी जियत
 बिहस्वना परिणामहु गति जान ॥ वडो विबुध दरवारते भूमि
 भूप दरवार । जापक पूजक देखियत सहत निरादर भार ॥
 खग मृग मीन पुनीत किय बनहु राम नेपाल । कुनइ बाल
 रावण घरहि सुखद बन्धु किय काल ॥ रामलक्षण विजयौ
 भये सुनहु गरीबनिवान । सुखर बालि रावण गये घरहौ
 सहित समाज ॥ द्वारे टाट न दै सकहि तुलसी जे नर नौच ।
 निदरहि बलि हरिचन्द्र कहँ किहुका करन दधौच ॥ तुलसी
 निज कोरनि चहहि परकौरतिकहँ खोय । तिनके सुँह
 मसि लागि है मिटहि न मरिहैं धोय ॥ नौच चङ्गसम जानि-
 वो सुनि लखि तुलसीदास । ढोल देत महि गिरि परत
 खँचत चढ़त अकास ॥ सहवौसी काँचौ भषे पुरजन पाक
 प्रबोन । कालक्षेप किहि विधि करै तुलसी खग मृग मीन ॥
 वड़े पाप वाड़े किये छोटे करतल जात । तुलसी तापर सुख
 चहत विधिपर बहुत रिसात ॥ सुमति निवारहि परिहरहि
 दल सुमनहु संगाम । सकल गये तनविन भये साखौ यादव
 काम ॥ कलइ न जानवि छोट करि कठिन परम परिणाम ।
 लगत अनल अत नौच घर जरत धनिक धनधाम ॥ जूमे
 तें भल वृत्तिवो भलो जौतते हारि । जहाँ जाइ जहँ डाइवो
 भलो जा करिय विचारि ॥ तुलसी तीन प्रकारते हित अनहित
 पहिचान । बरवस परे परासवस परे मामला जान ॥ दुर-
 जन वदन कमान

लखत जिमि तुलसी खरवस रूप ॥ दोहा चारु विचारु चलु
परिहरि वाद विवाद । सुकृत सोम स्वारथ अवधि परमारथ
मरयाद ॥

इति सप्तमः सर्गः ॥

इति ॥
